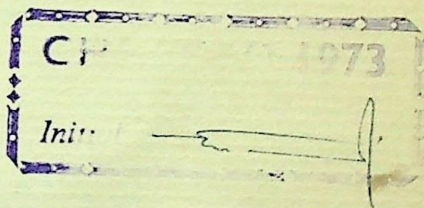
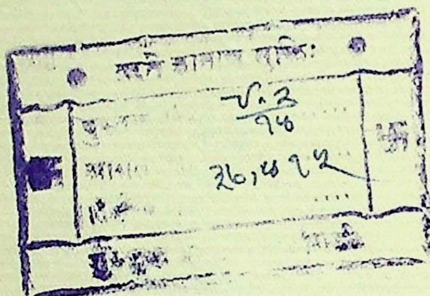
डेबीज़ोन

लेखक—
डॉक्टर धनीराम प्रेम
एम० आर० सी० एस० (इङ्गलैण्ड)
एल० आर० सी० पी० (लन्दन)

प्रकाशक—
चाँद प्रेस लिमिटेड
चन्द्रलोक—इलाहाबाद

कुछ चुनी हुई पुस्तकें


C
1973
Ini



देवी जोन

लेखक—

'चाँद' के भूतपूर्व सम्पादक तथा 'वल्लरी', 'प्राणेश्वरी', 'वेश्या का हृदय', 'प्रेम गीताञ्जलि', 'मृतात्माओं से बात-चीत' 'वीराङ्गना पन्ना' आदि-आदि पुस्तकों के रचयिता—

डॉक्टर धनीराम प्रेम

एम० आर० सी० एस० (इङ्गलैण्ड), एल० आर० सी० पी० (लन्दन)

प्रकाशक—

चाँद प्रेस लिमिटेड

चन्द्रलोक—इलाहाबाद

मई, १९३४

प्रथम संस्करण] [मूल्य केवल १॥)



FIRST EDITION

One Thousand Copies

Printed and Published for and on behalf of

THE CHAND PRESS, LIMITED

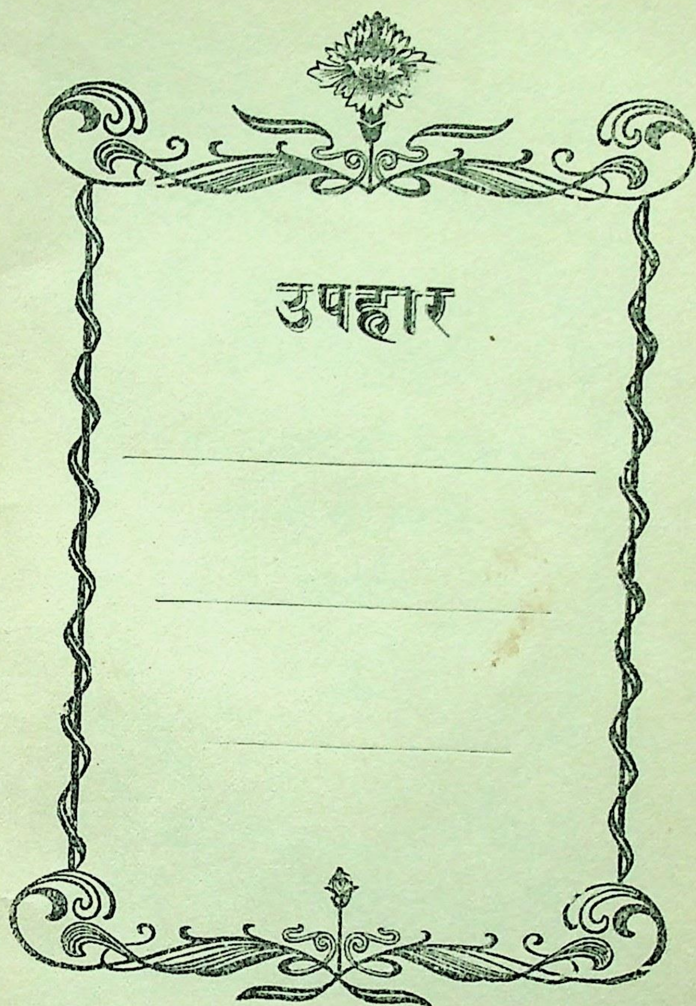
BY

Munshi NAUJADIK LAL SRIVASTAVA

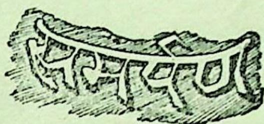
AT

THE FINE ART PRINTING COTTAGE
28, Edmonstone Road—Chandralok
Allahabad

May
1934


उपहार





पूज्य नानी की दिवङ्गत
आत्मा को सादर
समर्पित





प्राक्कथन



देवी जोन, या जोन ऑफ़ आर्क, संसार के इतिहास में एक अमर नाम है। अमर ही नहीं, यह एक अद्भुत तथा विस्मय-कारक नाम है। अब भी जोन के विषय में लोगों की अनेक प्रकार की सम्मतियाँ हैं। अब भी कोई उसे जादूगरनी समझता है, कोई ईश्वर और स्वर्ग की देवी; कोई उसे सर्वगुण-सम्पन्न राजनैतिक नेत्री मानता है, कोई उसे मानता है एक अपूर्व देशभक्त शहीद। यह ठीक है कि उसका जीवन बड़ा विचित्र जीवन था। उसमें ईश्वर के दूतों का वर्णन है, देवी-देवताओं का वर्णन है, इलहाम का वर्णन है, धार्मिक रहस्यों का वर्णन है। ये बातें ऐसी हैं, जिन पर आधुनिक संसार विश्वास नहीं कर सकता या नहीं करना चाहता। ये बातें ऐसी हैं, जो कोरी कपोल-कल्पित कथाएँ ही विदित होती हैं। इनको समझ-दार तथा तर्कशील व्यक्ति उसी प्रकार असम्भव कह देंगे, जिस प्रकार कि पुराणों, बाइबिल तथा अन्य धर्म-ग्रन्थों की रहस्यपूर्ण कहानियों को। परन्तु फिर भी, हमें यह न भूलना चाहिए कि हम उस समय पर विचार कर रहे हैं, जब ऐसी बातों का सर्वत्र प्रचार था।

जोन के चरित्र की परीक्षा हमें इन बातों से नहीं करनी चाहिए। क्योंकि ये बातें उसके चरित्र की इतनी द्योतक नहीं हैं, जितनी कि उस समय के सामाजिक चरित्र की।

इन बातों को छोड़ कर यदि हम जोन के चरित्र तथा जीवन के कार्य पर दृष्टिपात करते हैं, तो उस बालिका के प्रति हमारी श्रद्धा और हमारा आदर बहुत बढ़ जाते हैं। उस समय की ऐतिहासिक परिस्थिति का ज्ञान करके हमें यह विदित होता है कि फ़ान्स का उद्धार उस समय केवल इस बात से सम्भव था कि युवराज चार्ल्स को किसी प्रकार बादशाह बनाया जाय। अङ्गरेज़ भी, औरों की भाँति, इस बात को मानते थे कि यदि किसी प्रकार रेम नगर में चार्ल्स का राज्याभिषेक हुआ, तो फ़ान्स उनके हाथ से गया। वे भी ईश्वरीय शक्तियों में विश्वास करते थे और उनसे भय खाते थे। इसी कारण, जब चार्ल्स का अभिषेक रेम नगर में हो गया, तो उन्हें जोन से भय मालूम देने लगा। और अनेक नीच उपायों से उन्होंने अन्त में उसको नष्ट करके ही छोड़ा। जोन की इस कहानी के पीछे एक धार्मिक महत्व ही नहीं छिपा है; इसके पीछे एक राजनैतिक सत्य भी विदित है। वही सत्य ऐसा है, जो जोन की जीवनी को पढ़ने वाले के काम की चीज़ है, और विशेष कर उन पढ़ने वालों के लिए, जो एक पीड़ित तथा परतन्त्र देश के निवासी हैं! जोन का सबसे बड़ा सन्देश है—अत्याचारियों का अन्त करके स्वतन्त्रता प्राप्त करना। उसके कार्य में, उसके इलहाम में, उसके युद्धों की प्रगति में, उसके मुक़दमे में तथा उसके बलिदान में यही सन्देश कूट-कूट कर भरा पड़ा है। उसका

बलिदान—निर्दोष तथा निरपराध बलिदान—संसार में सदा एक पथ-प्रदर्शन का कार्य करेगा, यही उसके जीवन की विशेषता है, यही उसके जीवन की सुन्दरता है। मुझे आशा है कि मेरे वे देश-वासी, जो इस देवी के इस चरित्र को पढ़ेंगे, इन लाइनों में उस सन्देश का शब्द सुनेंगे और इससे उनका कुछ पथ-प्रदर्शन, कुछ उत्साह-वर्द्धन तथा कुछ आत्म-जागरण होगा।

जोन के विषय में अनेक व्यक्तियों ने पुस्तकें लिखी हैं। उनमें से कुछ अङ्गरेज़ हैं, कुछ फ्रेञ्च तथा कुछ अन्य देशों के निवासी। अङ्गरेज़, जिन्होंने जोन को जीवित जलवा दिया था, अधिकांश में उसके विरुद्ध लिखेंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु अनेक अङ्गरेज़ ऐसे हैं, जिन्होंने निष्पक्ष भाव से जोन की जीवनी के सभी अङ्गों पर प्रकाश डाला है। वास्तव में बात यह है कि जोन के जीवन के सम्बन्ध की घटनाओं का सच्चा विवरण तो मिलना ही कठिन है, क्योंकि जोन के समय का वृत्तान्त उन इतिहास-लेखकों ने लिखा है, जो अधिकांश में या तो अङ्गरेज़ों के प्रभुत्व में थे या बर्गण्डी के ड्यूक के प्रभाव में। जोन के मुक़दमे की सरकारी कार्यवाही के आधार पर भी कुछ पुस्तकें लिखी गई हैं। परन्तु उस कार्यवाही पर विश्वास नहीं किया जा सकता; क्योंकि वह सब उसके शत्रुओं की लिखी हुई थी। उस मुक़दमे के गवाहों के बयान भी प्रामाणिक नहीं माने जा सकते, क्योंकि जोन के पक्ष के गवाह बुलाये ही नहीं गये थे, लगभग सभी गवाह उसके शत्रु-पक्ष के थे।

इस पुस्तक के लिखने में मैंने M. Anatole France की लिखी हुई The life of Joan of Arc तथा Andrew Lang

की लिखी हुई The Maid of France और History of France आदि पुस्तकों तथा कुछ प्राचीन पत्रों और फ्रेञ्च समाचार-पत्रों से सहायता ली है, जिसके लिए मैं इन सबका आभार मानता हूँ।

इस पुस्तक के लिखने में मैंने क्या उद्देश्य सामने रक्खा है, इस विषय में भी दो शब्द इस स्थल पर कह देना अनुपयुक्त न होगा। जिस समय देवी जोन का प्रादुर्भाव हुआ था, उस समय फ़ान्स की दशा वैसी ही थी, जैसी आजकल हमारे देश की है। विदेशियों का पञ्जा, आपस की फूट, देशद्रोहियों की भरमार आदि से फ्रेञ्च लोग हमारी तरह ही त्रस्त थे। ऐसी दशा में देवी जोन का चरित्र हमारे नवयुवकों और नवयुवतियों के लिए कितना लाभप्रद तथा आदर्शपूर्ण होगा, इसका अनुमान सहज ही किया जा सकता है। हिन्दी में देवी जोन का चरित्र-चित्रण उस रूप में अभी तक नहीं किया गया है, जिस रूप में उसकी आवश्यकता है। इसी कमी को पूरा करना इस पुस्तक का उद्देश्य है। इस कार्य में मैं कहाँ तक सफल हो सका हूँ, इसका निर्णय मैं कृपालु पाठकों के ऊपर छोड़ता हूँ।

अन्त में मैं अपनी जीवन-सहचरी श्रीमती रतन प्रेम को, उनकी बहुमूल्य सम्मतियों तथा अन्य प्रकार की सहायता के लिए धन्यवाद देता हूँ।

बम्बई
२४—१—३२

—धनीराम प्रेम

———



जोन की प्रस्तर-प्रतिमा

पहला परिच्छेद

जोन के समय में फ्रान्स



जोन के जीवन को समझने के पूर्व यह जानना आवश्यक है कि जोन के समय में फ़्रान्स की राजनैतिक तथा सामाजिक अवस्था कैसी थी, तथा कुछ परिचय उन व्यक्तियों का पाना भी आवश्यक है, जिनका सम्बन्ध जोन के जीवन से बहुत कुछ रहा था।

उस समय फ़्रान्स एक सम्पूर्ण राज्य नहीं था, बल्कि कई भागों में बँटा हुआ था। यद्यपि छठा चार्ल्स नाम मात्र को फ़्रान्स का बादशाह था, परन्तु वास्तव में फ़्रान्स के अन्दर कई शक्तियाँ अपना प्रभुत्व जमाये बैठी थीं। कुछ भाग तो इङ्गलैण्ड के बादशाह ने हड़प लिया था, जिस पर उसका आधिपत्य था। कुछ भाग ड्यूक ऑफ़ बर्गण्डी के अधीन था। यह भाग बादशाह के अधीन प्रदेश के लगभग

बराबर ही था। कुछ भाग पर बादशाह का भाई ड्यूक ऑफ़ औलेंन शासन करता था। इस प्रकार फ़ान्स उस समय टुकड़े-टुकड़े हो रहा था।

बादशाह चार्ल्स बहुधा पागल बना रहता था। अतः राज्य का सञ्चालन उसकी शैतान स्त्री इसाबेला करती थी। इसाबेला का सहायक था औलेंन का ड्यूक, जो स्वयं बड़ा दुश्चरित्र तथा घृण्य जीव था।

रानी और बादशाह के भाई ने षड्यन्त्र रच कर बादशाह को वश में कर लिया था और प्रजा पर मनमाना अत्याचार करते थे। एक बार जब बादशाह का पागलपन कुछ दूर हुआ तो उसने ड्यूक ऑफ़ बर्गण्डी से सहायता की प्रार्थना की और ड्यूक ने बादशाह की रक्षा उसकी रानी और उसके भाई से की। फलस्वरूप बर्गण्डी के ड्यूक का सम्मान पैरिस में बढ़ गया।

इस घटना से औलेंन के ड्यूक लुई और बर्गण्डी के ड्यूक जों में शत्रुता पैदा हो गई। लुई ने एक बार जों की स्त्री का अपमान कर दिया इससे उस शत्रुता ने और भी विकट रूप धारण कर लिया। परन्तु कुछ व्यक्तियों के प्रयत्न से २० नवम्बर सन् १४०७ में उन दोनों में समझौता हो गया। समझौता तो हो गया, परन्तु शत्रुता के भाव दोनों के हृदयों से नहीं निकले। फलस्वरूप बर्गण्डी के ड्यूक ने अपने नौकरों द्वारा, समझौते के तीन दिन बाद

ही, छल से औलेंन के ड्यूक का बध करा दिया। इस घटना के बाद ही ड्यूक ऑफ़ बर्गण्डी ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया और वह लीए नगर में रहने के लिए चला गया।

बर्गण्डी के ड्यूक के इस कृत्य ने फ़ान्स का जो सर्वनाश किया, वह अकथनीय है और फ़ान्स के इतिहास पढ़ने वालों को ही उसका पूरा पता चल सकता है। इस कृत्य ने फ़ान्स को कई भागों में और कई शक्तियों में विभाजित कर दिया और इस प्रकार अँगरेज़ों को फ़ान्स में अपने पैर फैलाने का अवसर दिया।

औलेंन का ड्यूक दुश्चरित्र और कौशली था, इसमें सन्देह नहीं। परन्तु साथ ही वह अँगरेज़ों का कट्टर शत्रु था और उनसे लोहा लेने के लिए सदा तैयार रहता था। दूसरी ओर बर्गण्डी का ड्यूक अँगरेज़ों का सहायक था। इस कारण उसकी मृत्यु का दुख उन सभी व्यक्तियों को हुआ, जो अँगरेज़ों के विरुद्ध थे। इस प्रकार देश में दो दल बन गये। एक तो उन व्यक्तियों का, जो अँगरेज़ों के पक्ष में थे; इनका नेता था बर्गण्डी का ड्यूक और इस दल वाले 'बर्गण्डियन' कहलाते थे। दूसरा दल उन व्यक्तियों का था, जो अँगरेज़ों के विरुद्ध थे; इनका नेता था आर्मागनाक का काउण्ट और ये कहलाते थे 'आर्मागनाक'।

सन् ११४१ में बर्गण्डी के ड्यूक ने अँगरेज़ बादशाह हेनरी चतुर्थ से सहायता माँगी। वह तो ऐसा अवसर ताक ही रहा था, अतः उसने अपनी सेना फ़ान्स को भेज दी। सन् १४१३ में हेनरी पञ्चम ने फ़ान्स पर दल-बल सहित चढ़ाई कर दी। अँगरेज़ी और फ्रेञ्च सेनाओं में, सन् १४१५ में, आज़ीन कूर नामक स्थान पर घमासान युद्ध हुआ, जिसमें अँगरेज़ों की विजय हुई। हेनरी पञ्चम को फ़ान्स की राजकुमारी काथरीन ब्याही गई थी, अतः हेनरी ने फ़ान्स के सिंहासन को हड़प जाना चाहा, यद्यपि सिंहासन का उत्तराधिकारी राजकुमार चार्ल्स मौजूद था। बर्गण्डी वालों की सहायता से हेनरी ने फ़ान्स के कई प्रान्तों पर आधिपत्य जमा लिया और सन् १४४८ में पैरिस भी उसके अधिकार में आ गया। युवराज चार्ल्स, जिसको फ्रेञ्च भाषा में दोफ़ाँ चार्ल्स कहते हैं, उस समय १६ वर्ष का था। उसने बड़ी कठिनाई से भाग कर अपनी जान बचाई।

सन् १४१९ में बर्गण्डी के ड्यूक जों और दोफ़ाँ चार्ल्स में समझौता होने के लिए एक मीटिङ्ग हुई। वहाँ बात-चीत में दोनों ओर से कुछ अपशब्द कहे गये और फल यह हुआ कि दोफ़ाँ के साथियों ने बर्गण्डी के ड्यूक का बध उसी प्रकार कर दिया, जिस प्रकार उसने ऑर्लेन के ड्यूक का बध कराया था। इस हत्या का दोष दोफ़ाँ के सिर पर मढ़ा गया और उसके पिता बादशाह चार्ल्स ने उसे राज्याधिकार

से वञ्चित कर दिया। हेनरी पञ्चम को मुँह माँगी मुराद मिल गई। उसने सार्वजनिक रूप से अपने को फ़ान्स के सिंहासन का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। इधर बर्गण्डी के ड्यूक का पुत्र, नया ड्यूक फ़िलिप, अपने पिता के रक्त का बदला लेने के लिए अँगरेज़ों से मिल गया। इस प्रकार दोफ़ाँ के विरुद्ध स्वयं उसका पिता अँगरेज़ों का बादशाह हेनरी तथा बर्गण्डी का ड्यूक, ये तीन शक्तियाँ थीं। इन्हीं सब शक्तियों का सामना करना, इन्हीं सबको पराजित करके दोफ़ाँ को फ़ान्स का बादशाह बनाना, यह जोन का मिशन था।

सन् १४२२ के अगस्त मास में हेनरी पञ्चम का देहान्त हो गया और उसके दो मास बाद ही बादशाह छठा चार्ल्स भी इस संसार से चल बसा। चार्ल्स की मृत्यु के बाद फ़ान्स का कोई बादशाह नहीं बना, परन्तु बादशाह बनने के इच्छुक कई थे—दोफ़ाँ चार्ल्स, जो नियमानुसार फ़ान्स का युवराज था, हेनरी छठा तथा बर्गण्डी का ड्यूक फ़िलिप।

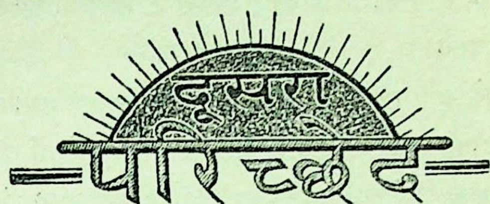
हेनरी छठा नाबालिग़ था, अतः हेनरी पञ्चम राज्य की देख-रेख के लिए अपने दो भाइयों को रीजेण्ट बना गया था। ड्यूक ऑफ़ ग्लाडस्टर इङ्गलैण्ड का रीजेण्ट था; ड्यूक ऑफ़ बैडफ़ोर्ड फ़ान्स का रीजेण्ट था। ड्यूक ऑफ़ बैडफ़ोर्ड बड़ा चतुर व्यक्ति था और राजनीति में पूर्ण कुशल था। वह जानता था कि बिना बर्गण्डी वालों की

सहायता के वह फ्रान्स में अपने पैर जमाये नहीं रह सकता था। इसलिए उसने ड्यूक ऑफ़ बर्गण्डी की बहिन आन से विवाह कर लिया।

दोफ़ाँ, इस प्रकार, एक ओर अपने दिन विपत्ति में काट रहा था; उसके साथ थोड़े से दरबारी थे और कुछ प्रान्त उसे अपना अधिपति मानते थे। दूसरी ओर अँगरेज़ बगण्डी के ड्यूक की सहायता से युद्ध के लिए सेनाएँ तैयार कर रहे थे। इस तैयारी का लाभ उठाकर उन्होंने सन् १४२८ में औलेंन के ड्यूक को गिरफ़ार करके इङ्गलैण्ड भेज दिया और औलेंन नगर के चारों ओर घेरा डाल दिया।

ऐसा समय था, जब जोन को इलहाम हुआ। उसके सामने दो मिशन थे। पहला था औलेंन के घेरे को तोड़ कर अँगरेज़ों को पराजित करना, दूसरा था, दोफ़ाँ चार्ल्स को फ्रान्स का बादशाह बनाना। किस प्रकार उसने ये कार्य किये, कहाँ तक वह अपने मिशन को पूरा करने में सफल हुई, यह बात पाठक आगे के पृष्ठों में पायेंगे।





जन्म और बाल्यकाल



फ्रांस के उत्तर में म्यज़ नाम की एक नदी बहती है। न्यफ़शातो तथा वोकूलियर नाम के नगरों के बीच का भाग इस नदी के किनारे बड़ा सुहावना प्रतीत होता है। नदी की उसी तराई में एक ओर दोंरेमी नाम का एक ग्राम है और उसी के सामने नदी के दूसरी ओर माक्से नाम का दूसरा ग्राम है। इसी दोंरेमी में देवी जोन का जन्म हुआ था।

देवी जोन के जन्मकाल के सम्बन्ध में कुछ मतभेद है। कोई उसे १४१० बताते हैं, कोई उसे १४१२ बताते हैं। देवी जोन के पिता का नाम ज़ाके द आर्क था और माता का नाम इसाबेला था। माता को लोग बहुधा रोमे कहा करते थे। यह नाम उनको दिया जाता था, जो रोम की यात्रा कर आते थे। यह पता नहीं कि जोन की माता उस यात्रा को

कर चुकी थीं। जोन की एक बहिन थी और तीन भाई थे। बहिन का नाम काथरीन था। भाइयों के नाम थे, ज़ाके, ज़ों तथा पियर।

ज़ाके द आर्क खेती-बारी का काम करता था। उसकी शिक्षा-दीक्षा भली भाँति नहीं हुई थी। परन्तु लोगों की दृष्टि में वह एक धार्मिक व्यक्ति था। जोन की माता भी बड़ी धार्मिक थी और इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसके विचारों का जोन पर अवश्य कुछ प्रभाव पड़ा था।

जोन का फ़्रान्सीसी नाम जौन है। इसके रखने का कारण भी मनोरञ्जक है। ईसाइयों में एक देवता, सन्त जौन, की बड़ी मानता मानी जाती थी। ईसाइयों का विश्वास था कि सन्त जौन स्वर्ग का सबसे बड़ा देवता है और प्रलय के बाद वह पृथ्वी पर आयेगा। उसके नाम पर अपने बच्चों का नाम रखना उस समय बहुत शुभ और उत्तम माना जाता था। इसी सन्त जौन के नाम पर देवी जोन का नाम रक्खा गया था।

दोंरेमी में कोई स्कूल नहीं था। अतः अधिकांश बालकों की शिक्षा नहीं के बराबर होती थी; केवल उन बालकों को छोड़ कर जो माक्से के स्कूल में पढ़ने चले जाते थे। जोन को भी कोई शिक्षा नहीं मिल सकी थी; हाँ उसकी माता ने उसे कुछ धार्मिक गीत तथा कथाएँ याद करा दी थीं। यही उसकी पूरी शिक्षा थी। कुछ तो जोन की

स्वाभाविक प्रवृत्ति तथा कुछ उसकी माता की शिक्षा; इन दोनों ने मिल कर जोन के हृदय में धर्म के प्रति बड़ी श्रद्धा पैदा कर दी थी। दोंरेमी के पास नौतरदाम बैरमों नामक गिर्जा था। जोन वहाँ अधिक जाती थी और बहुधा देवता के नाम पर मोमबत्ती जलाया करती थी।

इसके अतिरिक्त उन दिनों उस ग्राम में परियों के सम्बन्ध में अनेक दन्त-कथाएँ कही जाती थीं। अनेक व्यक्ति तो यह विश्वास करते थे कि परियाँ उस ग्राम में उस समय भी आती थीं और कुछ तो यहाँ तक कहते थे कि उन्होंने कई बार परियों को ग्राम के बाहर नृत्य करते देखा था। एक पेड़ का नाम तो 'परियों का पेड़' ही पड़ गया था, क्योंकि इन व्यक्तियों को परियाँ अधिकतर इस पेड़ के नीचे दिखाई देती थीं। इस वृक्ष के पास ही एक पानी का सोता था, जिसके विषय में यह प्रसिद्ध था कि जो कोई उसका पानी पीता था, उसका रोग चला जाता था। इन सब बातों से पाठक ग्राम के उस वातावरण का अनुमान कर सकते हैं, जिसमें जोन का पालन-पोषण हुआ था और जिसने उसके जीवन पर इतना गहरा प्रभाव डाला था। यह तो धार्मिक वातावरण था।

जोन को फ्रान्स के राजकुमार दोफ़ाँ को राजा बनाने तथा उसके लिए अपने जीवन का बलिदान तक करने का विचार कैसे हुआ, इसके लिए हमें दोंरेमी के राजनैतिक

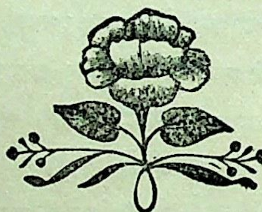
वातावरण की ओर भी कुछ ध्यान देना चाहिए। फ़ान्स के तत्कालीन ऐतिहासिक विवरण में पाठक यह ज्ञात कर ही चुके हैं कि उस समय फ़ान्स के तीन भाग हो रहे थे। उत्तर का सारा प्रदेश बर्गण्डी के ड्यूक तथा अँगरेज़ों के प्रभुत्व में था; परन्तु दोंरेमी के आस-पास का थोड़ा-सा भाग फ़ान्स के बादशाह को अपना अधिपति मानता था। इस प्रकार एँग्लो-बर्गण्डियन सागर में दोंरेमी का प्रदेश एक फ़्रेञ्च टापू की भाँति था। उसके चारों ओर का प्रदेश फ़ान्स के शत्रुओं से घिरा हुआ था। हम यह कह चुके हैं कि दोंरेमी के सामने ही म्यज़ नदी के किनारे माक्से नाम का एक ग्राम था। यह ग्राम ड्यूक ऑफ़ बर्गण्डी के अधीन था, जो लौरेन के प्रान्त में था।

दोंरेमी के चारों ओर जो छोटे-छोटे ज़मींदार थे, वे सदैव आपस में लड़ते रहते थे। उस समय लड़ने के साथ-साथ घरों और खेतों में आग लगा देना तथा उन चोरों के लिए निर्धन कृषकों की गाय-बकरियों को हाँक कर ले जाना एक साधारण बात थी। इस लूट-मार में दोंरेमी के निवासियों को अधिक हानि सहनी पड़ती थी। कभी-कभी वहाँ के निवासी क़ैद करके ले जाये जाते थे, कभी-कभी किसी कृषक का वध भी हो जाता था। इन दृश्यों को जोन प्रायः देखा करती थी। उसने ग्राम-निवासियों से यह भी सुना होगा कि अँगरेज़ों की अन्यायपूर्ण कूटनीति के कारण ही दोफ़ाँ

शक्तिहीन हो गया था और बिना दोफ़ाँ के बादशाह बने और शक्ति प्राप्त किये दोंरेमी का उद्धार होना असम्भव हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इन बातों से जोन के हृदय में अँगरेज़ों के प्रति विद्रोह की आग भड़कनी प्रारम्भ हो गई हो और उसने दोफ़ाँ की सहायता करना अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य बना लिया हो।

एक और घटना है, जिसकी ओर हम पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। यह कहा जा चुका है कि दोंरेमी में कोई स्कूल न था और वहाँ के कुछ बच्चे सामने के ग्राम माक्से को पढ़ने के लिए जाया करते थे। माक्से था बर्गण्डी के ड्यूक के अधीन। इसी से इन दोनों ग्रामों में शत्रुता रहा करती थी। यह शत्रुता बड़ों-बड़ों ही में नहीं, बालकों के दिलों में भी घर कर गई थी, अतः दोनों ग्रामों के बच्चे आपस में बहुधा झगड़े किया करते थे। कभी-कभी तो वे एक-दूसरे के सिर तक फोड़ डालते थे। चूँकि दोंरेमी के बालक संख्या में थोड़े होते थे, अतः खेत रहता था सदा माक्से वालों के हाथ। जब दोंरेमी के छोटे-छोटे बच्चे आहत शरीर और फटे हुए वस्त्र लेकर सन्ध्या को लौटते थे, तो जोन का कोमल हृदय उन्हें देख कर रो उठता था। सम्भव है कि इन बातों ने जोन के हृदय में बर्गण्डी वालों के प्रति घृणा तथा बदले के भाव भर दिये हों।

जोन का बाल्यकाल ऐसे वातावरण में व्यतीत हुआ था कि कहीं उसे अपने सम्बन्धियों के घर लुटते हुए देखने पड़े थे, कहीं उनके खेत जलते हुए और कहीं छोटे-छोटे बालकों के आहत शरीर उसके सामने आये थे। चारों ओर नित्य ही उसे युद्ध का अनुभव करना पड़ा था, कलेजा पका देने वाले अत्याचारों का उसे सामना करना पड़ा था, यहाँ तक कि अपने मित्रों तथा निकट सम्बन्धियों की मृत्यु तक देखनी पड़ी थी। इस वातावरण ने और उसके ग्राम की तत्कालीन धार्मिक परिस्थिति ने जोन के जीवन को एक अद्भुत तथा अपूर्व साँचे में ढाल दिया।



तीसरा परिच्छेद

इलहाम



ह पहले कहा जा चुका है कि दोरेमी के निवासियों का भूत-प्रेत पर विश्वास बहुत था और इसी कारण अन्य प्रान्तों के लोग इस भाग को 'जादूगरों तथा स्यानों का प्रदेश' कहा करते थे। यह भी कहा जा चुका है कि जोन बाल्य-काल ही से धार्मिक प्रवृत्ति की थी।

जब जोन तेरह वर्ष की थी, उसने एक शब्द सुना। उसने चारों ओर देखा कि शायद कोई कहीं से उसे बुला रहा हो, परन्तु उसे कोई व्यक्ति कहीं दिखाई न पड़ा। वह इस घटना से कुछ डर सी गई, परन्तु उसने इस विषय में फिर कुछ विचार न किया। कुछ समय इसी प्रकार व्यतीत हो गया। एक दिन फिर उसके कानों में उसी प्रकार का शब्द सुनाई दिया। वह शब्द इस बार बिलकुल स्पष्ट था। उसने

सुना, "मैं ईश्वर द्वारा तुम्हारे पास भेजा गया हूँ ताकि मैं तुम्हें अच्छा और पवित्र जीवन व्यतीत करने में सहायता दे सकूँ। जोन, भली बनो और परमात्मा तुम्हारी सहायता करेगा।"

तीसरी बार जोन ने फिर उसी प्रकार की बातें सुनीं। परन्तु इस बार उसने उस शब्द करने वाले को पहचान लिया। वह सन्त मीशैल था। इस सन्त के नाम के लिए आर्मागनाक लोगों के हृदयों में बड़ा सम्मान था। जोन ने इसके विषय में अनेक दन्त-कथाएँ सुनी थीं और उसकी प्रस्तर-मूर्तियाँ भी यत्र-तत्र देखी थीं।

कुछ दिनों बाद सन्त मीशैल ने जोन से कहा—सन्त काथरीन और सन्त मारगरेट तुम्हारे पास आयेंगी। जो कुछ तुम्हें करना है, उसमें तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करने के लिए ही वे नियुक्त हुई हैं। तुम उनमें विश्वास करो और उनकी शिक्षा और सम्मति के अनुसार कार्य करो।

यहाँ पर सन्त काथरीन और सन्त मारगरेट के विषय में भी कुछ बता देना अप्रासङ्गिक न होगा। ये दोनों देवियाँ ईसाइयों में उसी प्रकार सम्मान तथा भक्ति की दृष्टि से देखी जाती थीं, जिस प्रकार हिन्दू अपने देवताओं को सम्मान तथा भक्ति की दृष्टि से देखते हैं।

सन्त मारगरेट का जन्म एण्टियोख़ में हुआ था। उन दिनों ईसाई मत का प्रचार बहुत कम हुआ था और एण्टि-

योख़ के शासकगण ईसाई नहीं थे और अपनी ईसाई प्रजा पर बड़ा अत्याचार करते थे।

जब मारगरेट १५ वर्ष की थी तो एक दिन वह खेत में भेड़ों को चरा रही थी। उसी समय उस प्रान्त का गवर्नर ऑलिब्रायस उस ओर होकर निकला। मारगरेट का सौन्दर्य देख कर वह उसे पाने के लिए एकदम अधीर हो उठा। उसने शीघ्र ही अपने नौकरों को आज्ञा दी कि उस सुन्दरी को पकड़ कर यहाँ ले आओ। यदि वह किसी दास की बालिका है, तो मैं उसे अपने यहाँ रखूँगा। यदि वह किसी सम्भ्रान्त नागरिक की कन्या है, तो मैं उसके साथ विवाह कर लूँगा।

"तुम्हारा नाम क्या है ?"—गवर्नर ने पूछा।

"मारगरेट"—मारगरेट ने निर्भीकता से उत्तर दिया।

"तुम्हारा धर्म क्या है ?"

"ईसाई !"

"ईसाई ?"

"हाँ !"—मारगरेट ने दृढ़ता से कहा।

गवर्नर कुछ सोचता रहा। फिर बोला—यह आश्चर्य की बात है कि तुम इतनी सुन्दर होकर ईसा की पूजा करती हो।

"इसमें आश्चर्य क्या है ?"

"क्योंकि ईसा तो फाँसी पर लटक कर मर गया !"

"ईसा मरा नहीं, वह जीवित है।"

गवर्नर का क्रोध इस उत्तर से प्रज्वलित हो गया। वह अग्निवर्षक शब्दों में बोला—मूर्ख लड़की, ईसा की पूजा छोड़ कर हमारे देवताओं की पूजा कर। यदि तू राज़ी से न मानेगी, तो मैं तेरे शरीर को टुकड़े-टुकड़े करवा डालूँगा।

"ईसा हम लोगों के लिए सूली पर चढ़ा था, मैं भी प्रसन्नता से उसके नाम पर मर जाऊँगी।"—मारगरेट ने शान्ति से कहा।

गवर्नर का क्रोध और भी बढ़ गया। अपने नौकरों द्वारा लोहे की शलाखों से उसे पिटवाया और लोहे के अस्त्रों द्वारा उसके शरीर से मांस नुचवाया। मारगरेट के शरीर से रक्त की धारा बहने लगी। दर्शकों के नेत्रों से भी आँसुओं की धारा बहने लगी। परन्तु मारगरेट पर इसका कुछ भी प्रभाव न पड़ा। तब गवर्नर ने उसे जेल भेजवा दिया।

जेल में कुछ दिन रखने के बाद मारगरेट पर जज की अदालत में मुक़द्दमा चलाया गया। उस मुक़द्दमे के अन्त में मारगरेट को यह सज़ा मिली कि या तो वह मूर्तियों की पूजा करे या उसका शरीर जीवित ही अग्नि में जला दिया जाय। मारगरेट ने मूर्ति-पूजा स्वीकार नहीं की और धर्म के नाम पर हँसते-हँसते अपना प्राण दे दिया।

सन्त काथरीन के नाम पर एक गिर्जा माक्से ग्राम में था और यह पहले ही कहा जा चुका है कि माक्से जोन के

ग्राम के पास ही नदी के दूसरी ओर था। सन्त काथरीन का नाम जोन ने पहले ही से सुन रक्खा था, क्योंकि वह युवती बालिकाओं की सहायक देवी समझी जाती थी। सन्त काथरीन की कथाएँ उस समय चारों ओर प्रख्यात थीं और उन्हें प्रत्येक ग्राम का निवासी जानता था। काथरीन की कथा इस प्रकार है :—

काथरीन के पिता थे, सम्राट् कोस्टस तथा माता थी, सम्राज्ञी सैबीनैला। काथरीन अपूर्व सुन्दरी थी और कला में उसकी अच्छी पहुँच थी। परन्तु वह अपने माता-पिता की भाँति मूर्ति-पूजक थी। साम्राज्य के अनेक सम्भ्रान्त व्यक्तियों ने उसके साथ विवाह करने की इच्छा प्रगट की, परन्तु उसने कुछ ध्यान न दिया।

एक बार उसे रात्रि में एक स्वप्न दिखाई दिया। उसने देखा कि कुमारी मैरी अपने नवजात पुत्र ईसा को गोद में लिए आईं और उससे कहा—'काथरीन, तुम ईसा को अपना पति मानोगी ?' और उसी समय उसने ईसा की ओर फिर कर कहा—पुत्र, क्या तुम इस युवती को अपनी पत्नी बनाओगे ?

ईसा ने उत्तर दिया—माँ, मैं इसे अपनी पत्नी नहीं बना सकता, क्योंकि यह मूर्तियों की पूजा करती है। यदि यह ईसाई बन जाय, तो मैं इसके साथ विवाह कर लूँगा।

प्रातःकाल जागने पर काथरीन ने स्वप्न की बातें याद कीं और वह इस बात से बड़ी प्रसन्न हुई कि उसका विवाह स्वयं ईश्वर के पुत्र से हो सकता है। वह शीघ्र ही आर्मीनिया जाकर ईसाई बन गई और कुछ दिन बाद उसने अपने कमरे में ईसा को कुछ देव-दूतों के साथ आते हुए देखा। ईसा ने आते ही एक अँगूठी काथरीन के हाथ में पहना दी। बस तभी से काथरीन अपने को ईश्वर की पुत्र-बधू समझने लगी।

उन दिनों रोमन लोगों का सम्राट् मैक्जैन्टियस था। उसने काथरीन के नगर-निवासियों को मूर्तियों पर बलिदान चढ़ाने की आज्ञा दी। काथरीन यह सुन कर मन्दिर की ओर गई और सम्राट् से बोली—

"तुम बड़े मूर्ख हो, जो यहाँ के निवासियों को मूर्तियों पर बलिदान चढ़ाने की आज्ञा दे रहे हो। तुम मनुष्य के बनाये हुए इन मन्दिरों, इन मूर्तियों तथा इन आभूषणों की पूजा करते हो? तुम आकाश, सूर्य, चन्द्र, तारे, पृथ्वी, समुद्र आदि को देखो और विचारो कि इनका निर्माता कौन है। वह परमात्मा है, जिसकी पूजा तुमको करनी चाहिए।"

सम्राट् ने काथरीन को राजभवन में ले जाकर बन्द कर दिया और ५० तर्क-शास्त्रियों को बुला कर कहा—यह बालिका हमारे देवताओं का अपमान करती है। तुम अपने

तर्क से इसे शान्त कर दो, तो मैं तुम्हें सम्मानपूर्वक विदा कर दूँगा।

काथरीन को जब इस बात का पता चला, तो वह घबराई कि कहीं वह सुप्रसिद्ध विद्वानों के सामने पराजित न हो जाय। परन्तु एक देवता ने उसे ढाढ़स बँधाया और उससे कहा कि विजय उसी की होगी। उसने उन विद्वानों का सामना किया और उन्हें ईश्वर और ईसा की सत्ता का विश्वास करा दिया। वे विद्वान् सम्राट् से बोले—सम्राट्, अब तक हम देवताओं की मूर्तियों में विश्वास करते रहे हैं, परन्तु अब इस बालिका ने हमारी आँखें खोल दी हैं। हम सब ईसाई हो जायँगे।

सम्राट् इस बात से बड़ा क्रोधित हुआ और उसने उन पचासों विद्वानों को बीच नगर में जीवित ही जलवा दिया। तब उसने काथरीन को अपनी बेगम बनाने का लोभ दिया, परन्तु काथरीन ने बेधड़क होकर 'नहीं' में उत्तर दे दिया। तब सम्राट् ने उसे धमकी दी, परन्तु काथरीन पर इसका भी कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। फिर सम्राट् ने उसे लोहे की शलाकाओं से पिटवाया और उसे एक कालकोठरी में डलवा दिया, जहाँ न उसे भोजन दिया जाता था न पानी!

एक दिन सम्राज्ञी को स्वप्न में काथरीन दिखाई दी, जिसने सम्राज्ञी से ईसाई हो जाने को कहा। सम्राज्ञी जागने पर कालकोठरी में गई और देखा कि काथरीन के घाव भर

गये थे और ईसा के दूत उसके लिए भोजन और पानी लाते थे।

कुछ दिनों के बाद सम्राट् ने काथरीन को कालकोठरी में से निकलवाया और कहा—तुम मूर्तियों को मान कर जीवित रहना स्वीकार करती हो या विधर्मी होकर घुटघुट कर मरना ?

काथरीन ने उत्तर दिया—मैं ईसा के नाम पर अपना रक्त और मांस अर्पण करना पसन्द करती हूँ।

इस पर सम्राट् ने चार पहिये बनवाये, जिनमें नुकीली लौह-शलाकाएँ लगी थीं। इन्हीं पहियों द्वारा काथरीन को मारना निश्चित हुआ था। परन्तु इस कृत्य के पहले ही एक ईसा के दूत ने उन पहियों को तोड़ डाला। इस घटना से सम्राज्ञी का विश्वास काथरीन पर बढ़ गया और उसने सम्राट् की भर्त्सना की। सम्राट् इसे कब सहन कर सकता था ? उसने सम्राज्ञी का उसी समय बध करा दिया। काथरीन भी बच न सकी क्योंकि सम्राट् ने उसका भी शिरच्छेद करा दिया। जिस समय काथरीन का बध हुआ, उस समय उसके शरीर से रक्त के स्थान पर दुग्ध की धारा बही। यह है कहानी सन्त काथरीन की। यह पुराणों की कथाओं से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। इसमें ईसा को कृष्ण का रूप दिया है और काथरीन को गोपी का। साथ ही इसमें यह भी दिखाया है कि ईसाई-धर्म के ग्रहण करने

वालों को उस समय कैसे-कैसे कष्ट उठाने पड़ते थे और ईसा और उसके दूत अपने इन भक्तों के लिए कैसे-कैसे जादू के खेल किया करते थे। सन्त मारगरेट तथा सन्त काथरीन की कहानियों में सत्यता का कितना अंश है, उनसे कैसे भाव झलकते हैं, इन सबका विचार करना हमारे विषय के अन्तर्गत नहीं है। इन कथाओं से हम यही सीख सकते हैं कि जोन को यह जान कर कि इन कथाओं की नेत्रियाँ ही उसका पथ-प्रदर्शन करेंगी, बड़ी प्रसन्नता हुई होगी और उसके भावी जीवन पर इन कथाओं का बहुत प्रभाव—गहरा प्रभाव—पड़ा होगा।

सन्त मीशैल ने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की और सन्त मारगरेट तथा सन्त काथरीन, दोनों जोन के पास आईं। जोन को उनके दर्शन करके बड़ी प्रसन्नता हुई। सबसे पहले दोनों सन्तों ने जोन से पवित्र रहने की प्रतिज्ञा करने को कहा, जिसे जोन ने सहर्ष स्वीकार किया। इसके पश्चात् दोनों सन्त अनेक बार जोन के पास आईं और उसे सदा पवित्र और धार्मिक जीवन व्यतीत करने का उपदेश देती रहीं। बहुत दिनों तक यह क्रम चलता रहा और जब सन्तों को यह विश्वास हो गया कि जोन उस कार्य के उपयुक्त है, जिसे ईश्वर उसके सिपुर्द करना चाहता था, तो उन्होंने उसको अपना सन्देश दिया—"हे परमात्मा की पुत्री, तू इस ग्राम को छोड़ दे और फ्रान्स को जा, जहाँ तेरी आव-

श्यकता है।" फ़ान्स से यहाँ उनका आशय था उस प्रान्त से जहाँ दोफ़ाँ चार्ल्स रहता था।

यह कहना बड़ा कठिन है कि यह विचार, कि जोन को अपने राजकुमार की सहायता के लिए फ़ान्स को जाना चाहिए, वास्तव में जोन के मस्तिष्क ही में उत्पन्न हुआ था अथवा उसके पथ-प्रदर्शक सन्तों ने उसके मस्तिष्क में भर दिया था। यह सम्भव हो सकता है कि जोन का ही यह विचार हो। क्योंकि उन दिनों यह प्रसिद्ध था कि फ़ान्स की रक्षा एक युवती द्वारा होगी और जोन को, अपने धार्मिक विचारों के कारण तथा अपने इलहाम के कारण, यह विश्वास हो गया हो कि वह युवती जोन ही है।

कुछ भी हो, जोन उन सन्तों में विश्वास करती थी और जब उन्होंने उसे फ़ान्स जाने की सम्मति दी, तो वह बोली—मैं एक ग़रीब किसान की पुत्री हूँ। मैं न तो घोड़े पर सवार होना जानती हूँ और न जानती हूँ युद्ध के लिए शस्त्र ग्रहण करना। फिर मैं राजकुमार की क्या सहायता कर सकूँगी ?

इसके उत्तर में सन्तों ने कहा—स्वर्ग के सम्राट् का भेजा हुआ झण्डा तू अपने हाथों में ग्रहण कर, वही तेरी सहायता करेगा।

जब से जोन को ये इलहाम हुए थे, तब से वह बहुत गम्भीर होकर रहती थी। उसने बालकों के साथ खेलना

त्याग दिया था। न वह खेतों में काम करने जाती थी। या तो वह अकेली बैठी ध्यान में मग्न रहा करती थी और या गिर्जों में पूजा और प्रार्थना के लिए जाया करती थी।

एक बार सन्त मीशैल फिर उसके पास आया और बोला—जोन, तू दोफ़ाँ चार्ल्स को रेम नगर को ले जा और उसका राजतिलक करा, ताकि वह फ़्रान्स का बादशाह बन सके।

यह पाठकों को बताया जा चुका है कि फ़्रान्स में यह नियम था कि जब तक राजकुमार का राजतिलक रेम नगर में नहीं हो जाता था, तब तक वह बादशाह नहीं कहला सकता था, बल्कि केवल राजकुमार अर्थात् दोफ़ाँ ही कहलाता था। चूँकि रेम नगर शत्रुओं के हाथ में था, इसलिए चार्ल्स वहाँ नहीं जा सका था। यह बात भी बड़ी मनोरञ्जक है कि फ़्रान्स के बादशाहों का राजतिलक रेम नगर में ही किया जाना क्यों आवश्यक हुआ।

प्राचीन काल में, जब फ़्रान्स के राजा ईसाई नहीं हुए थे, फ़्रान्स पर क्लोविस नाम का बादशाह राज्य करता था। वह मूर्तिपूजक था। उसने जर्मनों से एक युद्ध छेड़ दिया था। किसी के कहने से क्लोविस ने ईसा का नाम लेकर युद्ध किया और विजयलक्ष्मी उसके हाथ रही। इस पर रानी ने बादशाह से ईसाई हो जाने की प्रार्थना की। बादशाह ने यह बात

स्वीकार कर ली। उन दिनों रेम नगर में एक ईसाई पादरी रहता था, जिसके पास बादशाह ईसाई होने गया। जब बादशाह को ईसाई बनाने का संस्कार हो रहा था, उसी समय स्वर्ग से एक हंस उतरा, जिसकी चोंच में एक बर्तन था, जिसमें पवित्र तेल था। पादरी ने यही तेल बादशाह पर छिड़का और हंस अन्तर्धान हो गया। इस बात से बादशाह को बड़ा विस्मय हुआ और वह एक पक्का ईसाई बन गया। चूँकि वह फ्रान्स का पहला ईसाई शासक था, अतः उस समय से यह प्रथा प्रचलित हो गई कि फ्रान्स का प्रत्येक शासक, राज्य-भार लेने से पूर्व, रेम के गिर्जे में जाय और उस हंस के लाये हुए बर्तन का तेल उसके ऊपर छिड़का जाय। बिना इसके कोई भी शासक बादशाह नहीं कहला सकता था। कहा जाता था कि राजतिलक के दिन वह बर्तन प्रत्येक अवसर पर भरा हुआ पाया जाता था। इसी प्रथा के अनुसार यह आवश्यक था कि राजकुमार चार्ल्स का अभिषेक रेम नगर में हो।

जब सन्त मीशैल ने जोन को ईश्वर की आज्ञा सुनाई, तो जोन बड़े सोच-विचार में पड़ गई। क्या वह उस कार्य को कर सकती थी? यदि वह उस कार्य को करने के लिए तैयार भी हो गई, तो वह चार्ल्स के पास किस प्रकार पहुँच सकती थी? वह इसी सोच-विचार में थी कि ईश्वर के दूत ने उसे फिर आकर बताया—तुम वोकूलियर के


जोन के समय में फ्रांस
आरा
रुआँ
रेम्स
सीन नदी
पैरिस
वोकूलियर
दोरेमी
न्यूफ़शातो
ऑर्लेन्स
ल्वायर नदी
शीनों

गवर्नर रोबे द बोद्रीकूर के पास जाओ। वह तुम्हें दोफ़ाँ के पास पहुँचाने का प्रबन्ध कर देगा।

इस प्रेरणा से जोन चुप न बैठ सकी। उसने रोबे से मिलने का पक्का इरादा कर लिया। परन्तु वह यह भेद अपने माता-पिता पर प्रगट करना नहीं चाहती थी, क्योंकि वे उसे ग्राम से बाहर जाने की आज्ञा न देते। इस कारण वह चुपचाप अपने एक सम्बन्धी के यहाँ गई और उसे समझा-बुझा कर वोकूलियर जाने के लिए सहमत कर लिया।

वह वोकूलियर पहुँची और रोबे से मिल कर अपनी इच्छा उस पर प्रगट की। रोबे को उसकी बातों में बचपन के अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई न दिया। उसे यह विश्वास ही न हुआ कि जोन इस योग्य है कि वह अँग-रेज़ों और बर्गण्डी वालों को पराजित करके दोफ़ाँ को रेम नगर में ले जा सकेगी। उसे न तो जोन के इलहामों का पता था और न उस देशभक्ति की अग्नि का, जो निरन्तर जोन के हृदय में प्रज्वलित हो रही थी। रोबे ने जोन को निराश करके वापस दोंरेमी की ओर भेजवा दिया।

जब जोन अपने ग्राम को लौट कर आई, तो उसे अपने माता-पिता का सामना करना पड़ा। ज़ाके द आर्क को अभी तक जोन के इलहाम का बिलकुल पता न था। हाँ, वह जोन के व्यवहार तथा रहन-सहन में ऐसे परिवर्तन

देख रहा था, जो उसकी दृष्टि में वाञ्छनीय नहीं थे। उसे यह देख कर बड़ा दुख होता था कि उसकी पुत्री घर और खेत का काम करने के बजाय युद्ध-क्षेत्र और सेनाओं की बातें किया करती थी। उसकी वोकूलियर की यात्रा ने तो जाके को और भी चिन्तित बना दिया था। भला वह क्या जानता था कि उसकी पुत्री एक दिन फ़्रान्स का उद्धार करके अपना नाम संसार के इतिहास में अमर कर जायगी।

एक रात्रि को उसने स्वप्न में देखा कि उसकी पुत्री सिपाहियों के साथ भाग रही है। वह जब जागा तो उस स्वप्न की याद करके वह क्रोध से भर गया। उन दिनों बहुतेरी नवयुवतियाँ सिपाहियों के साथ भाग जाया करती थीं और उनकी रखेल बन कर रहती थीं। परन्तु समाज में ऐसी युवती के कुटुम्ब को बड़ी हेय दृष्टि से देखा जाता था। जाके को उस स्वप्न का अर्थ यही समझ पड़ा और इसीलिए उसने दोनों पुत्रों को बुला कर कहा—यदि मुझे यह विश्वास हो जाय कि यह स्वप्न सत्य होगा और जोन हमारे नाम पर कलङ्क-कालिमा लगावेगी, तो मैं तुम्हें उसे जीवित ही जल में डुबा देने के लिए बाध्य करूँगा और यदि तुम ऐसा न करोगे, तो मैं स्वयं ही उसे जल में डुबा दूँगा।

इसी बीच में फ़्रान्स के रीजेण्ट ड्यूक ऑफ़ बैडफ़ोर्ड ने अपनी सेना की एक टुकड़ी वोकूलियर को अपने अधि-

कार में करने के लिए भेजी। अङ्गरेज़ी सेना के विषय में यह प्रसिद्ध था कि जिधर होकर वे लोग जाते थे, वहाँ के ग्राम, खेत आदि सब नष्ट हो जाते थे। कहीं वे आग लगाते थे, कहीं लूट मचाते थे। उनके मार्ग में दोंरेमी का ग्राम भी आता था, अतः वहाँ के निवासी इस समाचार को पाकर अपनी रक्षा के लिए इधर-उधर भाग गये। ज़ाके द आर्क अपने कुटुम्ब सहित न्यफ़शातो नगर में अपने एक मित्र के यहाँ आकर रहने लगा।

यह पहले कहा जा चुका है कि सन्त काथरीन और सन्त मारगरेट ने जोन से कुमारी रहने की प्रतिज्ञा करा ली थी। जोन इस प्रतिज्ञा का पालन कर रही थी। इसी सम्बन्ध में जोन के ऊपर एक मुक़द्दमा चला, उसमें एक नवयुवक ने जज से यह प्रार्थना की थी कि वह जोन को उसके साथ विवाह करने के लिए विवश करे, क्योंकि जोन ने उसको विवाह का वचन दे दिया था। इस मुक़द्दमे में जोन के माता-पिता ने उस नवयुवक का समर्थन किया, परन्तु फिर भी जोन विचलित न हुई और उसने इस बात को जज के सामने अस्वीकार किया कि उसने विवाह का किसी को वचन दिया था।

कुछ दिनों के अनन्तर अँगरेजों की सेना ने औंर्लेन के ड्यूक को, जो दोफ़ाँ चार्ल्स का साथी था, क़ैद कर लिया और औंर्लेन को चारों ओर से घेर लिया। यह घेरा बहुत

दिनों तक पड़ा रहा; न तो अँगरेज़ ही वहाँ के क़िले को ले सके और न ऑर्लेन निवासियों ने ही आत्मसमर्पण किया। इस समय जोन को फिर इलहाम हुआ कि "तुम जाकर दोफ़ाँ की सेना को ऑर्लेन की ओर ले जाओ और अँगरेज़ों को पराजित करके दोफ़ाँ को बादशाह बनाओ।" इस इलहाम से जोन ने अपना पथ निर्धारित कर लिया। उसने देश का उद्धार करने के लिए कमर कस ली और दोंरेमी को अन्तिम बार प्रणाम करके वह वोकूलियर की ओर चल दी। दोंरेमी से उसकी वह अन्तिम विदा थी, वह फिर वहाँ लौट कर न आ सकी।



चौथा परिच्छेद

युवराज से भेंट



सरी बार जोन फिर रोबे द बोद्रीकूर से मिली। इस बार न जाने क्यों रोबे ने जोन को डाँटा नहीं, न उससे दोरेमी को लौट जाने के लिए ही कहा। इस बार उसने धैर्य से जोन की बातें सुनीं। जोन बोली—इस बार फिर मुझे ईश्वर की आज्ञा हुई है कि मैं दोफ़ाँ से मिलूँ और उससे सिपाही लेकर मैं ओर्लेन के घेरे को तोड़ूँ और फिर उसका राज्याभिषेक रेम नगर में करूँ।

इन शब्दों को रोबे ने सुन तो लिया, परन्तु फिर भी उसने जोन की प्रार्थना पर अधिक ध्यान नहीं दिया। तब उसने एक अन्य व्यक्ति से यही प्रार्थना की। उसने जोन को दोफ़ाँ के पास ले जाने का वचन दे दिया। परन्तु कुछ दिनों बाद रोबे ने अपनी सम्मति बदल दी। उसने वोक्रूलियर के गिर्जे के पादरी को जोन की परीक्षा लेने के लिए भेजा। यह पादरी यह देखना चाहता था कि जोन शैतान के प्रभाव

में थी या देवताओं के प्रभाव में। उसने मनचाही परीक्षा ली और अन्त में यह निष्कर्ष निकाला कि जोन देवताओं के प्रभाव में थी। इस बात से रोबे सन्तुष्ट हो गया और उसने दोफ़ाँ के पास एक दूत इस प्रार्थना के साथ भेजा कि दोफ़ाँ जोन को शीनों आने की आज्ञा दे दे। कुछ दिनों तक जोन प्रतीक्षा करती रही। अन्त में एक दूत दोफ़ाँ का सन्देश लेकर आ गया। दोफ़ाँ ने जोन को शीनों आने की आज्ञा दे दी थी और यात्रा के प्रबन्ध का भार रोबे को सुपुर्द किया था। इस समाचार से जोन को बड़ी प्रसन्नता हुई। वह इसी प्रकार दोफ़ाँ द्वारा बुलाई जाना चाहती थी।

यात्रा से पूर्व जोन ने अपने बाल कटा कर पुरुषों के से कर लिये। कुछ मित्रों ने उसके लिए एक मर्दानी पोशाक बनवा दी। रोबे ने उसे एक तलवार दी। यह सब करना उन दिनों आवश्यक था। क्योंकि यह पहले ही कहा जा चुका है कि उस समय चारों ओर लड़ाई-झगड़े होते रहते थे, लूट-मार होती थी, ग्रामों में आग लगा दी जाती थी और पथिकों की दुर्दशा की जाती थी। उसके साथ दोफ़ाँ के दूत तथा वोंकूलियर के कई निवासी गये।

मार्ग की कठिनाइयाँ और ख़तरे देख कर एक साथी ने जोन से पूछा—इस भयानक समय में तुम किस प्रकार यात्रा कर सकोगी?

बड़ी शान्ति से जोन ने उत्तर दिया—मैं इन कठिनाइयों से नहीं डरती हूँ। ईश्वर ने मेरा मार्ग निर्विघ्न कर दिया है। मैं ईश्वर के आदेशानुसार दोफ़ाँ के पास जा रही हूँ और वही मेरी यात्रा को सफल करेगा।

शीनों (पाठकों को साथ का मानचित्र देखने से पता चलेगा) वोकूलियर से बहुत दूर था। जोन को यात्रा में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मार्ग में कुछ ऐसे डाकू रहते थे, जो यात्रियों को पकड़ कर गहरे खड्डों में डाल देते थे, और तब तक उन्हें नहीं छोड़ते थे, जब तक कि उन अभागों के सम्बन्धी उन डाकुओं को हर्जाने के स्वरूप कुछ रुपये भेंट न कर देते थे। एक बार तो जोन लगभग ऐसे ही निर्दय डाकुओं के हाथों में पड़ गई थी, परन्तु किसी प्रकार वह वहाँ से सकुशल निकल आई। या तो ईश्वर के दूतों ने उसकी रक्षा की होगी, या डाकुओं ने जोन के साथियों को अपने से अधिक शक्तिशाली समझ लिया होगा।

ग्यारह दिनों की यात्रा के अनन्तर जोन शीनों पहुँच गई। इसके पूर्व ही वह एक पत्र लिखवा कर दोफ़ाँ के पास भेज चुकी थी। दो दिन वह एक सराय में रही। उसके बाद वह दोफ़ाँ के सामने बुलाई गई। दोफ़ाँ ने उससे मिलने के पूर्व रोबे के भेजे हुए पत्र पढ़ लिये थे, जिनसे उसे जोन के इलहाम के विषय में ज्ञात हो चुका था। दोफ़ाँ ने

उन व्यक्तियों को अपने सामने बुलवाया, जो जोन के साथ आये थे। उन्होंने जोन की प्रशंसा दोफ़ाँ के सामने की।

अन्त में वह समय आया, जिसकी प्रतीक्षा जोन इतने दिनों से और इतनी व्याकुलता से कर रही थी। उसे चार्ल्स से मिलने की आज्ञा दे दी गई। चार्ल्स के दरबार का भवन दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था। उस दिन सारे दरबारी, मन्त्री, सेनापति, राजदूत आदि उपस्थित थे। जोन सीधी चार्ल्स की ओर गई। उस समय भी वह पुरुष-वेश में थी। टोपी सिर से उतार कर वह झुकी और बोली—"हे दोफ़ाँ, ईश्वर तुम्हें चिरायु करे।" यहाँ पर यह कह देना ठीक होगा कि जोन ने कभी पहले चार्ल्स को देखा न था, न उसका कोई चित्र ही उसे दिखाई पड़ा था। चार्ल्स उस समय अपने सिंहासन पर नहीं था, बल्कि अपने दरबारियों के साथ एक ओर खड़ा था। चार्ल्स बहुत ही पतला-दुबला था और साधारण वस्त्र पहने हुए था। अन्य दरबारी सुन्दर वस्त्र पहने हुए थे और किसी अनजान व्यक्ति के आगे उनमें से किसी के राजकुमार समझे जाने की सम्भावना अधिक थी। फिर भी जोन ने दोफ़ाँ को पहचान लिया। इस विस्मय-कारक बात ने दरबारियों पर काफ़ी प्रभाव डाला।

"तुम्हारा नाम क्या है?"—चार्ल्स ने पूछा।

"जोन मेरा नाम है, सुन्दर दोफ़ाँ!"—जोन ने उत्तर दिया।

"तुम क्या चाहती हो ?"

"स्वर्ग के बादशाह, ईश्वर, ने मुझे प्रेरणा की है कि मैं तुम्हारा राज्याभिषेक रेम नगर में कराऊँ और तुम्हें फ़ान्स ईश्वर के नाम पर सौंपूँ ।"

चार्ल्स उसे एकान्त में ले गया और वहाँ जोन ने उससे कहा—"तुम्हीं फ़्रान्स के वास्तविक उत्तराधिकारी हो और तुम्हीं फ़्रान्स के सच्चे बादशाह बनोगे।" इन वाक्यों को सुन कर दोफ़ाँ चार्ल्स का मुख-मण्डल प्रसन्नता से दमकने लगा। कारण यह था कि बहुधा चार्ल्स को यह सन्देह रहता था कि उसकी नसों में शाही रक्त नहीं है और वह राज्य का वास्तविक उत्तराधिकारी नहीं है। इन विचारों से दुखी होकर वह राज्याधिकार से मुख मोड़ने तक का निश्चय कर लेता था। अब उसे यह जान कर परम सन्तोष हुआ कि ईश्वर की वाणी भी उसे ही राज्य का उत्तराधिकारी बताती है।

चार्ल्स ने अपने दरबारियों से परामर्श किया और उस परामर्श के बाद यह निश्चय हुआ कि चार्ल्स अपने यहाँ के विद्वानों की एक सभा करके जोन की परीक्षा कराये कि वास्तव में वह उस कार्य के योग्य है, जिसके लिए वह तैयार होकर आई थी। अस्तु, इस ओर परीक्षा की तैयारियाँ हो रही थीं और उस ओर लोग जोन के विषय में अनेक प्रकार की बातें उड़ा रहे थे। उस समय की एक कविता, जो लैटिन भाषा में है, उसका अर्थ इस प्रकार है :—

"एक कुमारी पुरुषों के वेश में ईश्वर की आज्ञा से चार्ल्स को अवनति के गढ़े से निकालने के लिए और उसके शत्रुओं को देश से भगाने के लिए पैदा हो गई है। वह उन शत्रुओं को भी पराजित कर देगी, जो इस समय ऑर्लेन को घेरे पड़े हैं तथा वहाँ के निवासियों को भय-भीत बनाये हुए हैं। यदि फ्रेञ्च लोग साहस करके युद्ध के लिए तैयार हो जायँगे, तो धोखेबाज़ अँगरेज़ों का नाश हमारा युद्ध का देवता कर देगा, जो जोन के साथ है और उसके लिए लड़ता है। तभी युद्ध का अन्त होगा और मैत्री-भाव का प्रचार होगा; शान्ति की स्थापना होगी और बादशाह चार्ल्स न्यायपूर्वक राज्य करेगा। भविष्य में कोई भी अङ्गरेज़ अपने को फ्रान्स का बादशाह न कह सकेगा।"

इस कविता के अनुवाद में पाठक उस समय की फ्रेञ्च प्रजा के भावों का भली-भाँति अनुशीलन कर सकते हैं।

कुछ दिनों बाद जोन पोइटीऐर नगर को ले जाई गई। इसी नगर में दोफ़ाँ के प्रदेश की राजधानी थी और यहीं उसकी पार्लामेण्ट की बैठकें होती थीं। यहाँ दोफ़ाँ के राज्य के प्रसिद्ध पादरी, धर्मशास्त्र के पण्डित, क़ानून के ज्ञाता तथा राजदरबारी जोन की परीक्षा करने के हेतु इकट्ठे हुए। जितने व्यक्ति वहाँ एकत्रित हुए थे, उन सबके

मस्तिष्क दो प्रकार के विचारों से भरे हुए थे। एक विचार तो यह था कि किसी प्रकार अङ्गरेज़ फ्रान्स से बाहर निकाल दिए जायँ। उनका विश्वास था कि इस कार्य को करने के लिए ईश्वर किसी मानवी शक्ति को प्रेरित कर सकता है, और वह शक्ति जोन हो सकती है। दूसरा विचार यह था कि उन दिनों में जादूगरनी और टोटके-टनके करने वाली स्त्रियों की कमी नहीं थी। ये स्त्रियाँ भी उसी प्रकार ईश्वरीय आज्ञाओं का वर्णन करती थीं, जिस प्रकार जोन करती थी। वे भी यही कहती थीं कि ईश्वर के दूत जाग्रतावस्था में अथवा स्वप्न में उन्हें ईश्वर के सन्देश सुनाते हैं। ऐसी स्त्रियों की पोल खुल जाने पर जनता उन्हें बड़ी क्रूरता से मार डालती थी। चर्च का क़ानून भी उनके विरुद्ध बहुत कठोर था, कहीं उन्हें जीवित जलाया जाता था, कहीं किसी अन्य दुखद उपाय से उनका अन्त कर दिया जाता था। यही कारण था कि परीक्षकों के सामने इतनी बड़ी द्विविधा थी। वे यह भी चाहते थे कि जोन की बातें सत्य हों परन्तु उन्हें यह आशङ्का भी थी कि कहीं उसके द्वारा वे और उनका बादशाह ठगे न जायँ। यहाँ पर इतना और कह देना उचित होगा कि चूँकि पैरिस का विश्वविद्यालय और चर्च बर्गण्डी वालों तथा अङ्गरेजों के प्रभाव में थे, अतः वहाँ के पादरियों और तर्कशास्त्रियों ने यह फ़तवा दे दिया था कि दोफ़ाँ चार्ल्स के साथ ईश्वर नहीं है,

वह अङ्गरेजों के साथ है। अर्थात् ईश्वर के क़ानून के अनुसार फ्रान्स पर राज्य करने का अधिकार अङ्गरेज़ों को ही था। इधर पोइटीऐर के पादरियों ने चार्ल्स के पक्ष में फ़तवा दिया था। अतः इन पादरियों की यह इच्छा थी कि उनका फ़तवा सत्य हो और वे जोन के द्वारा उसकी सत्यता सिद्ध करना चाहते थे।

उन दिनों चार्ल्स का एटर्नी जनरल था राबातो। क़ानून के विषय में इसका नाम बहुत विख्यात था। इसी के घर में जोन का निवास हुआ और वहीं दरबारी लोग उसकी परीक्षा करने के लिए आने लगे। पहले तो जोन को इस बात से कुछ चिन्ता हुई, परन्तु फिर उसे सन्त काथरीन की कहानी याद आ गई। सन्त काथरीन को भी इसी प्रकार परीक्षकों का सामना करना पड़ा था। उस कहानी को याद करके जोन के हृदय में बल तथा साहस का सञ्चार हो गया और वह परीक्षा के लिए तैयार हो गई।

"तुम यहाँ क्यों आई हो? बादशाह की इच्छा यह जानने की है कि तुम्हारा उनके पास आने का उद्देश्य क्या है?"—परीक्षकों का पहला प्रश्न था।

"जब मैं चरागाह में अपने जानवरों को चरा रही थी, मैंने किसी व्यक्ति को कहते सुना—जोन, ईश्वर तुम्हें फ्रान्स में जाने की प्रेरणा करता है।"—जोन ने निर्भीकता से उत्तर दिया। वह फिर बोली—"इन बातों को सुन कर मैं रोने

लगी। तब मैंने सुना—'तुम वोकूलियर जाओ। वहाँ तुम्हें बादशाह का प्रतिनिधि मिलेगा, जो तुम्हें सकुशल फ्रान्स भेज देगा।' आज्ञानुसार मैंने वही किया और मैं बिना किसी विघ्न के यहाँ आ पहुँची।"

"तुम्हारे कथनानुसार ईश्वर फ्रान्स की रक्षा और उद्धार करेगा। फिर सिपाहियों की और युद्ध की इसके लिए क्या आवश्यकता है?"

"सिपाही ईश्वर के नाम पर युद्ध करेंगे और ईश्वर उन्हें विजयी बनायेगा।"—जोन ने उन्हें समझाया।

"तुम्हारे लिए ईश्वर की क्या आज्ञा है?"

"ईश्वर की यही आज्ञा है कि मैं ऑर्लेन का घेरा तोड़ कर अँगरेज़ों को देश के बाहर निकाल दूँ और दोफ़ाँ को रेम ले जाकर उसका अभिषेक करा दूँ।"

तब परीक्षकों ने उससे उसके इलहाम के विषय में अनेक प्रश्न किये। जोन के उत्तरों से सन्तुष्ट होकर उन्हें उसके विषय में कोई सन्देह न रहा। परन्तु कुछ और ऐसी बातें थीं, जिनके लिए वे आपत्ति करते थे, उनमें से एक थी उसके वेश-भूषा के विषय में।

"तुमने पुरुषों की भाँति अपने बाल क्यों कटाये हैं और उन्हीं की भाँति तुम वस्त्र क्यों पहनती हो? तुम नहीं जानती हो कि चर्च के क़ानून के अनुसार यह एक अपराध है?"—परीक्षकों ने पूछा।

"हाँ, मैं जानती हूँ, परन्तु अपनी और अपनी स्त्री-सुलभ लज्जा की रक्षा करने के हेतु ही मैंने यह किया है।"—जोन ने उत्तर में कहा।

"तुम चार्ल्स को बादशाह न कह कर अब भी 'दोफ़ाँ' (युवराज) ही क्यों कहती हो ? क्योंकि बादशाह चार्ल्स छठे की मृत्यु के बाद से प्रजा उन्हें बादशाह मानती है और वह बादशाह की भाँति ही सारे कार्य करता है।"

"जब तक चार्ल्स का अभिषेक रेम नगर में न होगा, तब तक वह वास्तविक बादशाह नहीं हो सकता। इसीलिए मैं अभी उसे बादशाह पुकारने के लिए तैयार नहीं।"—जोन ने कहा।

"तुम्हारा इलहाम कौन सी भाषा में होता है ?"—एक परीक्षक ने पूछा।

"वह भाषा तुम्हारी भाषा से अधिक श्रेष्ठ है।"—जोन का उत्तर था।

"क्या तुम ईश्वर में विश्वास करती हो ?"—परीक्षक का प्रश्न था।

"हाँ, तुमसे अधिक।"—जोन ने उत्तर दिया।

"परन्तु जब तक कोई चिन्ह तुम प्रगट न करो, हम कैसे विश्वास करें कि तुम ईश्वर की प्रेरणा से आई हो ? इस प्रकार बिना विश्वास हुए तुम्हारे साथ सैनिकों को भेजना उचित न होगा।"

"मैं इस स्थान पर चिन्ह दिखाने नहीं आई। मैं तो तुमसे ऑर्लेन जाने के लिए सैनिक माँगने आई हूँ। तुम मुझे ऑर्लेन ले चलो और वहाँ मैं तुम्हें ईश्वर के चिन्ह दिखाऊँगी। ऑर्लेन की विजय ही मेरा सच्चा चिन्ह होगी। मैं तुमसे कहे देती हूँ कि अँगरेज़ देश से भगा कर नष्ट कर दिये जायँगे। मैं ईश्वर के नाम पर अँगरेज़ों से ऑर्लेन छोड़ देने के लिए कहूँगी और थोड़े समय में ही इस नगर का उद्धार शत्रुओं के हाथों से हो जायगा। दोफ़ाँ का राज्याभिषेक रेम नगर में होगा। पैरिस फिर बादशाह का आधिपत्य स्वीकार करेगा और ऑर्लेन का ड्यूक इङ्गलैण्ड से स्वतन्त्र होकर आ जायगा।"

जोन की यह परीक्षा लगभग छः सप्ताह तक होती रही। इस परीक्षा के अन्त में परीक्षकों ने यह घोषित किया कि वे जोन के वक्तव्य से सन्तुष्ट हैं और उन्हें यह विश्वास है कि जोन को वास्तव में ईश्वर की प्रेरणा हुई है।

यह तो सब हुआ, परन्तु एक परीक्षा और रह गई, जो उन दिनों बहुत ही आवश्यक समझी जाती थी। वह यह कि जोन अपना कौमार्य व्रत तो नहीं तोड़ चुकी है। उन दिनों—और उन दिनों ही क्यों, ईसाई-धर्म के पिछले इतिहास में भी—यह बात मानी जाती थी कि ईश्वर की आज्ञा उसके दूतों द्वारा केवल पवित्र बालिकाओं को ही दी जा सकती है, न कि उनको, जो अपना कौमार्य व्रत भङ्ग

कर चुकी हों। ईसाई धर्म का स्रोत ही, वास्तव में, एक कुमारी है। इसीलिए ईसाई धर्म में कुमारी युवतियों को इतनी महत्ता दी गई है। ईसाई धर्म में अनेक ऐसी कहानियाँ हैं, जिनमें कुमारियों ने ईश्वर की शक्ति ग्रहण करके अनेक आश्चर्यजनक तथा अद्भुत कार्य किये थे। इसीलिए परीक्षकों ने जोन के विषय में इस बात का निश्चय कर लेना ठीक समझा।

इस परीक्षा के लिए दो उपाय काम में लाये गये। कुछ पादरी लोग चुपचाप दोंरेमी गये और उन्होंने वहाँ तथा आस-पास के ग्रामों में जोन के विषय में पूछताछ की। उनकी रिपोर्ट जोन के पक्ष में थी। वे वहाँ से जोन के पवित्र होने के समाचार ही नहीं लाये, साथ ही उसके बाल्यकाल तथा इलहाम के विषय में भी अनेक बातें जान कर आये। दूसरा उपाय उन्होंने यह किया कि कई सुप्रसिद्ध तथा सम्भ्रान्त स्त्रियों ने जोन की गुप्तेन्द्रियों की परीक्षा की। इस परीक्षा का परिणाम भी जोन के पक्ष में ही रहा।

इस प्रकार परीक्षा करने के बाद सन्तुष्ट होकर जोन के विषय में सब प्रकार के परीक्षकों ने निम्न-लिखित निष्कर्ष निकाले :—

"चूँकि बादशाह चार्ल्स की समस्त प्रजा शान्ति और सुख के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती रही है और बादशाह और प्रजा दोनों ही को ईश्वरीय सहायता की आवश्यकता

है, हम बादशाह को यह सम्मति देते हैं कि वह जोन की इस बात पर अविश्वास न करें कि ईश्वर ने उसे फ्रान्स की सहायता के लिए भेजा है और साथ ही वह उसकी प्रत्येक बात पर सहज ही विश्वास कर लिया करें। जोन की परीक्षा दो प्रकार से हो सकती है। एक तो उसके विषय में अन्वेषण द्वारा ; दूसरे उससे कोई ऐसा चिन्ह माँगना, जिससे यह विदित हो सके कि वह ईश्वर की प्रतिनिधि है।

"बादशाह ने इन दोनों प्रकारों से जोन की परीक्षा ली है। उसको अपने पास छः सप्ताह तक रख कर बादशाह ने सभी प्रकार के व्यक्तियों द्वारा उसकी तथा उसके कृत्यों की परीक्षा कराई है। इस परीक्षा द्वारा यह सिद्ध हो गया है कि जोन पापिनी नहीं है, इसके विरुद्ध वह सत्य, लज्जाशीला, पवित्र, ईमानदार तथा शुद्ध और सादे विचारों की है।

"चिन्ह के विषय में बादशाह के पूछने पर जोन ने यह उत्तर दिया है कि ईश्वर की आज्ञानुसार वह उस चिन्ह को और्लेन में ही प्रदर्शित करेगी।

"इन सब परीक्षाओं के अनन्तर बादशाह ने यह निश्चय किया है कि वह जोन को और्लेन जाने की आज्ञा दे देंगे। यही नहीं, वह उसके साथ युद्ध करने के लिए सेना भी भेजेंगे। जब उस बालिका में कोई पाप या दूषण नहीं है, तो उसके कथनानुसार कार्य न करने का अर्थ होगा ईश्वर के प्रति विद्रोह, जिसे कोई भी पसन्द न करेगा।"

इस निष्कर्ष को काग़ज़ पर लिख कर चारों ओर भेज दिया गया था। इस घोषणा ने चार्ल्स की प्रजा पर बड़ा अच्छा प्रभाव डाला। वे, जो जोन को सन्देह की दृष्टि से देखते थे, और वे जो उसे शैतान के प्रभाव में बताते थे, इस घोषणा से चुप हो गये। उनका साहस फिर जोन के विरुद्ध कुछ कहने का न हुआ। यही नहीं, अनेक ग्रामों में तो जोन के विषय में अनेक अद्भुत कथाएँ प्रचलित हो गईं। लोग समझने लगे कि जोन के शरीर में ईश्वर की शक्ति काम कर रही थी। वे इस घोषणा से बहुत प्रसन्न हुए। उन्हें यह विचार कर कि शीघ्र ही ओर्लेन स्वतन्त्र हो जायगा और अङ्गरेज़ फ्रान्स से भाग जायँगे, बड़ी प्रसन्नता हुई। सबके नेत्र जोन की ओर लग गये। उस समय प्रजा की दृष्टि में सेनापतियों का तो क्या, स्वयं चार्ल्स का भी इतना मान और विश्वास न था, जितना कि जोन का था। जोन उनके लिए स्वर्ग की देवी, स्वतन्त्रता की देवी, उनकी त्राणकर्त्री, उद्धारकर्त्री, सभी कुछ थी। वे उसे इतना मानने लगे थे कि पोइटीऐर से ओर्लेन की ओर जाते समय जिस पत्थर पर खड़ी होकर वह अपने घोड़े पर चढ़ी थी, उसका नाम लोगों ने "जोन का प्रस्तर" रख दिया।



पाँचवाँ परिच्छेद

औरलैंन का घेरा



स प्रकार प्रारम्भ में अङ्गरेज .फ्रान्स के प्रान्तों पर विजय प्राप्त कर रहे थे, उसी प्रकार उनका आगे बढ़ना मेन की विजय के बाद बन्द हो गया। कुछ वर्षों के लिए मानों वे विश्राम ले रहे हों। परन्तु उसका वास्तविक कारण कुछ और था। यह पहले ही बताया जा चुका है कि उस समय इङ्गलैण्ड तथा ब्रिटिश .फ्रान्स का शासन छठे हेनरी के हाथ में था। परन्तु हेनरी था नाबालिग़, अतः उसके चाचा ग्लाडस्टर तथा बैडफ़ोर्ड के ड्यूक शासन-भार सँभाले हुए थे। लन्दन में ग्लाडस्टर के ड्यूक और उसके चाचा, बिनचैसर के बिशप में कुछ अनबन हो गई और उसका परिणाम हुआ लन्दन की गलियों में रक्तपात। इस आपस की कलह और रक्तपात के कारण ड्यूक ऑफ़ बैडफ़ोर्ड को .फ्रान्स छोड़ कर लन्दन जाना पड़ा और शान्ति-स्थापन के लिए कई महीने तक वहीं रहना पड़ा। इसी कारण .फ्रान्स में अङ्ग-

रेज़ों के आक्रमणों का क्रम बहुत कुछ कम हो गया। वह अपने कार्य में इतना सफल हुआ कि कुछ समय में इङ्गलैण्ड वाले अपने झगड़ों को भूल कर फ्रान्स का सारा राज्य हड़प जाने की तैयारी करने लगे। सन् १४२८ ईसवी में पार्लमेण्ट ने इस कार्य के लिए आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव भी पास कर दिया।

इन सब तैयारियों के फलस्वरूप इङ्गलैण्ड में फ्रान्स के साथ युद्ध करने के लिए सैनिकों की भर्ती होने लगी। अन्त में लॉर्ड सौल्सबरी लगभग २,७०० सैनिकों के साथ फ्रान्स के लिए चल पड़ा। इधर फ्रान्स में भी रीजेण्ट, बैडफ़ोर्ड के ड्यूक, ने एक सेना तैयार कर ली थी। इङ्गलैण्ड से सेना आ जाने पर इन लोगों ने यकायक ऑर्लेन की ओर प्रस्थान करने का निश्चय कर लिया।

ऑर्लेन पर चढ़ाई करने से पहले ऑर्लेन का ड्यूक गिरफ़्तार करके इङ्गलैण्ड भेज दिया गया था और वहाँ उसे बन्दी-जीवन व्यतीत करना पड़ता था। उन दिनों एक अमीर को गिरफ़्तार करने के बाद उसके राज्य पर चढ़ाई करना एक निन्दनीय तथा नीच कार्य समझा जाता था। परन्तु अङ्गरेज़ों ने कभी युद्ध में नीति का ख़याल नहीं किया। उनका उद्देश्य तो अपनी विजय प्राप्त करना ही है, चाहे वह धोखेबाज़ी और मक्कारी से हो, चाहे ईमानदारी से लड़े हुए युद्ध के बाद।

औलेंन नगर रोमन लोगों के समय में बसाया गया था, परन्तु उस समय भी वह एक प्रसिद्ध तथा दर्शनीय नगर था। उसकी जन-संख्या लगभग १५,००० थी। वहाँ विश्वविद्यालय, प्रमुख चर्च, सुन्दर सड़कें, धनवान व्यापारी तथा ड्यूक के शोभायमान भवन आदि वे सभी वस्तुएँ थीं, जो एक बड़े तथा प्रसिद्ध नगर में होनी चाहिए थीं। अतः कोई आश्चर्य नहीं, यदि अङ्गरेज़ों ने उस पर अपने दाँत लगा रक्खे थे।

औलेंन नगर के चारों ओर बहुत ऊँची और दृढ़ प्राचीरें थीं। नगर में घुसने के लिए पाँच द्वार थे। दीवारों के चारों ओर गहरी खाई थी। एक ओर ल्वाइर नदी नगर की रक्षा करती थी। इसे पार करने के लिए केवल एक पत्थर का पुल था।

औलेंन के निवासी अङ्गरेज़ों की सेना के आगमन से अनभिज्ञ न थे। वास्तव में वे बहुत दिनों से आक्रमण की आशङ्का कर रहे थे। इसीलिए उन्होंने युद्ध की तैयारियाँ कर ली थीं। ड्यूक ऑफ़ औलेंन का भाई चार्ल्स के पास सहायता के लिए गया था। चारों ओर से लड़ने के लिए सैनिक एकत्रित किये जा रहे थे। नगर-निवासी बारी-बारी से नगर के द्वारों तथा मीनारों की रक्षा करते थे। जो धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे, वे पूजा-प्रार्थना भी कर रहे थे। उन दिनों इन कामों के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना

भयानक समझा जाता था। लोग ईश्वर से बहुत डरते थे और उनका विश्वास था कि यदि वे ऐसे समय में ईश्वर का नाम लेंगे तो ईश्वर उनसे अप्रसन्न हो जायगा और न जाने उनको किस प्रकार हानि पहुँचा दे। इसीलिए वे देवी-देवताओं और सन्तों से प्रार्थना किया करते थे। वे समझते थे कि यदि देवता और सन्त उनसे प्रसन्न हो गये, तो वे ईश्वर से उनकी सहायता की सिफ़ारिश कर देंगे और ईश्वर उनकी बात मान जायगा।

५ सितम्बर सन् १४२८ को लॉर्ड सौल्सबरी ऑर्लेन के निकटवर्ती नगर जानबिल पहुँचा, जहाँ से उसने ऑर्लेन-निवासियों को आत्मसमर्पण करने के लिए सन्देश भेजा। इसका उत्तर ऑर्लेन-निवासियों ने वीरतापूर्वक 'नहीं' में दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने नगर की प्राचीरों के बाहर के ग्रामों के मकान, गिर्जे आदि सभी नष्ट कर दिये, ताकि अङ्गरेज़ी सेना को ऑर्लेन के निकट आ जाने पर रहने को कोई सुरक्षित स्थान न मिले। यह कितना सुन्दर आदर्श था देशभक्ति का, इसे पाठक सहज ही समझ सकते हैं। इस प्रकार के उदाहरण उन पीड़ित राष्ट्रों तथा जातियों के लिए पथप्रदर्शक हैं, जो अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए युद्ध कर रहे हैं।

तारीख़ १२ अक्टूबर को अङ्गरेज़ी सेना ऑर्लेन जा पहुँची। उसने नदी के दूसरी ओर अपना डेरा डाला,

क्योंकि पुल का पार करना सरल नहीं था। पुल के उस पार एक मीनार बनी हुई थी, जिसकी रक्षा फ्रेञ्च सैनिक कर रहे थे। एक दिन अङ्गरेज़ों ने इस मीनार पर विजय प्राप्त करने का उद्योग किया। वे चार घण्टों तक मीनार पर आक्रमण करते रहे, परन्तु फ्रेञ्च सैनिकों ने भी बड़ी वीरता से उनका सामना किया। यहाँ तक कि उनकी स्त्रियों ने भी शत्रु पर खौलता हुआ तेल और जलते हुए कोयले बरसा कर वार किया। उन वीरों और वीराङ्गना के अथक तथा साहसपूर्ण प्रयत्न के सामने अङ्गरेज़ों की एक भी न चली। उनके पैर उखड़ गये और उन्हें पीछे हटना पड़ा।

इस आक्रमण के कुछ दिनों बाद ही एक बड़ी मनोरञ्जक घटना घटी। अङ्गरेज़ी सेना ने एक सुरङ्ग खोद कर पुलवाली मीनार की जड़ें बारूद द्वारा ढीली कर दीं। यह देख कर फ्रेञ्च सैनिकों ने मीनार छोड़ दी और नगर में जाकर उन्होंने पुल का कुछ भाग नष्ट कर दिया, ताकि अङ्गरेज़ नगर पर धावा न कर सकें। मीनार अङ्गरेज़ों के हाथ में चली गई। एक दिन लॉर्ड सौल्सबरी मीनार के ऊपर इस उद्देश्य से चढ़ा कि वह नगर का दृश्य अच्छी तरह से देख कर इस बात का पता लगावे कि कहीं कोई शिथिल भाग तो दीवारों में नहीं है, ताकि वह उसी ओर से नगर पर धावा कर सके। वह नगर की ओर देख रहा था कि उसका एक साथी बोला—"माई लॉर्ड, अपने नगर

की ओर देखिए, यहाँ से कितना अच्छा दृश्य दीखता है।" वह व्यक्ति यह कह ही पाया था कि औलेंन की ओर से आया हुआ तोप का एक गोला दीवार में लगा और उसमें से निकला हुआ एक पत्थर लॉर्ड सौल्सबरी के शिर में लगा और साथ ही हिज़ लॉर्डशिप की एक आँख और मुख का एक ओर का भाग लेता गया। पीछे से लोगों को पता चला कि जिस मीनार में वह तोप रक्खी थी, वहाँ से एक सिपाही ने एक छोटे से बालक को उतरते हुए देखा था। उस समय चारों ओर यह अफ़वाह फैल गई कि गिर्जे की देवी की प्रेरणा से उस बच्चे ने वह गोला छोड़ा था। इस दुर्घटना के कारण लॉर्ड सौल्सबरी २७ अक्टूबर को इस लोक से सिधार गया। अङ्गरेज़ों के लिए उसकी मृत्यु बड़ी निराशाजनक तथा दुखदाई थी, क्योंकि उसी के प्रयत्न से औलेंन का घेरा प्रारम्भ हुआ था।

लॉर्ड सौल्सबरी की मृत्यु के बाद उसकी सेना छिन्न-भिन्न हो गई। अनेक सैनिक भाग गये। जो बचे, उनमें भी झगड़े होने लगे। एक नेता के बिना उनकी सारी शक्ति नष्ट हो गई। ५०० सैनिकों को पुल की मीनार की रक्षा करने के लिए छोड़ कर, सारी अङ्गरेज़ी सेना औलेंन से दूर के सुरक्षित ग्रामों में चली गई।

यद्यपि अङ्गरेज़ों की शक्ति नष्ट हो गई थी, परन्तु औलेंन वाले उनके सारे भेद जानते थे। वे समझते थे कि उनका

पीछे हटना कुछ समय के लिए था। वे (अङ्गरेज़) नये नेता और नई सेना की प्रतीक्षा में थे ; उनके आते ही वे फिर आक्रमण करने के लिए तैयार थे। इस बार औलेंन वालों को यह आशङ्का थी कि घेरा नगर की किसी दूसरी ओर डाला जायगा। अतः उन्होंने चारों ओर के ग्रामों, गिर्जों, आश्रमों आदि को नष्ट कर दिया।

तारीख़ ३० नवम्बर को सर जॉन टालबोट ने आकर अङ्गरेज़ी सेना का नेतृत्व ग्रहण किया। वह अपने साथ कई तोपें लाया था। अतः अङ्गरेज़ औलेंन के ऊपर ज़ोरों के साथ गोलाबारी करने लगे। इसी प्रकार कई सप्ताह तक दोनों ओर से गोलाबारी होती रही। जब ता० २५ दिसम्बर आई तो दोनों दलों ने युद्ध कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया। वह बड़ा दिन था। उस दिन दोनों दलों को याद आया कि वे सब एक ही धर्म के मानने वाले ईसाई हैं। ता० २५ दिसम्बर को दोनों दलों ने उत्सव मनाये। औलेंन वालों ने कुछ गायक अङ्गरेज़ों के पास भेजे, जिन्होंने उनके उत्सव में जान डाल दी। परन्तु ज्योंही यह उत्सव समाप्त हुआ, फिर युद्ध छिड़ गया और तोपों से दोनों ओर के प्राणी भूने जाने लगे।

अङ्गरेज़ समय-समय पर इस प्रकार के आक्रमण करते रहे, परन्तु इससे वे औलेंन को पराजित न कर सके। तब उन्होंने चारों ओर घेरा डाल दिया, ताकि बाहर से खाद्य

पदार्थ न मिलने पर औलेंन वाले भूखों मरने लगें और आत्म-समर्पण करने को तैयार हो जायँ। परन्तु इस प्रयत्न में भी वे अधिक सफल नहीं हो रहे थे, क्योंकि उन्हें भी खाद्य-पदार्थों की आवश्यकता पड़ती थी।

इस अवसर पर दोफ़ाँ चार्ल्स अपनी शक्ति भर औलेंन वालों को सहायता देता रहा था, परन्तु उसकी सहायता से औलेंन वालों का बहुत काम नहीं निकला। इतने ही में औलेंन वालों को पता चला कि अङ्गरेज़ों की एक पार्टी पैरिस से कुछ अस्त्र-शस्त्र तथा कुछ खाद्य-सामग्री लिये हुए सर जॉन टालबोट की सहायता के लिए आ रही है। औलेंन के नेताओं ने चुपचाप जाकर उस पर आक्रमण करने का निश्चय किया।

इस आक्रमण के लिए औलेंन की जो सेना गई थी, उसका अधिनायक था काउण्ट क्लेरमों नामक एक व्यक्ति। यह बड़ा साहसहीन और कायर था। सेना के कई नायकों का यह विचार था कि अङ्गरेज़ों की सेना पर उस समय छापा मारा जाय, जबकि उन्हें इसकी बिलकुल ही आशङ्का न हो, क्योंकि यही एक उपाय था जिसके द्वारा वे अङ्गरेज़ों की उनसे अधिक शक्तिशाली सेना पर विजय प्राप्त कर सकते थे। परन्तु क्लेरमों ने उनके पास समाचार भेजा कि वे उसके आने तक आक्रमण न करें। सेनानायकों ने क्लेरमों की काफ़ी प्रतीक्षा की, परन्तु अन्त में उनका धैर्य

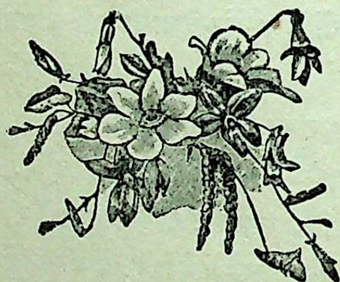
छूट गया। सेनानायकों में स्कॉटलैंड का विलियम स्टुअर्ट भी था। वह अधिक समय नष्ट करना ठीक न समझ, अपने ४०० सैनिकों को लेकर अङ्गरेज़ों पर टूट पड़ा। परन्तु अङ्ग-रेज़ों को पहले ही से समाचार मिल चुका था और वे उसके लिए तैयारी भी कर चुके थे। जब उन्होंने देखा कि आक्रमण-कारियों की संख्या इतनी कम है, तो उन्होंने बेधड़क उनका सामना किया। फलस्वरूप फ्रेञ्च सेना के ३०० सैनिक खेत रहे और उनके कई प्रसिद्ध नायक भी काम आये।

यदि क्लेरमों उस समय भी सहायता के लिए आ पहुँचता, तो अङ्गरेज़ों के पैर उखड़ते देर न लगती। परन्तु वह तो था कायर। वह चुपचाप अपनी सेना को लेकर ऑर्लेन को वापस चला गया, परन्तु वहाँ वह अधिक न ठहर सका, क्योंकि ऑर्लेन-निवासी उसे सार्वजनिक रूप से धिक्कारने लगे थे। अतः वह चुपचाप अपने सैनिकों के साथ ऑर्लेन छोड़ कर चलता बना।

इधर अङ्गरेज़ों की सहायता आ पहुँची थी, परन्तु ऑर्लेन को अधिक सहायता की आशा नहीं थी। शीनों से जिन सरदारों को चार्ल्स ने भेजे थे, वे भी ऑर्लेन छोड़ कर चले गये थे; कुछ खाद्य-पदार्थ और अस्त्र-शस्त्र की तलाश में गये थे।

ऐसे समय में ऑर्लेन-निवासियों ने सुना कि उनकी सहायता के लिए एक बालिका दोंरेमी से शीनों गई है और

वह ईश्वर की प्रेरणा से शीघ्र ही औरलेंन का घेरा तोड़ कर अङ्गरेजों को भगाने के लिए उधर आ रही है। इस समाचार से औरलेंन वालों में नई जान आ गई। आशा तथा हर्ष से उनके हृदय नाचने लगे। औरलेंन के ड्यूक का छोटा भाई उस समय औरलेंन का शासन करता था। उसने जनता की यह दशा देखी और इन बातों की सत्यता का पता लगाने के लिए दो सरदारों को शीनों भेजा। सरदारों के चले जाने पर औरलेंन-निवासी जोन के समाचारों के लिए बड़ी आकुलता से प्रतीक्षा करने लगे।



छठा परिच्छेद

औलेंन की ओर



फ़ाँ से विदा लेकर जोन औलेंन की ओर चल दी। मार्ग में एक नगर पड़ता था, जिसका नाम था तूर। जोन इस नगर में कुछ दिन रही। यहाँ पर कवच अच्छे बनाये जाते थे। दोफ़ाँ की आज्ञा से जोन के लिए यहाँ पर एक लोहे का कवच बनाया गया। इस प्रकार घोड़े पर चढ़े, कवच पहने, हाथ में झण्डा लिये, मुखाकृति पर वीरता और साहस के भाव लिये जोन रणचण्डी की भाँति औलेंन की ओर चली।

कुछ दिनों के बाद जोन ब्लुआ नामक नगर में पहुँची। यह नगर औलेंन के ड्यूक के राज्य में था। औलेंन का यह पहला नगर था, जहाँ जोन कुछ दिनों के लिए ठहरी थी। यहाँ के निवासियों ने जोन का स्वागत बड़े समारोह से किया।

यहाँ जोन ने अङ्गरेज़ों के लिए एक पत्र लिखवाया, जो अङ्गरेज़ों के सेनापति के पास भिजवा दिया गया। पत्र इस प्रकार है :—

"इङ्गलैण्ड के बादशाह और तुम ड्यूक ऑफ़ बैडफ़ोर्ड, जो अपने को फ़ान्स का रीजेण्ट कहते हो, और तुम लॉर्ड सलफ़ोर्ड, सर टालबोट और सर टॉमस, जो सब ड्यूक ऑफ़ बैडफ़ोर्ड के सहायक कहलाते हो; तुम सब ईश्वर की दृष्टि में सत्य से काम लो। तुमने जितने नगरों पर अधिकार जमा लिया है या नष्ट कर दिया है, उन सबकी चाबियाँ मेरे हवाले कर दो, क्योंकि मुझे यहाँ स्वर्ग के बादशाह ईश्वर ने भेजा है। मुझे ईश्वर ने शाही घराने की सहायता के लिए भेजा है। यदि तुम मुझे वे सब चीज़ें तथा नगर लौटा दो, जो तुमने फ़ान्स से छीने हैं, तो मैं तुम्हारे साथ सन्धि करने के लिए तैयार हूँ। और तुम सैनिको, जो औलेंन का घेरा डाले पड़े हो, ईश्वर के नाम पर अपने देश को चले जाओ। यदि तुम ऐसा न करोगे, तो मैं शीघ्र ही तुम्हारे पास आकर तुम्हें क्षति पहुँचाऊँगी।

"इङ्गलैण्ड के बादशाह, अगर तुम मेरी बात न मानोगे, तो जहाँ-जहाँ मुझे तुम्हारे सैनिक मिलेंगे, वहीं-वहीं मैं उनका वध करा दूँगी। मुझे ईश्वर ने तुम सबको फ़ान्स के बाहर भगा देने के लिए भेजा है। अगर तुम सब मेरी

आज्ञा मानोगे, तो मैं तुम पर दया दिखाऊँगी। तुम यह मत सोचो कि फ़ान्स का राज्य तुम हड़प सकते हो, क्योंकि दोफ़ाँ चार्ल्स ही राज्य का सच्चा स्वत्वाधिकारी है। कुछ दिनों में ही चार्ल्स पैरिस पर अधिकार जमायेगा। यदि तुम ईश्वर के और मेरे वाक्यों पर विश्वास नहीं करते हो, तो सर्वत्र हममें और तुममें युद्ध होगा। याद रक्खो कि ईश्वर मुझे और मेरे सिपाहियों को ऐसी अपूर्व शक्ति प्रदान करेगा कि तुम लोग हमारा सामना न कर सकोगे। अन्त में ईश्वर यह दिखावेगा कि वास्तविक अधिकार किसका है।

"तुम ड्यूक ऑफ़ बैडफ़ोर्ड, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ कि तुम अपना सर्वनाश न कराओ। तुम अगर न्यायप्रिय हो तो तुम मेरे अनुगामी बनो। फ्रेञ्च लोग ईसाई धर्म के लिए ऐसा कार्य कर दिखायेंगे कि जो अभी तक किसी ने न किया होगा। यदि तुम सन्धि करना चाहो तो उत्तर देना। यदि नहीं, तो याद रखना कि शीघ्र ही तुम्हें बड़ी भारी क्षति उठानी पड़ेगी।"

यह पत्र अङ्गरेज़ों के पास रवाना करके जोन उस नगर से आगे को चल पड़ी। उसके भाई, ज़ों तथा पियर, ने भी उसकी सेना में पीछे से नाम लिखा लिया था। औलेंन के घेरे का वर्णन पाठक पिछले परिच्छेद में पढ़ चुके हैं। यहाँ पर उन थोड़ी-सी घटनाओं का विवरण देना भी उचित

होगा, जो औलेंन में उस समय घटी थीं, जब कि जोन अपनी लम्बी यात्रा कर रही थी।

इस बीच में अङ्गरेज़ों की सेना ने कई छोटे-छोटे क़िले नगर के चारों ओर बना लिये थे। परन्तु फिर भी वे सफल नहीं हो सके थे। उनकी सेना को कष्ट बहुत सहन करने पड़ते थे। सैनिकों की संख्या भी कम होती जा रही थी। बादशाह हेनरी के पास भी रुपए की कमी थी, अतः उसे अपने अफ़सरों का एक चौथाई वेतन इस युद्ध के लिए काट लेने को विवश होना पड़ा था। इतना ही नहीं, एक और ऐसी घटना घटी, जिससे अङ्गरेज़ों की शक्ति में बहुत कुछ कमी हो गई। औलेंन के कुछ प्रतिनिधि बर्गण्डी के ड्यूक के पास यह प्रार्थना लेकर गये थे कि ड्यूक औलेंन नगर को अपने अधिकार में कर ले और अङ्गरेज़ों को नगर पर अधिकार न करने दे। ड्यूक इस बात से सहमत हो गया। परन्तु रीजेण्ट ने यह बात न मानी। इतना परिश्रम करने के बाद नगर को ड्यूक ऑफ़ बर्गण्डी के हाथों में जाते हुए वह सहन नहीं कर सकता था। रीजेण्ट का उत्तर पाकर बर्गण्डी के ड्यूक ने अपने सैनिक औलेंन से वापस बुला लिये।

इधर शीनों से वे दूत भी लौट आये, जो जोन के समाचार जानने के लिए भेजे गये थे। उनके वृत्तान्तों से

और्लेन-निवासियों को बड़ी सान्त्वना मिली। अङ्गरेज़ों की सेना की दशा भी बड़ी असन्तोषप्रद थी। परन्तु उनको भी रीजेण्ट द्वारा सहायता मिलने की आशा थी। दोनों दल इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि देखें, किसकी सहायता पहले आती है।



सातवाँ परिच्छेद

जोन की पहिली विजय



तारीख़ २८ अप्रैल की सन्ध्या को जोन ने औलेंन नगर में पदार्पण किया। उसके आगमन का समाचार सुनते ही औलेंन-निवासी हर्षोल्लास से नाचने लगे। कुछ नागरिकों ने अपने सेनापतियों के साथ आकर जोन का स्वागत किया। औलेंन-निवासियों की दृष्टि में वह ईश्वर का अंश थी।

हम उस पत्र का हवाला पिछले परिच्छेद में दे चुके हैं, जिसे जोन ने अपनी यात्रा के समय अङ्गरेज़ों के पास भेजा था। अभी तक अङ्गरेज़ों ने उसका उत्तर नहीं दिया था। जोन को यह आशा थी कि चूँकि उसने वह पत्र ईश्वर और उसके दूतों की प्रेरणा से लिखवाया था, अतः अङ्गरेज़ उस पर अवश्य ध्यान देंगे और यदि वे शीघ्र ही फ़ान्स

को छोड़कर भाग न जायँगे, तो कम से कम उस पत्र का उत्तर अवश्य देंगे। परन्तु हुआ इसके विरुद्ध। अङ्गरेज़ उस पत्र को बिलकुल ही हज़म कर गये। यह देखकर जोन अङ्गरेज़ों की सेना के नायकों के पास स्वयं पहुँची। वह जो कार्य करने वाली थी, उसमें रक्तपात नहीं चाहती थी। वह ईश्वर के प्रभाव को अङ्गरेज़ों के भगाने के लिए प्रयोग में लाना चाहती थी, न कि अस्त्र-शस्त्रों को। उसका मिशन था लोगों को प्रेम, विश्वास, बलिदान आदि की शिक्षा देना, न कि उनके सामने युद्ध का प्रचार करना। परन्तु इसका कुछ प्रभाव न हुआ।

ता० २९ अप्रैल को नदी पार करके वह नगर की चहारदीवारी के भीतर पहुँची। वह एक श्वेत अश्व पर सवार थी। साथ में सेनापतियों और सैनिकों का एक पूरा जुलूस था। नगर-निवासी उसके दर्शनों के लिए उमड़ पड़े थे। जिधर होकर उसका जुलूस जाता, उधर एक भारी भीड़ एकत्रित हो जाती। बाल, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी उसके दर्शनों के इच्छुक थे। सभी इस बात के इच्छुक थे कि किसी प्रकार उसके वस्त्रों को एक बार अपने हाथों से छू सकें। जो इस कार्य में सफल नहीं हो सकते थे, वे जोन के घोड़े को छूकर ही अपने को धन्य समझते थे। उसके लिए लोगों के हृदयों में जो श्रद्धा और भक्ति थी, वह असीम थी, अकथनीय थी। इतना उत्साह लोगों के हृदयों

में अपने विजयी सेनापतियों का स्वागत करते समय भी नहीं देखा गया होगा। जुलूस सीधा गिर्जे में पहुँचा, जहाँ वह प्रार्थना करना चाहती थी। वहाँ से वह ज़ाके बूशे के घर गई, जहाँ पर उसके ठहरने का प्रबन्ध किया गया था।

ज़ाके बूशे औलेंन के ड्यूक का खज़ाञ्ची रह चुका था और नगर में वह बहुत प्रभावशाली समझा जाता था। इस घेरे के समय में उसने अन्न-वस्त्र, अस्त्र-शस्त्र तथा धन से नगर-निवासियों की बड़ी सेवा की थी। उन दिनों फ्रान्स में यह नियम था कि पुरुष-अतिथि को पुरुष के साथ एक शय्या पर सोना पड़ता था और स्त्री-अतिथि को गृह की किसी स्त्री के साथ। यह नियम शाही घराने में तथा अमीर-उमरावों में उसी प्रकार प्रचलित था, जिस प्रकार साधारण जनता में। जोन को भी यही नियम पालन करना पड़ा, अतः वह ज़ाके बूशे की नौ-वर्षीया पुत्री के साथ एक शय्या पर सोई।

दूसरे दिन औलेंन-निवासियों में अपने शासकों के प्रति विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। अब तक वे उन्हीं के कारण अङ्गरेज़ों से मुठभेड़ नहीं कर सके थे। अब तक वे उनकी आज्ञा मानते रहे, परन्तु अब वे जोन की आज्ञा मानेंगे। जोन के अतिरिक्त वे किसी को भी अपना नायक समझने के लिए तैयार न थे। वे जोन की अध्यक्षता में उसी दिन युद्ध प्रारम्भ कर देना चाहते थे। परन्तु जोन उसी दिन

युद्ध के लिए सहमत न थी। वह पहले अङ्गरज़ों के सरदार टालबोट से मिल कर सन्धि की बातें कर लेना चाहती थी।

अभी तक जोन को न तो अङ्गरेज़ों का कोई उत्तर ही मिला था और न वह दूत ही लौट कर आया था, जो उस पत्र को लेकर अङ्गरेज़ों के पास गया था। पीछे से जोन को पता चला कि इसके पीछे रहस्य था।

जिस समय जोन का दूत अङ्गरेज़ों के पास पहुँचा और वह पत्र उन्हें दिया, तो अङ्गरेज़ उसको पढ़ कर क्रोध और भय से इतने पागल हो गये कि उन्होंने दूत को लोहे की ज़ञ्जीरों से बाँध कर क़ैद कर लिया और उसके विरुद्ध जादूगरनी जोन का सहायक होने का मुक़द्मा चला कर उसे जीवित जला देने का दण्ड भी दे दिया। यह दण्ड तो उन्होंने दिया, परन्तु भय के कारण उन्होंने जलाने से पूर्व पैरिस-विश्वविद्यालय के पादरियों की सम्मति मँगा लेना ठीक समझा।

यहाँ पर यह कह देना अनुचित न होगा कि उस समय अङ्गरेज़ फ्रास के निवासियों के विरुद्ध तो टोटका-टोनका करने का अभियोग लगाते थे, परन्तु वे स्वयं इन बातों में विश्वास करते थे। दूसरों को शैतान का चेला बता कर भी वे स्वयं शैतानी कार्य करते थे। अपनी रक्षा करने के लिए तथा युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए वे जादू की बातों से भरे हुए तावीज़ पहनते थे। वे सितारों की चाल से भविष्य

की बातें जानने में विश्वास करते थे, इसीलिए अनेक ज्योतिषी समय-समय पर उनका भविष्य जानने के लिए सितारों का अन्वेषण करते रहते थे। हेनरी पञ्चम को इन बातों पर बड़ा विश्वास था। उसने सुना था कि उसकी गर्भवती रानी यदि बालक को विण्डसर के क़िले में जन्म देगी, तो राज्य का अनिष्ट होगा। इतना सुनते ही उसने ऐसा उपाय किया कि रानी की सन्तान का जन्म विण्डसर में न हो। परन्तु होनी बड़ी बलवान होती है। हेनरी इधर फ़्रान्स में था और उधर जब रानी विण्डसर में थी, तभी उसको प्रसव हो गया। इस घटना से अङ्गरेज़ बड़े शङ्कित हो गये थे। उन्होंने चारों ओर सुना था कि उनका नाश करने के लिए ईश्वर के यहाँ से एक कुमारी आयेगी। जोन के क्षेत्र में आने पर वे समझ गये कि जोन ही वह कुमारी है, जो उनका सर्वनाश करेगी। इसीलिए वे किसी न किसी प्रकार उसको तथा उसके सहायकों को नष्ट कर देना चाहते थे। यह कथा हमारी कृष्ण तथा कंस की कथा से मिलती-जुलती है। आकाशवाणी सुन कर कंस ने भी कृष्ण को नष्ट करने के अनेक उपाय किये थे। विनाश-काल में सबकी बुद्धि इसी प्रकार विपरीत हो जाती है।

इस घटना से अङ्गरेज़ों के तत्कालीन राष्ट्रीय चरित्र पर बड़ा अच्छा प्रकाश पड़ता है। यह बात आज तक

प्रसिद्ध है कि अङ्गरेज़ अपना उल्लू सीधा करने में न तो सभ्यता का विचार करते हैं, न अपनी प्रतिज्ञाओं का और न उन अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का, जिनके बल पर संसार के सारे राष्ट्र मिल कर कार्य करना चाहते हैं। आजकल की भाँति उन दिनों भी यह एक अन्तर्राष्ट्रीय नियम था कि राजकीय दूतों के व्यक्तित्व का सम्मान किया जाय। इस नियम को भङ्ग करके अङ्गरेज़ों ने अपने को सारे संसार के सामने घृण्य बना लिया। इस तुच्छ व्यवहार से उनके नाम पर ऐसी कलङ्क-कालिमा लगी थी कि जिसका आज तक धुलना कठिन हो गया है। इस घटना का वृत्तान्त पढ़ कर कोई भी न्यायप्रिय अङ्गरेज़ लज्जा से अपना शिर ऊँचा नहीं कर सकता।

तारीख़ ३० को जोन ने एक और दूत पहले दूत के समाचार लाने के लिए भेजा। उसके साथ भी अङ्गरेज़ों ने अभद्रता का व्यवहार किया और उसके द्वारा जोन को यह सन्देश भेजा कि वे दूत को जलाये बिना न रहेंगे। इस व्यवहार से जोन को बड़ा क्रोध आया और बड़ी निराशा हुई। फिर भी वह युद्ध से सन्धि को अच्छा समझती थी। अतः उसने रात्रि में शत्रुओं के एक मोरचे की ओर एक ऊँचे स्थान पर खड़ी होकर पुकार कर कहा—"ईश्वर के नाम पर आत्मसमर्पण कर दो। मैं तुम्हें तुम्हारी जीवन-रक्षा का वचन देती हूँ।"

अङ्गरेज़ों की ओर से इसका उत्तर दिया गया—"ग्वालिन, यदि हम तुझे पकड़ पाएँ तो तुझे जीवित ही अग्नि में जलना पड़ेगा।"

इस घटना से औलेंन के निवासियों में बड़ी उत्तेजना फैली। वे ज़ाके बूशे के घर के सामने एक बड़ी संख्या में एकत्रित हो गये। वे यह चाहते थे कि जोन उनको अपने साथ लेकर अङ्गरेज़ों पर धावा बोल दे। वे बहुत प्रतीक्षा कर चुके थे, बहुत अपमान सह चुके थे। वे इतने उत्तेजित थे कि उनको शान्त करना कठिन था। अन्त में जोन उनके सामने गई। उसने कुछ कहा नहीं। वह उनके सामने आई और एक ओर चलने लगी। वहाँ एकत्रित सभी व्यक्ति उसके पीछे चुपचाप हो लिये। परन्तु वह उन्हें युद्धक्षेत्र में न ले जाकर एक गिर्जे में ले गई, जहाँ सबने प्रार्थना की।

इसके कुछ दिन बाद ही, जब कि वह सेना के परिचालन के विषय में सोच रही थी, उसने सुना कि फ़्रान्स की सेना ने उसके बिना जाने ही अङ्गरेज़ों पर चढ़ाई कर दी थी और वहाँ फ़्रेञ्च लोग बुरी तरह से मारे जा रहे थे। इसके पूर्व ही उसने एक स्वप्न देखा था, जिसमें दूतों से उसे मालूम हुआ था कि फ़्रान्स पर विपत्ति आ गई है और उसे रक्षा के लिए बाहर निकलना है।

वह बाहर आई। वहाँ उसका पार्श्व-रक्षक खड़ा था। उसे देखते ही वह बोली—तुम बड़े क्रूर हो।

तुमने मुझे क्यों नहीं बताया कि हमारे सैनिकों का रक्त बहाया जा रहा है ?

फिर उसने पूछा—मेरे अस्त्र-शस्त्र कहाँ हैं ? वह अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर अपने घोड़े पर चढ़ी और हाथ में झण्डा लेकर उस ओर चल दी, जहाँ युद्ध हो रहा था। जो लोग वहाँ खड़े थे, उनसे जाके बूशे की स्त्री चिल्ला कर बोली—यहाँ क्या देख रहे हो, शीघ्र ही उसके पीछे जाओ।

जोन जब युद्धक्षेत्र में पहुँची तो उसने देखा कि ऑर्लेन के सैनिक अङ्गरेजों ने छिन्न-भिन्न कर दिए थे। कुछ इधर भाग रहे थे, कुछ उधर। जोन ने उन सबको एकत्रित किया और स्वयं उनकी नेत्री होकर वह अङ्गरेजों के विरुद्ध आगे बढ़ी। इससे पूर्व उसने युद्ध नहीं देखा था। परन्तु फिर भी वहाँ पहुँचते ही वह एक कुशल सेनानायक की भाँति लड़ने लगी। सैनिक इस प्रकार उसके पीछे लड़ने के लिए तैयार हो गए, मानों उन पर किसी ने जादू कर दिया हो। वे उसके इशारे पर सब कुछ बलिदान करने के लिए तैयार थे। इसका एक कारण यह था कि उस समय युद्ध में सेनानायक और सैनिक दोनों ही, पहले अपनी रक्षा का ख्याल करते थे, पीछे किसी और बात का। परन्तु जोन में यह बात न थी। वह अपना विचार किञ्चिन्मात्र भी नहीं करती थी। अपने जीवन को तो वह ईश्वर के ऊपर

छोड़ चुकी थी, अतः अपनी रक्षा का ख्याल उसके मन में आ ही नहीं सकता था। वह तो अपने सैनिकों का विचार कर रही थी, ऑर्लेन की रक्षा का विचार कर रही थी। स्वार्थपरता की जगह उसके हृदय में बलिदान के भाव थे। आत्म-रक्षा की जगह उसके हृदय में देश-प्रेम का विचार था। इसीलिए वह, एक सैनिक न होते हुए भी, सेना का परिचालन इतनी कुशलता से कर रही थी।

निर्भीक, निःशङ्क यह बालिका अपने सैनिकों के साथ आगे बढ़ती गई। सामने से तीरों और गोलों की वर्षा हो रही थी, फिर भी वह बढ़ती चली गई और उसके साथ ही उसके वीर सैनिक। अँगरेज़ों के मोरचे के पास पहुँचते ही वे इतनी वीरता से लड़े कि अँगरेज़ों के छक्के छूट गए। तीन घण्टे तक घमासान युद्ध हुआ। जोन के आने का समाचार सर टालबोट को मिला, जो अँगरेज़ों के दूसरे क़िले में था। वह शीघ्रता से इस ओर आने लगा, परन्तु मार्ग में उसे इस क़िले से धुआँ उठता हुआ दिखाई दिया। वह समझ गया और अपने क़िले को लौट गया। जोन ने उस क़िले पर विजय प्राप्त कर ली थी और उसके सैनिकों ने उसमें आग लगा दी थी।

इस युद्ध में अँगरेज़ सैनिकों की क्षुद्रता और जोन की विशाल हृदयता का एक छोटा परन्तु बड़ा स्पष्ट उदाहरण मिलता है। जिस क़िले पर आक्रमण हुआ था, उसी में

एक गिर्जा भी था। जब जोन ने उस क़िले को जीत लिया, तो कुछ अँगरेज़ी सैनिकों का तो बध कर दिया गया और कुछ को क़ैद कर लिया गया। कुछ ऐसे अङ्गरेज़ सैनिक भी थे, जो वीरतापूर्वक मरना नहीं जानते थे। वे गिर्जे में घुस गये और वहाँ से पादरियों के वस्त्र पहन कर निकले, ताकि उनका कोई वध न कर दे। जोन इस बात को समझ गई कि वे अङ्गरेज़ सैनिक थे, जो पादरियों का वेश धारण किए हुए थे। फिर भी वह विशाल हृदयता दिखाते हुए बोली—"पादरियों के विषय में शङ्का नहीं करनी चाहिए।" और उन्हें वह सम्मानपूर्वक अपने घर को ले गई। इस प्रकार जोन ने औलेंन नगर में अपनी पहली विजय प्राप्त की।

जिस क़िले पर जोन ने विजय प्राप्त की थी, उसकी रक्षा के लिए १५,०० अङ्गरेज़ सैनिक नियुक्त थे। जोन के साथ केवल ३०० सैनिक थे। आक्रमण में उसको विशेष क्षति भी नहीं उठानी पड़ी, क्योंकि उसके केवल ३ सैनिक काम आये थे। इस प्रकार विजय प्राप्त करके औलेंन निवासियों का हौसला बढ़ गया। उन्हें अब अङ्गरेज़ों को मार भगाने में सन्देह नहीं रहा। इससे पहले वे अङ्गरेज़ों को शक्तिशाली और युद्ध-कुशल समझते थे। इस लड़ाई से उन्हें पता चल गया कि औलेंन-निवासी अङ्गरेज़ों को चूहों की तरह जाल में फँसा कर नष्ट कर सकते थे। अङ्गरेज़ों

द्वारा बनाया हुआ वह क़िला उसी सन्ध्या को और्लेन वालों ने पूर्णतया नष्ट कर दिया। जोन एक शुष्क सेनानायक नहीं थी, बल्कि एक धर्म-रक्षिका थी। अतः उसके प्रत्येक कार्य में धर्म और पवित्रता का प्राधान्य रहता था। लड़ाई के दूसरे दिन उसने सब सैनिकों को आज्ञा दी कि वे गिर्जे में जाकर प्रार्थना करें। यही नहीं, वह अपने सैनिकों के चरित्र पर भी बड़ा ध्यान दिया करती थी। वह सैनिकों को कोई ऐसा कार्य करने के लिए मना कर चुकी थी, जो उनके चरित्र पर धब्बा लगावे। उसने सबसे प्रतिज्ञा ले ली थी कि वे दुश्चरित्र स्त्रियों से बचे रहेंगे और ईश्वर तथा देवताओं का नाम लेकर शपथ न लेंगे। प्रतिज्ञा लेकर ही वह चुप न रही। वह यह देखती रहती थी कि कोई उस प्रतिज्ञा को भङ्ग तो नहीं करता। इस बात में उसके सामने साधारण सैनिक तथा बड़े-बड़े सेनापति सब एक समान थे। सबको उसकी आज्ञा के सामने शिर झुकाना पड़ता था। एक बार एक सेनापति एक सड़क पर खड़ा ईश्वर का नाम लेकर गालियाँ दे रहा था। जोन ने उसको बुला कर क्रोध-भरी वाणी से कहा—"तुम्हारा इतना साहस कि व्यर्थ ही तुम ईश्वर का नाम लेकर गालियाँ दे रहे हो ? मैं यहाँ से तब हटूँगी, जब तुम अपने शब्दों को वापस ले लोगे।" सेनापति ने चुपचाप अपने शब्द वापस ले लिए और उनके लिए दुःख प्रगट किया।

दूसरा दिन ईसाइयों का एक धार्मिक त्यौहार था, अतः जोन ने एक बार फिर अँगरेज़ों से शान्ति-स्थापन की प्रर्थाना करने का निश्चय किया। उसने निम्न-लिखित पत्र लिखवाया:—

"इङ्गलैण्ड के निवासियो, तुम्हें फ्रान्स में रहने का कोई अधिकार नहीं है, अतः परमात्मा मेरे द्वारा तुम्हें अपने देश को लौट जाने का आदेश देता है। यदि तुम ऐसा न करोगे, तो मैं ऐसा आन्दोलन करूँगी, जो संसार को सदा याद रहेगा। यह तुम्हारे लिए मेरा तीसरा और अन्तिम पत्र है। अब मैं तुम्हें कोई पत्र नहीं लिखूँगी।

"मैं इस पत्र को तुम्हारे पास एक दूत के द्वारा भेजती, परन्तु तुम मेरे दूतों को रोक लेते हो। अगर तुम मेरे दूतों को मुक्त कर दो, तो मैं तुम्हारे कुछ सैनिकों को मुक्त कर दूँगी।

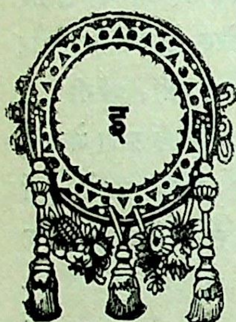
जीसस, मारिया, जोन।"

यह पत्र लिखवा कर जोन ने एक तीरन्दाज़ द्वारा उसे अँगरेज़ों की ओर फिकवा दिया और उनको चिल्ला कर कहा—"देखो, यह तुम्हारे लिए एक सन्देशा है।" परन्तु अँगरेज़ों को फिर भी चेत न हुआ।

तब औलेंन-निवासियों ने अँगरेज़ों की सेना पर दूसरा आक्रमण करने का निश्चय किया।

आठवाँ परिच्छेद

औलेंन की मुक्ति



इस बार औलेंन-निवासियों ने युद्ध की तैयारी बड़े ज़ोर-शोर से की। इसके लिए उन्होंने एक बड़ा अच्छा उपाय सोचा। अङ्गरेज़ों की सेना दो-तीन भागों में पड़ी हुई थी। यदि औलेंन वाले एक भाग पर आक्रमण करते, तो दूसरे भाग वाले भी उनकी सहायता के लिए आ पहुँचते। यह बचाने के लिए उन्होंने दोनों ओर के भागों पर आक्रमण करने का निश्चय किया। इनमें से एक भाग पर तो साधारण नागरिक झूठा आक्रमण करने वाले थे, और दूसरे भाग पर सैनिक सच्चा आक्रमण करने वाले थे।

ता० ६ मई को प्रातःकाल औलेंन के नागरिक जोन के मकान के सामने एकत्रित होने लगे। उनमें उस समय

अदम्य उत्साह भरा था। वे सैनिकों के साथ ही, अपने प्यारे नगर की स्वतन्त्रता के लिए, लड़ना चाहते थे। वे विजय का सेहरा सैनिकों के सिर पर ही देखना नहीं चाहते थे। अतः वे दरवाज़ों के सामने अड़ गये। उधर सेनापति उनको सैनिकों के साथ ले जाना नहीं चाहते थे। जोन ने यह सब देखा। वह जनता के उत्साह को दमन नहीं करना चाहती थी। वह सेनापति के पास गई और बोली—"तुम उन्हें रोक कर अच्छा नहीं कर रहे हो। उन्हें साथ में आने दो। जिस प्रकार वे पहले लड़े थे, उसी प्रकार आज भी लड़ेंगे।" जोन की बातों से नागरिकों का उत्साह और भी बढ़ गया। अन्त में सेनापति को उन्हें साथ में लेना पड़ा।

सेना का जो भाग अङ्गरेज़ों के ऊपर आक्रमण करने के लिए भेजा गया था, वह पहले तो ख़ूब मैदान लेता रहा, परन्तु अन्त में अङ्गरेज़ों का बल बढ़ गया। चारों ओर से सुरङ्गों में से अङ्गरेज़ों की सेना निकल आई और औलेंन की सेना को पीछे हटना पड़ा। इतने ही में जोन उधर पहुँच गई। उसकी उपस्थिति ने सैनिकों में नई जान फूँक दी। वे दूने उत्साह से अङ्गरेज़ों पर टूट पड़े। फिर विजयश्री औलेंन वालों की रही। अङ्गरेज़ों का बनाया दूसरा गढ़ भी ले लिया गया। अङ्गरेज़ी सैनिकों का बध कर दिया गया और उस गढ़ में आग लगा दी गई। परन्तु अभी तक

'ले-तूरेल' का मुख्य गढ़ जीतना शेष था। वही ऑर्लेन की चाबी थी। जोन ने दूसरे दिन उस पर आक्रमण करने का निश्चय किया।

उसी रात्रि को सेनापतियों ने यह निश्चय किया कि दूसरे दिन आक्रमण न किया जाय। उन्हें यह मालूम हो गया था कि यदि ऑर्लेन वाले ले-तूरेल की ओर बढ़ेंगे, तो अङ्गरेजों की दूसरी टुकड़ी नगर को सूना पाकर उस पर आक्रमण कर देगी। परन्तु जब यह समाचार जोन को बताया गया, तो वह बहुत बिगड़ी। उसने सेनापतियों से कहा— "तुमने आपस में सलाह की है, मैंने फ़रिश्तों से सलाह की है। तुम्हारी सलाह की मैं परवाह नहीं करती। देवताओं का निश्चय ही अन्तिम निश्चय होगा। कल मैं बहुत कुछ करूँगी। कल मेरे शरीर से रक्त बहेगा।"

प्रातःकाल वह बहुत तड़के उठी। प्रार्थना करने के बाद वह अपने घोड़े पर चढ़ी। उस समय वह दुर्गा के समान रक्त की प्यासी दिखाई देती थी। उसके मुख पर अपूर्व तेज था, अद्भुत ज्योति थी। वह चारों ओर खड़े हुए व्यक्तियों को सम्बोधन कर चिल्लाई—"जिसके हृदय में मेरे लिए तनिक भी स्नेह है, वह मेरे पीछे आवे।" उसके इशारे पर सभी उसके साथ हो लिये। चूँकि ले-तूरेल अङ्गरेज़ों के हाथ में था, अतः अब तक ऑर्लेन वाले पुल के द्वारा नदी को पार नहीं कर सकते थे, नावों से ही उन्हें सारा काम

लेना पड़ता था। जब जोन चलने लगी, तो उसने कहा—"सन्ध्या को हम पुल के मार्ग से लौटेंगे।" इन शब्दों का सैनिकों और नागरिकों पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

ऑर्लेन वालों की सेना तो बहुत बड़ी थी, परन्तु उसमें सैनिकों की संख्या अधिक नहीं थी। अधिक संख्या उनकी थी, जिन्होंने कभी युद्ध देखा भी नहीं था। उनमें से बहुतेरे तो देश-प्रेम की भावना से ही वहाँ आये थे। कुछ ऐसे भी थे, जो केवल तमाशा देखने के विचार से ही वहाँ पर आये हुए थे। एक और कमी इनमें यह थी कि कुशल सेनानायकों का इनके पास बिलकुल अभाव ही था। सरदार बहुत थे, परन्तु सेना को अपने वश में रखने की शक्ति उनमें से बहुत कम में थी। इसीलिए पहले आक्रमण में लोग कुछ आगे जाकर बार-बार हटने लगे। जोन ने जब यह देखा, तो वह उनमें उत्साह भरने के लिए बोली—"उत्साहपूर्वक आगे जाकर लड़ो। पीठ पीछे न दिखाओ। क़िले पर शीघ्र ही तुम्हारा अधिकार होगा।"

सन्ध्या के समय जोन स्वयं सबसे आगे चली और एक निसेनी लगा कर क़िले की दीवाल पर चढ़ने का प्रयत्न करने लगी। अङ्गरेजों को यह अवसर उससे बदला लेने के लिए उपयुक्त जँचा। उनको विश्वास था कि एक जादूगरनी के शरीर से रक्त निकल जाने पर उसकी शैतानी शक्ति लुप्त हो जाती है। उन्होंने एक तीर जोन को निशाना

बना कर मारा। वह तीर जोन के कन्धे में लगभग छः इञ्च घुस गया। सैनिक उसी समय उसे एक ओर ले गये।

उन दिनों घाव को अच्छा करने और रक्त को बन्द करने के लिए जन्तर-मन्तर से बहुत काम लिया जाता था। कोई मन्त्र पढ़ कर पानी छिड़कने से रोग को दूर भगाने का दम भरते थे, कोई एक प्रकार के काग़ज़ पर कुछ लिख कर घाव के ऊपर रखने से उसे अच्छा करने की क्षमता रखते थे। परन्तु यह सब मानते थे कि इस प्रकार का जन्तर-मन्तर शैतान की सहायता से किया जाता था, न कि देवताओं की सहायता से। जोन शैतान से सहायता लेने को पाप समझती थी। अतः वह बोली—"मैं मृत्यु को स्वीकार करूँगी, परन्तु कोई पाप या ईश्वरी आज्ञा के विरुद्ध कार्य नहीं करूँगी।" इतने ही में उसे स्वर्ग के देवी-देवता दिखाई दिये। उसे उनके दर्शन से बड़ी शान्ति मिली और फिर उठ कर वह मोरचा लेने के लिए शत्रु के सामने डट गई।

सूर्य छिप गया था। दोनों ओर के सैनिक थक गये थे। सेनापतियों ने सेना को नगर में वापस ले जाने का निश्चय किया, परन्तु जोन को यह बात पसन्द न थी। वह उसी दिन क़िले पर विजय प्राप्त करना चाहती थी। वह जानती थी कि अङ्गरेज़ों की शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही थी। वह उन्हें आराम करने के लिए अवसर देने को बहुत

घातक समझती थी, अतः उसने सैनिकों से कहा—"तुम कुछ देर विश्राम कर लो और कुछ खा-पी लो। इसके बाद हम आक्रमण करके क़िले को ले लेंगे।"

इतना कह कर वह तो प्रार्थना में लग गई। उधर एक सेनापति आगे बढ़ा। उसके झण्डे के लिए सैनिकों के हृदय में उतनी ही श्रद्धा थी, जितनी उसके लिए। अतः झण्डे के पीछे बहुत से सैनिक हो लिये।

जोन ने पीछे से यह देखा कि उसका झण्डा लिये सैनिक आगे बढ़ रहे थे। उसने पास खड़े हुए व्यक्तियों से कहा—देखो, मुझे बताना, जब मेरा झण्डा क़िले की दीवाल को छू ले।

थोड़ी देर बाद एक सरदार ने उसको सूचना दी।

"जोन, झण्डा दीवाल से छू गया है।"

"तो बस, क़िला हमारा है, चलो!"

वह आगे हो ली और सभी व्यक्ति उसके पीछे हो लिये। वे क़िले की दीवाल की ओर इस उत्साह से बढ़ रहे थे, मानों क़िला पहले से ही विजय कर लिया गया था। उसे आगे बढ़ता देख अङ्गरेज़ों की सेना में आतङ्क छा गया। वे आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगे। वे समझ रहे थे कि तीर लगने से उसकी शक्ति नष्ट हो चुकी होगी। परन्तु उसे बड़े वेग से अपनी ओर आते देख वे भय से पीले पड़ गये। जोन ने फिर एक बार

निम्न-लिखित शब्दों में अङ्गरेज़ी सेना के सेनापति को चेतावनी दी :—

"सेनापति, स्वर्ग के बादशाह को आत्म-समर्पण कर दो। तुमने मुझे गालियाँ दी हैं, फिर भी मुझे तुम्हारी आत्मा पर और तुम्हारे सैनिकों की आत्माओं पर दया आती है।"

परन्तु तो भी अङ्गरेज़ों ने ध्यान नहीं दिया। इस पर वे चारों ओर से घेर लिये गये। औलेंन वालों ने उन पर तीन ओर से आक्रमण किया, क़िले के दो ओर से तथा क़िले के पुल के नीचे से। पुल के नीचे उन्होंने तेल, हड्डियाँ, गन्धक, पुराने जूते, पुराने वस्त्र आदि अनेक जलने वाली चीज़ें डाल कर आग लगा दी। जो अङ्गरेज़ भाग कर पुल पर पहुँच गये थे, वे पुल के जल कर टूटने के कारण, नदी में गिर कर समाप्त हो गये। उनमें उस क़िले की सेना के सेनापति भी थे। जो पुल पर से बचे, वे या तो मार डाले गये या क़ैद कर लिये गये। इस प्रकार औलेंन-निवासियों ने अङ्गरेज़ों के सबसे प्रमुख क़िले को एक दिन में अपना बना लिया। उस दिन औलेंन की सेना के १०० सैनिक खेत रहे। इस विषय में एक बात ध्यान देने योग्य है और वह यह कि अङ्गरेज़ों की सेना का वह भाग, जो सर टालबोट के अधिनायकत्व में औलेंन के दूसरे किनारे को घेरे पड़ा था, इस भाग के सैनिकों की सहायता के लिए हिला तक नहीं। सर टालबोट को यह डर था कि

उसकी शक्ति कम हो जाने पर कहीं उधर भी ऑर्लेन वाले धावा न कर दें।

टूटा हुआ पुल तीन घण्टे में ठीक कर लिया गया और अपनी प्रातःकाल की प्रतिज्ञा के अनुसार जोन ने पुल पर होकर नगर में प्रवेश किया। उस रात्रि को ऑर्लेन निवासियों के उत्साह तथा हर्ष का वारापार नहीं था। गिर्जों में पादरी लोग प्रार्थना कर रहे थे, तथा वहाँ के सारे घण्टे बजाये जा रहे थे। नगरनिवासी चारों ओर विजय के गीत गा रहे थे।

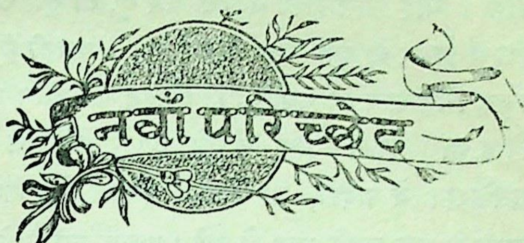
दूसरा दिन रविवार था। ऑर्लेन-निवासियों को समाचार मिला कि अङ्गरेज़ों की रही-सही सेना खाई के पास युद्ध करने के लिए तैयार खड़ी थी। वे भी लड़ने के लिए अपनी तैयारियाँ करने लगे। एक सैनिक ने जोन से पूछा—क्या रविवार के दिन युद्ध करना अनुचित है ?

जोन ने उत्तर दिया—आज युद्ध ठीक नहीं। तुम स्वयं अङ्गरेज़ों पर आक्रमण न करो। परन्तु यदि वे तुम पर आक्रमण करें, तो अपनी रक्षा वीरता के साथ करो। भय करने की आवश्यकता नहीं है। वे सरलता से पराजित कर दिये जायँगे।

इतने ही में जोन ने सुना कि अङ्गरेज़ भागे जा रहे हैं। जोन ने एक सैनिक से कहा—जाओ, देखो कि अङ्गरेज़ों के मुख हमारी ओर हैं या पीठ।

उस सैनिक ने कुछ देर में समाचार दिया कि अङ्गरेज़ वास्तव में, औलेंन छोड़ कर भाग रहे हैं। जोन के सैनिक कुछ देर तक उन्हें भगा कर लौट आये। उनके बनाये हुए सारे किले तोड़ दिए गये। सारा नगर हर्ष और जय-जयकार के नाद से गूँजने लगा। औलेंन वालों के इतिहास में यह दिन स्वर्ण से लिखने योग्य था। चारों ओर जुलूस निकलने लगे। गिर्जे प्रार्थना के लिए आये हुए व्यक्तियों से खचा-खच भर गये। इस प्रकार ता० ८ मई को अङ्गरेज़ों का वह २०९ दिन का घेरा जोन ने ९ दिन के परिश्रम और युद्ध के बाद तोड़ दिया। फ़्रान्स वालों को उसने अपनी शक्ति का पहला चिन्ह दे दिया था।





औलेंन के बाद



इस विजय का सेहरा औलेंन वालों ने जोन के सिर बाँधा। यही नहीं, उन्होंने जोन से कहा कि उनके शरीर, धन-धान्य आदि सब उसके अर्पण थे और वह उन्हें किसी काम के लिए भी आज्ञा दे सकती थी। जोन ने उन्हें धन्यवाद दिया। वह औलेंन की विपत्ति दूर करने आई थी, अब उस विपत्ति को दूर करके उसका ध्यान दूसरे कार्यों की ओर लगा। इधर चार्ल्स ने भी उसको बधाई देते हुए अपने पास आने का समाचार भेजा था। इसीलिए जोन औलेंन से बिदा लेकर तूर की ओर चली, जहाँ दोफ़ाँ चार्ल्स उसके लिए प्रतीक्षा कर रहा था।

जोन दोंफ़ाँ के पास पहुँची। अब तक दोफ़ाँ और उसके सारे दरबारियों का जोन के विषय में जो कुछ भ्रम

था, वह दूर हो गया था। उसने कहा था—"ऑर्लेन मेरा चिह्न होगा। यदि ऑर्लेन को मैं मुक्त कर दूँ, तो तुम समझना कि मैं ईश्वर के दूतों की प्रेरणा से काम करती हूँ।" उसका वह चिह्न सत्य हो गया था। ऑर्लेन को उसने मुक्त कर दिया था। दोफ़ाँ चार्ल्स ने बड़े आदर से जोन का स्वागत किया। वे पादरी, जो जोन के विरुद्ध थे, ऑर्लेन की विजय के बाद उसके भक्त हो गये। एक पादरी ने दोफ़ाँ चार्ल्स को लिखा था—"जब ईश्वरीय शक्ति एक अद्भुत रूप में कार्य करती हुई पाई जाती है, तो मनुष्य को तर्क करना छोड़ देना चाहिए। इसीलिए जोन से प्रत्येक कार्य में सलाह लेनी चाहिए और उसके अनुसार कार्य करना चाहिए।

"मैं बादशाह (चार्ल्स) को यही सम्मति दूँगा कि सदा उसे ईश्वर की आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए और कोई कार्य करने से पूर्व जोन से परामर्श अवश्य कर लेना चाहिए। जब जोन उसे कोई सलाह दे, तो बादशाह को पवित्रता और श्रद्धा से उसके अनुसार कार्य करना चाहिए। इस प्रकार ही ईश्वर सदा बादशाह के साथ रहेगा और दया करता रहेगा।"

जोन कई दिन चार्ल्स के साथ तूर में रही। उन दिनों में चार्ल्स की कौन्सिल यह विचार करने लगी कि आगे क्या करना चाहिए। कुछ सरदारों का विचार था कि नौर्मण्डी प्रान्त से अङ्गरेजों को मार भगाया जाय, क्योंकि

उसी प्रान्त में अङ्गरेज़ों का पूर्ण अधिकार था और उसे जीत लेने पर अङ्गरेज़ स्वयं ही फ़ान्स छोड़ कर भाग जाते। अन्य सरदार इस काम को सरल नहीं समझते थे। इसीलिए वे ऑर्लेन के प्रान्त में जहाँ-जहाँ अङ्गरेज़ों ने क़िले बना रक्खे थे, उनको जीतने के पक्ष में थे। जोन सबसे पहले चार्ल्स को रेम नगर ले जाकर उसका अभिषेक करने के पक्ष में थी और इसे वह शीघ्र ही करना चाहती थी। कई बार वह चार्ल्स से कह चुकी थी—"मैं केवल एक वर्ष जीवित रहूँगी। उस समय में जितना काम हो जाय, उतना ही अच्छा है। मेरे मिशन में चार बातें हैं—(१) ऑर्लेन की मुक्ति (२) तुम्हारा अभिषेक (३) फ़ान्स से अङ्गरेज़ों को भगाना (४) ऑर्लेन के ड्यूक को इङ्गलैण्ड से छुड़ा कर लाना। मैं पहला कार्य तो कर चुकी हूँ, अब तीन कार्य बाक़ी हैं। इन्हें शीघ्र समाप्त करना चाहिए।"

इसके कुछ दिनों बाद फिर वह दोफ़ाँ के पास पहुँची। उस समय दारकू नाम का एक प्रमुख सरदार भी दोफ़ाँ के पास था। जोन बोली—ओ दोफ़ाँ, इस प्रकार बार-बार लोगों से परामर्श न करो। पहले सीधे रेम चल कर अपना अभिषेक करा लो।

दारकू को इन शब्दों से कुछ आश्चर्य हुआ। उसने जोन से पूछा—क्या इस प्रकार बोलने के लिए तुम्हें देवताओं की आज्ञा है?

"हाँ।"—जोन ने उत्तर दिया।

"क्या तुम बादशाह की उपस्थिति में हमें यह न बताओगी कि किस प्रकार तुम्हारे देवता तुमसे वार्तालाप करते हैं?"

"मैं जानती हूँ, तुम क्या मालूम करना चाहते हो। मैं तुम्हें प्रसन्नता से वह बताऊँगी। जब मुझे यह देख कर दुःख होता है कि लोग मेरी बातों में विश्वास नहीं करते, तो मैं परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ। प्रार्थना की समाप्ति पर मुझे कोई यह कहता हुआ प्रतीत होता है—देव-पुत्री, जाओ, मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।"

यह कहते-कहते उसके नेत्र आकाश की ओर लग गये। उसके मुख पर एक अपूर्व ज्योति झलकने लगी। दारकू को इस घटना से जोन पर विश्वास हो गया।

अब तक ऑर्लेन-विजय के समाचार सारे फ्रान्स में फैल गये थे और साथ ही साथ फैल गई थी जोन की विमल कीर्ति। जनता में तो जोन का नाम एक देवी के नाम की भाँति लिया जाता था। जब वह गलियों में होकर निकलती, लोग उसके घोड़े के सामने भक्ति-वश लेट जाते; जोन के हाथ और पैरों को चूमते। पादरी तक उसकी मूर्ति के मैडल बनवा कर पहनने लगे। उसकी मूर्तियाँ या चित्र गिर्जों में रक्खे जाने लगे। गिर्जों की प्रार्थना में उसका नाम लिया जाने लगा। राज्य के अफ़सर राज्य-कार्य की कठिनाइयों पर

जोन का परामर्श लेने लगे। बड़े-बड़े व्यक्तियों की यह इच्छा होने लगी कि जोन के हाथ से स्पर्श हुई कोई वस्तु वे किसी प्रकार प्राप्त करके अपने पास रख सकें।

इस बीच में जोन का रहन-सहन भी साधुओं का सा था। वह एकान्त में अपना अधिकांश समय व्यतीत करती। इस समय में वह प्रार्थना में ही निरत रहती। कभी-कभी तो प्रार्थना करते-करते वह रोने लगती। बहुत कम और साधारण भोजन करती। शराब पीने का वहाँ उन दिनों नियम था। परन्तु जोन पानी मिली हुई शराब और वह भी कभी-कभी पीती।

इस प्रकार कुछ दिन व्यतीत हुए। औलेंन की विजय के बाद औलेंन-निवासियों तथा चार्ल्स की सेना को औलेंन के निकटवर्ती उन नगरों को जीतने की चिन्ता थी, जो कुछ दिनों पूर्व अङ्गरेज़ों को आत्म-समर्पण कर चुके थे। इनमें से एक ज़ारगो नामक नगर औलेंन के निकट ही था। औलेंन वालों ने उस पर आक्रमण करने का निश्चय किया और जोन को अपनी नेत्री चुना। जोन चार्ल्स के पास से फिर औलेंन पहुँची। बड़ी तैयारियों के बाद सेना ने ज़ारगो की ओर प्रस्थान किया।

उधर ज़ारगो के क़िले में स्थित अङ्गरेज़ भी युद्ध की तैयारी में लगे थे, क्योंकि उन्हें फ्रेञ्च सेना के आक्रमण का समाचार मिल चुका था। परन्तु जोन की तैयारी के सामने

उनकी तैयारी कुछ भी नहीं थी। जोन की सेना ने शीघ्र ही नगर को घेर लिया। परन्तु जोन के हृदय में अङ्गरेज़ों के लिए अब भी दया बाक़ी थी। अतः उसने औलेंन की भाँति यहाँ भी अङ्गरेज़ों के पास यह चेतावनी भेज दी कि यदि वे आत्मसमर्पण न करेंगे, तो उनका क़िला तोपों से उड़ा दिया जायगा। अङ्गरेज़ों के अभिमानी हृदयों ने फिर भी इस चेतावनी पर ध्यान न दिया और जोन के पास उनका किसी प्रकार का भी उत्तर नहीं आया। अन्त में जोन को गोलाबारी की आज्ञा देनी पड़ी। तोपें दग़ने लगीं। अङ्गरेज़ों को काफ़ी क्षति उठानी पड़ी।

इस क्षति को उठा कर अङ्गरेज़ों की आँखें खुलीं। अब उन्हें जोन की चेतावनी का ध्यान आया। उनके सेनापति लॉर्ड सफ़ोक ने औलेंन के ड्यूक के भाई के पास आकर कहा—"हम १५ दिन का समय चाहते हैं। इस बीच में तुम यदि हम पर आक्रमण न करोगे, तो हम आत्म-समर्पण करके यहाँ से बोरिया-बँधना बाँध कर चले जायँगे।"

ड्यूक के भाई को सफ़ोक की बातें जँच गईं, परन्तु जोन को उन पर विश्वास न हुआ। वह जानती थी कि नौर्मण्डी से एक सेना जारगो की सहायता के लिए आ रही थी, इसीलिए अङ्गरेज़ों ने १५ दिन का समय माँगा था। अतः उसने अपना झण्डा वायु में उड़ा कर तथा अस्त्र-शस्त्र

से सुसज्जित होकर सैनिकों को आक्रमण करने की आज्ञा दे दी। कुछ सरदारों ने जोन के इस कार्य को आतुरता कह कर ठीक नहीं बताया। उनसे जोन बोली—डरो मत, ईश्वर द्वारा निश्चित समय ही ठीक समय है। जब उसकी आज्ञा है, तो तुम्हें आक्रमण कर देना चाहिए। आगे बढ़ो, वह तुम्हारी सहायता करेगा।

आक्रमण शुरू हो गया। जोन के सैनिक दीवारों की ओर खाइयों में होकर बढ़ने लगे। जब वे दीवारों के बिलकुल निकट पहुँच गये, तो लॉर्ड सफ़ोक ने चिल्ला कर जोन के एक सेनापति से वार्तालाप करने की इच्छा प्रगट की, परन्तु उसकी प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया गया और आक्रमण जारी रहा। चार घण्टे ही में जोन अपना झण्डा लिये दीवार के ऊपर पहुँच गई। उसी समय उसकी टोपी में एक गोला लगा। लोगों ने समझा, वह आहत हो गई। परन्तु वह आहत नहीं हुई थी। वह ऊपर खड़ी होकर चिल्लाने लगी—प्रसन्न हो जाओ। अङ्गरेजों का अन्त आ गया है। वे हमारे हाथ में हैं।

इतने ही में दीवार फोड़ कर जोन के सैनिक नगर के भीतर घुस गये। अङ्गरेज़ वहाँ से भागे, परन्तु घेर लिये गये। एक साधारण सैनिक ने सफ़ोक को गिरफ़्तार कर लिया। सफ़ोक एक साधारण सैनिक को आत्म-समर्पण करते हुए लज्जित हुआ। अतः उसने सैनिक से पूछा :—

"तुम साधारण सिपाही हो ?"

"जी हाँ।"

"नाइट (सरदार) नहीं हो ?"

"नहीं।"

"जाओ, मैंने तुम्हें नाइट बनाया।"

इस प्रकार सफ़ोक ने आत्म-समर्पण किया। सफ़ोक का एक भाई पकड़ा गया, दूसरे की वहीं पर मृत्यु हो गई। या तो उसका बध कर दिया गया, या वह नदी में डूब कर मर गया। इस युद्ध में पाँच सौ अङ्गरेज़ काम आये। फ़्रेञ्च केवल २० ही नष्ट हुए। इसी रात्रि को जोन सरदारों के साथ औलेंन लौट आई।

औलेंन आने पर अब जोन को उस प्रान्त के दो अन्य नगरों पर अधिकार करने की सूझी; क्योंकि उनके विजय कर लेने पर उस प्रान्त पर से अङ्गरेज़ों का अधिकार बिलकुल ही उठ जाता। ये दो नगर थे म्यों तथा बोज़ोंसी। जोन के लिए यह कोई कठिन काम नहीं था, जब कि वह औलेंन और ज़ारगो को विजय कर चुकी थी। वह अपने सैनिकों के साथ चल दी और थोड़ी लड़ाई के बाद ही दोनों नगरों से अङ्गरेज़ों को निकाल बाहर किया। परन्तु अभी पूरी समस्या हल नहीं हुई थी।

ज़ारगो में अङ्गरेज़ों की जिस सेना के आने की ख़बर थी, उसके नायक सर फ़ास्टौफ़ ने जब सुना कि ज़ारगो की

अङ्गरेज़ी सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया था, तो वह अपनी सेना के साथ बोज़ोंसी की ओर चल पड़ा। उसके साथ ऑर्लेन से भागा हुआ सर टालबोट भी हो लिया। जोन ने इस सेना के आगमन की बात सुनी। परन्तु इससे उसको बिलकुल भय या दुःख न हुआ। उसने अपनी उसी वीरता से कहा—वीरतापूर्वक सामना करना, अङ्गरेज़ अवश्य भाग जायँगे।

यह सुन कर जोन के सारे सैनिक युद्ध के लिए तैयार हो गये। परन्तु चूँकि सन्ध्या हो चुकी थी, अतः जोन ने अङ्गरेज़ों से यह कहलवा भेजा कि, "अब रात काफ़ी हो गई है, अतः तुम लोग आराम से सोओ। कल, ईश्वर ने चाहा तो, हम मिलेंगे।" दूसरे दिन प्रातःकाल फ़्रेञ्च सैनिक अङ्गरेज़ों से युद्ध करने के लिए गये, परन्तु उनके आश्चर्य का कोई ठिकाना था? अङ्गरेज़ वहाँ से ग़ायब हो गये थे। रात ही रात वे वहाँ से भाग चुके थे। फ़्रेञ्च सैनिक तत्काल ही उनकी खोज में चारों ओर भेजे गये। इन सैनिकों के साथ ही जोन भी थी। चूँकि सैनिकों को दौड़-धूप करके अङ्गरेज़ों का पता लगाना था, अतः जोन को इस बार उन्होंने आगे नहीं चलने दिया था। पाते नगर के पास पहुँच कर फ़्रेञ्च जासूसों ने समाचार दिया कि अङ्गरेज़ वहाँ डेरा डाले हुए हैं। सारी फ़्रेञ्च सेना उन पर एक साथ टूट पड़ी। उन्हें सँभलने का अवसर तो मिल चुका

था, परन्तु आक्रमण के समय वे इतने घबरा गये कि उनसे फ्रेञ्च सैनिकों पर एक वार तक न हो सका। वे भागे और भूने गये। वे खड़े हुए और भूने गये। इस प्रकार पाते नगर के पास का मैदान उस दिन एक वीभत्समयी बधशाला बन गया। सहस्रों अङ्गरेज़ों का रक्त वहाँ बह गया। लगभग १५०० अङ्गरेज़ सैनिक क़ैद किये गये, जिनमें सर टालबोट भी था। सर टालबोट से पूछा गया—"आज प्रातःकाल तुम्हें यह कल्पना भी न होगी कि तुम्हारा यह हाल होगा?"

"यह अवसर की माया है।"—टालबोट ने उत्तर दिया।

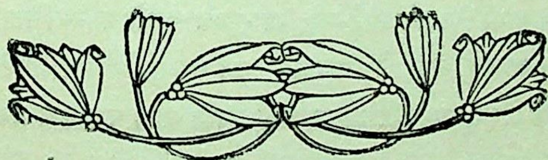
अङ्गरेज़ों की सेना का इतना नाश हुआ, परन्तु फ्रेञ्च सेना के २-३ व्यक्ति ही काम आये। कुछ अङ्गरेज़ बच कर अपने नगर जानविल को गये, परन्तु नगर-निवासियों ने अपने फाटक बन्द कर लिये और यह घोषणा कर दी कि हम चार्ल्स के पक्ष में मिल गये हैं। आस-पास के कुछ छोटे क़िले अङ्गरेज़ों के अधिकार में थे। वहाँ के नायक उन क़िलों में आग लगा कर भाग गये।

इस प्रकार विजय पर विजय प्राप्त करने के बाद जोन और्लेन को वापस चली गई और फिर चार्ल्स के पास गई।

"मुझे दया आती है कि तुम्हें इतने कष्ट सहने पड़ते हैं।"—चार्ल्स ने कहा।

"मेरी चिन्ता न कीजिए। शीघ्र ही आपके अधिकार में सारा राज्य आ जायगा।"—जोन ने उत्तर दिया।

इन सब युद्धों तथा विजयों के बाद जोन का नाम फ्रान्स में ही नहीं, बल्कि सारे ईसाई राष्ट्रों में हो गया था। जर्मनी, इटली आदि देशों में जोन के अनेक भक्त बन गये। अनेक ने उसके विषय में लेख लिखे। अनेक ने उसके चित्र बनाये। इस प्रकार विजय और यश पाकर जोन का ध्यान अपने दोफ़ाँ चार्ल्स के अभिषेक की ओर गया। परन्तु उस समय चार्ल्स के दरबारियों में आगामी कार्यक्रम के विषय में मतभेद था। कुछ तो चाहते थे, पहले पैरिस पर विजय प्राप्त करना, फिर रेम को जाना। कुछ जोन की भाँति चाहते थे कि पहले रेम जाकर अभिषेक हो जाय, फिर किसी अन्य स्थान पर युद्ध छेड़ा जाय। दूसरा कार्यक्रम इतना लाभदायक नहीं था, क्योंकि जब तक रेम पहुँच कर राज्याभिषेक होता, तब तक अङ्गरेज़ अपने को सुव्यवस्थित कर लेते और इस प्रकार एक स्वर्णावसर खो जाता—जो पीछे खो ही गया। परन्तु निश्चय रेम जाने का ही रहा।





रेम की ओर



म पहुँचने के लिए शत्रुओं के बीच में होकर २५० मील जाना आवश्यक था। मार्ग के सारे नगरों पर या तो अङ्गरेज़ों का आधिपत्य था, या बर्गण्डी वालों का। परन्तु उन नगरों के निवासी इनसे सन्तुष्ट न थे। उन्होंने जोन की सेना की विजय के समाचार सुने थे, अतः उनके हृदय चुपचाप चार्ल्स के साथ हो गये थे। कई नगरों के निवासियों ने चार्ल्स के पास समाचार भेजे थे कि वे अपने नगरों के फाटक चार्ल्स के लिए प्रसन्नता से खोलने के लिए तैयार हैं।

ज़िओं नगर में चार्ल्स के सहायकों की सेना एकत्रित होने लगी। उसमें छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष सभी सम्मिलित हुए थे। जोन ने यहाँ से एक पत्र उन नगरों के निवासियों के नाम भेजा, जहाँ से होकर उन्हें जाना था। पत्र इस प्रकार था:—

"फ्रान्स के राजभक्त नागरिको, तुम्हें मैं यह सूचना देती हूँ कि आठ दिन में ही ल्वाइर के किनारे के नगरों से हमारी सेना ने अङ्गरेज़ों को भगा दिया है। हमने लॉर्ड सफ़ोक, सर टालबोट, उसके भाई यूल, सर फ़ास्टौफ़ आदि को बन्दी बना लिया है और लॉड सफ़ोक के एक भाई तथा कई अन्य सरदारों का वध कर दिया है। मैं तुम सबसे राजभक्त रहने की प्रार्थना करती हूँ और तुम्हें बादशाह के राज्याभिषेक के लिए निमन्त्रण देती हूँ। तुम्हें ईश्वर फ्रान्स के नाम की रक्षा करने की शक्ति प्रदान करे।"

जोन ने एक पत्र बर्गण्डी के ड्यूक को भी भेजा। परन्तु उसने कोई उत्तर न दिया। यद्यपि बर्गण्डी का ड्यूक अङ्गरेज़ों का मित्र था, परन्तु हृदय से वह उनकी वृद्धि नहीं चाहता था। साथ ही वह चार्ल्स की ओर होकर भी लड़ना नहीं चाहता था, क्योंकि इस प्रकार अङ्गरेज़ों के द्वारा जो थोड़ा-बहुत लाभ उसे होता था, वह भी हाथ से चला जाता।

ता० २७ जून को सेना जिआँ नगर से चल पड़ी। मार्ग में अनेक नगरों ने चार्ल्स के लिए अपने फाटक खोल दिये और सैनिकों की भोजन आदि से सहायता की। परन्तु कुछ नगरों ने अपने फाटक नहीं खोले और लड़ने के लिए तैयार हो गये। उन दिनों यह एक साधारण बात थी कि एक सप्ताह में ही एक नगर कई स्वामियों के अधीन रहता

था, परन्तु इससे उस नगर के निवासियों का तो सर्वनाश हो जाता था, क्योंकि प्रत्येक युद्ध का अर्थ उनके लिए लूट-मार, रक्तपात, घरों का अग्निदाह आदि था। कोई भी स्वामी हो, उसके सैनिक ये सब कृत्य अवश्य करते थे। इसीलिए अनेक नगरों ने न तो चार्ल्स के लिए अपने फाटक खोले और न उसके लिए शत्रुता के भाव प्रगट किये। उन्होंने चार्ल्स के सामने यह शर्त रक्खी कि यदि वह नगर पर आक्रमण न करेगा, तो वे उसको कुछ धन और कुछ खाद्य-सामग्री देंगे। चार्ल्स शान्ति से जो काम कर सकता था, उसे युद्ध से नहीं करना चाहता था। वह उन नगरों पर सरलता से विजय प्राप्त कर सकता था, परन्तु उससे उसे अधिक लाभ नहीं था। क्योंकि उसके हटते ही बर्गण्डी वाले वहाँ आते और नगर वालों के सिर पर एक युद्ध और पड़ जाता और प्रत्येक बार उन पर अत्याचार होते। चार्ल्स के सैनिक तो इन बातों से सन्तुष्ट न थे, क्योंकि उन्हें लूट-मार करने का अवसर मिलने की सम्भावना नहीं रहती थी, परन्तु चार्ल्स इस विषय में किसी की भी न सुनता था।

चलते-चलते सेना त्रौइये नगर के निकट पहुँची। इस नगर पर अङ्गरेजों का अधिकार था। यह एक बड़ा नगर था और इसमें धनवान व्यापारी निवास करते थे। वे सब अङ्गरेजों के साथ वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा कर चुके थे, क्योंकि उन्हें अङ्गरेजों और बर्गण्डी वालों के अधीन प्रान्तों

में व्यापार करने की आज्ञा मिल जाती थी। इधर हृदय उनके चार्ल्स के साथ थे। उन्होंने अपने कई प्रतिनिधि चार्ल्स के पास भेजे, जिनके द्वारा उन्होंने चार्ल्स को सहायता देने का वचन दिया था। अङ्गरेज़ों के गवर्नर को इस बात का पता चल गया और अनेक प्रतिनिधि गिरफ़ार कर लिये गये। कुछ बचकर चार्ल्स के पास अपना सन्देश लेकर आ पहुँचे। जोन ने एक पत्र इनके द्वारा नगर-निवासियों के नाम भिजवाया, जिसमें उसने उन्हें चार्ल्स की अधीनता स्वीकार करने की सलाह दी थी।

जब त्रौइये के उन निवासियों ने, जो अङ्गरेज़ों के वफ़ादार थे, यह सुना कि चार्ल्स की सेना बढ़ी चली आ रही है, तो उन्होंने रेम-निवासियों के पास निम्नलिखित पत्र भेजा :—

"हमारे ऊपर आक्रमण करने के लिए बादशाह हेनरी तथा बर्गण्डी के ड्यूक के शत्रु बढ़े चले आ रहे हैं। इन शत्रुओं के उद्देश्य को जान कर और इस बात का निश्चय करके कि अङ्गरेज़ों तथा बर्गण्डी वालों का पक्ष सत्य का पक्ष है, हमने इस बात का निर्णय किया है कि हम चाहे प्राण दे देंगे, परन्तु शत्रु का लोहा न मानेंगे और युद्ध में उनका मुक़ाबिला करेंगे। हमने ईसा के नाम पर इस बात की प्रतिज्ञा कर ली है। हम आप से प्रार्थना करते हैं कि आप रीजेण्ट और ड्यूक ऑफ़ बर्गण्डी के पास प्रार्थना-पत्र भेज कर उन्हें हमारी सहायता के लिए बुलावें।"

यही नहीं, उन्होंने एक पत्र चार्ल्स को लिख भेजा कि वे उसे नगर में आने देने के लिए तैयार नहीं हैं। जोन ने जो पत्र उनके नाम भेजा था, उसका उन्होंने कोई उत्तर न दिया, यह कह कर कि जोन तो पागल है और दुरात्माओं के अधिकार में है।

इन उत्तरों के बाद चार्ल्स और जोन अपनी सेना के साथ नगर के पास पहुँच गये और उसके चारों ओर घेरा डाल दिया। इसके बाद वे लोग यह विचार करने लगे कि नगर पर आक्रमण किया जाय या बिना आक्रमण किये आगे चला जाय। जोन ने आगे बढ़ने के प्रस्ताव का घोर विरोध किया। इस प्रकार चार्ल्स के यश में बट्टा लग जाता। वह बोली—"दोफ़ाँ, अपने सैनिकों को आक्रमण करने की आज्ञा दे दो। अधिक सोच-विचार की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैं तुम्हें तीन दिन में नगर के फाटक खोल कर दिखा दूँगी।"

यह बात सबको पसन्द आ गई और उसे सबने अपनी इच्छानुसार कार्य करने की अनुमति दे दी। वह अपने घोड़े पर चढ़ कर, बर्छी हाथ में लिये, सैनिकों को लेकर आगे बढ़ी और नगर पर झूठा आक्रमण कर दिया। नगर-निवासी इस आक्रमण से बहुत डर गये और गिर्जों में जाकर छिपने लगे। इस पर कुछ पादरी चार्ल्स के पास आये और उससे अपनी प्रार्थना सुनने की अनुनय की।

"आप क्या चाहते हैं ?"—पादरियों ने पूछा।

"नगर-निवासियों का आत्म-समर्पण !"—चार्ल्स ने उत्तर दिया।

"परन्तु उसके साथ कुछ शर्तें होंगी !"

"क्या ?"

"नगर-निवासियों के पिछले सब अपराध क्षमा हो जाने चाहिए तथा कोई नया कर न लगाना चाहिए।"

"मुझे स्वीकार है।"—चार्ल्स ने कहा। बस फिर क्या था, नगर के फाटक खोल दिये गये और नगर-निवासियों ने चार्ल्स की अधीनता स्वीकार कर ली। यही नहीं, उन्होंने रेम-निवासियों को निम्न-लिखित पत्र भेजा :—

"इस प्रकार हम सबका एक ही अधिपति होगा। तुम्हारे जान-माल की उसी प्रकार रक्षा की जायगी, जिस प्रकार हमारे की की गई है। क्योंकि जो कुछ हमने किया है, उसके बिना हमारा सर्वनाश हो जाता। हमें इस आत्म-समर्पण के लिए दुःख नहीं है। हमें दुःख इस बात का है कि हमने ऐसा करने में इतना समय क्यों लगाया। हमारा पथानुसरण करने में तुम्हें बड़ा हर्ष होगा, क्योंकि अब तक फ्रान्स पर जितने बादशाहों ने राज्य किया है, उन सब में चार्ल्स में सबसे अधिक बुद्धिमत्ता, विचार तथा वीरता है।"

यदि पाठक त्रौइये के निवासियों के इस पत्र को और पिछले पत्र को पढ़ें और उनका तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन

करें, तो उन्हें विदित होगा कि उस नगर के निवासियों के ये भाव नये नहीं थे। प्रत्येक ग़ुलाम देश के निवासियों के यही भाव होते हैं। वे जब तक कि नये आक्रमणकारी की विजय में सन्देह पाते हैं, तब तक अपने पूर्व विजेता के गुण गाते रहते हैं, परन्तु ज्योंही उन्हें आक्रमणकारी की विजय का निश्चय हो जाता है, वे उसका यश गान करने लगते हैं। एक पादरी ने, जिसका नाम रिशर था, लोगों को एकत्रित करके व्याख्यान देना प्रारम्भ कर दिया :—

"भगवान चार्ल्स के लिए रास्ता बना रहा है। उसने चार्ल्स की सहायता के लिए इस कुमारी (जोन) को भेजा है। उसकी (जोन की) शक्ति अपार है। वह जिस प्रकार चाहे, नगर को जीत सकती थी।"

नगर-निवासी जोन के कारण चार्ल्स को बहुत शक्तिशाली समझने लगे और एक होकर चार्ल्स की जयजयकार बोले—"फ्रान्स का बादशाह चार्ल्स ज़िन्दाबाद।" बस इतना कहना था कि नगर के फाटक खोल दिये गये और चार्ल्स तथा जोन अपनी सेना सहित नगर में प्रविष्ट हो गये। दूसरे फाटक से अङ्गरेज़ों तथा बर्गण्डी वालों के सरदार नगर छोड़ कर भाग गये। उस दिन नगर भर हर्ष मना रहा था। सभी नाच-गान में मस्त थे और पटाख़े आदि छुड़ा कर अपने बादशाह का स्वागत कर रहे थे। नगर-निवासियों को यह डर था कि सैनिक

उनके घरों को लूटेंगे, जैसा कि उन दिनों नियम था। परन्तु चार्ल्स ने डुग्गी पिटवा कर यह घोषित कर दिया कि जो सैनिक लूट-मार करेगा, उसे फाँसी पर लटकवा दिया जायगा। इस घोषणा ने नगर-निवासियों की दृष्टि में चार्ल्स को और भी आदरणीय बना दिया।

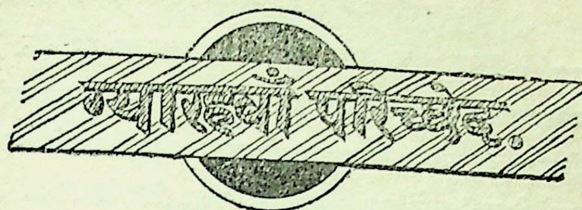
इसी प्रकार जोन ने मार्ग में शालों नामक दूसरा नगर अपने अधीन किया। वहाँ के निवासी भी पहले चार्ल्स का विरोध कर रहे थे और त्रौइये की भाँति उन्होंने भी रेम-निवासियों को एक पत्र लिखा था। परन्तु जब नगर चार्ल्स की अधीनता में आ गया, तो उन्होंने त्रौइये वालों की भाँति दूसरा पत्र भी रेम वालों को लिखा।

रेम-निवासियों ने जब सुना कि चार्ल्स की सेना बढ़ी चली आ रही है, तो उन्होंने बड़े सोच-विचार के बाद एक चाल चली। वे न तो अङ्गरेज़ों और बर्गण्डी वालों ही को अप्रसन्न करना चाहते थे, और न चार्ल्स को ही। इसका एक ही उपाय था कि दोनों को ही वफ़ादारी दिखाना। उन्होंने इसीलिए, इधर तो चार्ल्स के पास समाचार भेजे कि वे अपने नगर के फाटक चार्ल्स के लिए खोलने को तैयार हैं, उधर उन्होंने बर्गण्डी वालों तथा अङ्गरेज़ों को लिखा कि वे चार्ल्स से उनकी रक्षा करने के लिए सहायता भेजें। इस प्रकार उन्हें विश्वास था कि 'कोउ नृप होय हमें का हानी' वाली कहावत चरितार्थ हो सकेगी। ऐसा करना उन

दिनों आवश्यक भी था, क्योंकि जिसके विरुद्ध विद्रोह किया जाय, वही यदि विजेता हो जाय, तो नगर का तो सर्वनाश समझिए।

चार्ल्स ने रेम-निवासियों के पास एक पत्र भिजवाया, जिसमें वही प्रतिज्ञा की गई थी, जो त्रौइये-निवासियों के साथ की थी। उसमें उन्हें सब प्रकार से आश्वासन दिया गया था। बर्गण्डो वालों के कप्तान ने भी लोगों को धैर्य दिलाया और उन्हें बताया कि इङ्गलैण्ड से उनकी सहायता के लिए एक बड़ी सेना आ रही है। उसने उनसे ४० दिन वीरतापूर्वक अपनी रक्षा करने को कहा। परन्तु नगर-निवासी ऐसा कैसे कर सकते थे, जब कि उन्हें मालूम था कि चार्ल्स १५ हज़ार सैनिकों के साथ नगर के बिलकुल निकट आ पहुँचा है। वे चार्ल्स की प्रतीक्षा करने लगे।





चार्ल्स का राज्याभिषेक



ल्स की सेना ने जिस समय रेम नगर में प्रवेश किया, उस समय रात्रि हो गई थी। वह शनिवार का दिन था। व्यवहार के अनुसार राज्याभिषेक रविवार के दिन हुआ करता था। इसलिए नगर-निवासियों ने रात भर में ही अभिषेक की तैयारियाँ कर डालीं। नगर-निवासियों की इस शीघ्रता के कई कारण थे। एक तो यह कि वे चार्ल्स के प्रति इस शीघ्रता के द्वारा अपनी वफ़ादारी दिखाना चाहते थे। दूसरा यह कि वे उसकी सेना को अधिक दिनों तक अपने नगर में रोक रखना नहीं चाहते थे, क्योंकि उन दिनों के सैनिक, जैसा कहा जा चुका है, बहुत भयङ्कर जीव होते थे, और जिस नगर में डेरा डालते थे, वहाँ के निवासियों को बड़ी क्षति उठानी पड़ती थी।

दूसरे दिन प्रातःकाल चार्ल्स अपने दरबारियों के साथ गिर्जे को गया। वहाँ उसने सबके सामने तीन प्रतिज्ञाएँ कीं—(१) वह चर्च के अधिकारों की रक्षा करेगा, (२) अपनी प्रजा पर किसी प्रकार का अनुचित दबाव नहीं डालेगा; (३) न्याय तथा दया से राज्य करेगा। इसके बाद चार्ल्स के शरीर में वह तेल मला गया, जिसके विषय में कहा गया है कि वह स्वर्ग से एक राजहंस द्वारा लाया गया था। उस समय जोन बादशाह के पास अपना सफ़ेद झण्डा लिए खड़ी थी। उस दिन वह अपना दूसरा मिशन पूरा होते हुए देख रही थी; वह अपने दोफ़ाँ को बादशाह बना रही थी।

असली राजमुकुट तथा अन्य वस्तुएँ अङ्गरेज़ों के अधिकार में थीं, क्योंकि वे लोग हेनरी का राजतिलक रेम में ही करने वाले थे, ताकि नियमानुसार वह फ़ान्स का बादशाह कहलाने लगे और चार्ल्स देखता ही रह जाय। परन्तु चार्ल्स के वहाँ पहले पहुँचने से उनका सारा कार्यक्रम बिगड़ गया। उस मुकुट के स्थान पर पादरी ने दूसरा मुकुट चार्ल्स को पहनाया और सबने बादशाह की जयजयकार बोली। जोन के नेत्रों से आँसू बहने लगे और घुटनों के बल झुक कर वह बोली—

"बादशाह, ईश्वर की इच्छा आज पूर्ण हुई। मुझे ईश्वर की यह आज्ञा थी कि मैं औलेंन का घेरा तोड़ कर



जोन द्वारा सम्राट् चार्ल्स का राज्याभिषेक

तुम्हें यहाँ लाऊँ और तुम्हारा राज्याभिषेक करूँ, ताकि संसार जान जाय कि फ्रान्स के वास्तविक स्वामी तुम्हीं हो। मैं तुमसे अब यही प्रार्थना करती हूँ कि तुम न्यायपूर्वक राज्य करो, जिससे स्वर्ग का राजा ईश्वर तुमसे प्रसन्न रहे।"

इस उत्सव के बाद सारे नगर में, घर-घर में हर्ष मनाया जाने लगा। इस उत्सव में सम्मिलित होने के लिए जोन का पिता ज़ाके द ऑर्क भी आया था। परन्तु वहाँ आने में उसका एक और उद्देश्य था। सैनिकों के आवागमन के कारण उसका ग्राम उजाड़ हो गया था, अतः वह अपने ग्राम वालों का कर माफ़ कराना चाहता था। जोन ने यह प्रार्थना बादशाह के सामने रक्खी और वह तुरन्त ही स्वीकृत हो गई। राज्य की ओर से ही ज़ाके के आने-जाने का व्यय दिया गया और उसको एक घोड़ा भेंट में दिया गया।

जोन ने बर्गण्डी के ड्यूक को एक पत्र ज़िआँ से लिखा था, परन्तु उसे कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ था। अब जोन ने एक दूसरा पत्र ड्यूक को लिखवाया :—

"ड्यूक ऑफ़ बर्गण्डी, मैं तुम्हारे और फ़्रान्स के बादशाह के बीच सन्धि स्थापित कराना चाहती हूँ। सच्चे ईसाइयों की भाँति एक दूसरे को शुद्ध हृदय से क्षमा कर दो। मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ, याचना करती हूँ कि तुम फ़्रान्स के राज्य के विरुद्ध युद्ध न करो। तुम फ़्रान्स के

राजा के नगरों तथा क़िलों से अपने सैनिकों को वापस बुला लो। यदि तुम मेरी बात न मानोगे, तो याद रक्खो कि तुम्हारी विजय कभी नहीं हो सकती।"

इसके उत्तर में बर्गण्डी के ड्यूक ने अपने कुछ प्रतिनिधि सन्धि की बातचीत करने के लिए भेजे। कई दिनों की बातचीत के बाद दोनों पक्षों में १५ दिन के लिए सन्धि हो गई और यह निश्चय किया गया कि चार्ल्स के कुछ प्रतिनिधि एक मास बाद आरा जाकर ड्यूक से बातचीत करें।

इस बीच में जोन के विषय में चारों ओर अनेक प्रकार की किम्बदन्तियाँ फैल रही थीं। उसका नाम चारों ओर प्रख्यात हो चुका था। सभी जगह लोगों ने अपनी कल्पना और अपनी बुद्धि के अनुसार उसके विषय में कहानियाँ गढ़ ली थीं। कहीं उसके जन्म के विषय में अद्भुत बातें कही जाती थीं, कहीं उसके युद्धों के विषय में। उसकी भविष्य-वाणी के विषय में भी अनेक कथाएँ प्रचलित हो गई थीं, जिनमें से कुछ यहाँ दी जाती हैं :—

एक बार प्रार्थना के बाद जोन सोने जा रही थी। तभी उसे यह विदित हुआ (देवदूतों द्वारा) कि चार्ल्स के कुछ शत्रु उसे विष देने का प्रयत्न कर रहे हैं। उसी समय उसने अपने भाई को बादशाह के पास भेजा और कहला दिया कि जब तक जोन वहाँ न पहुँचे, बादशाह भोजन न करें। भोजन परोसा हुआ तैयार था, इतने ही में जोन वहाँ पहुँची।

"महाराज, भोजन के थाल मँगवाइए।"—उसने बादशाह से कहा। सब चकित होकर उसकी ओर देख रहे थे। थालियाँ आईं। जोन ने भोजन कुत्तों के सामने डाल दिया। कुत्ते तत्काल ही मर गये। जोन ने एक दरबारी और उसके दो मित्रों की ओर इशारा किया और कहा कि ये ही चार्ल्स को विष देना चाहते थे। उस दरबारी ने अपना दोष स्वीकार कर लिया और उनको उचित दण्ड दिया गया।

इसी प्रकार एक बार जोन चार्ल्स के साथ भोजन कर रही थी। अचानक वह ज़ोर से हँसने लगी।

"क्या हुआ, जोन?"—बादशाह ने पूछा।

"महाराज, हमारे ऊपर आक्रमण करने के लिए ५०० सैनिक इङ्गलैण्ड से आ रहे थे, परन्तु मार्ग में वे समुद्र में ही डूब गये हैं। इसीलिए मैं हँस रही हूँ। आपको यह समाचार तीन दिन के अन्दर विदित हो जायगा।"

और वह समाचार तीन दिन के अन्दर उसी प्रकार मिल गया। इसी प्रकार की अनेक कहानियाँ उस समय प्रचलित हो गई थीं।

कुछ दिनों रेम में रहने के बाद चार्ल्स की सेना पैरिस की ओर चली। शत्रुओं से पैरिस छीन लेना अब जोन का मिशन था। फ़ान्स के उस भाग में कृषकों की बड़ी बुरी दशा थी। उन पर सदा अत्याचार होते रहते थे। बादशाह

चाहे जो होता, पर इससे उनकी दशा में कुछ भी अन्तर न आता। जब-जब किसी दल की विजय होती, तब-तब उस दल के सैनिक तथा सेनानायक बेचारे कृषकों को गिरफ़ार कर लेते और उनसे हर्जाना-स्वरूप कुछ रुपया माँगते। सभी कृषक रुपया देने के योग्य न होते, अतः न दे सकने वालों को वृक्ष पर लटका कर मार डाला जाता। यह कृत्य अङ्गरेज़ भी करते थे, बर्गण्डी वाले भी करते थे और आर्मागनाक लोग भी। कृषकों पर कैसे अत्याचार होते थे, इसका कुछ आभास निम्नलिखित कहानी से मिल सकता है :—

एक बार एक सरदार दौरे पर एक ग्राम में गया। वहाँ पर एक कृषक अपना खेत जोत रहा था। सरदार को न जाने क्यों उस पर क्रोध आ गया। उन्होंने उस दीन कृषक को पकड़वा मँगाया और उससे एक बड़ी रक़म माँगी। उसके मना करने पर उसे एक घोड़े की दुम से बाँध दिया गया और घोड़े को भगा कर एक गाँव तक लाया गया। तब तक कृषक अधमरा हो चुका था। उसी दशा में उससे उस रक़म को देने की प्रतिज्ञा करा ली। उसकी नव-विवाहिता तथा गर्भिणी स्त्री के पास एक दूत उस रक़म को लाने के लिए भेजा गया। वह रक़म देने में असमर्थ थी, अतः वह सरदार के पास गई और अनुनय-विनय करने लगी। परन्तु सरदार का हृदय न पसीजा और अन्त में उस बेचारी को रक़म चुकाने के लिए एक दिन नियत करना पड़ा, नहीं

तो उसे डर था कि उसका पति पेड़ पर लटका कर मार डाला जायगा।

वह रोती हुई ईश्वर का भरोसा करके वहाँ से गई और बड़े परिश्रम के बाद उतना रुपया एकत्रित करके लाई। परन्तु दुर्भाग्यवश वह एक दिन देर करके पहुँची थी। वहाँ जाकर उसे पता चला कि उसके पति को फाँसी लगा दी गई थी। वह बेहोश हो गई और जब उसे कुछ चेत हुआ तो उसने अपने पति को देखने की इच्छा प्रगट की। परन्तु उससे कहा गया कि वह बिना पूरा रुपया दिये अपने मृत पति के शव को न दे सकेगी। उसने रुपया दे दिया, परन्तु फिर भी उसकी इच्छा पूर्ण न की गई।

इस प्रकार शोक और निराशा से आहत होकर वह उस सरदार को गालियाँ और शाप देने लगी। बस, उसी समय वह गिरफ्तार कर ली गई और एक ऐसे वृक्ष पर लटका दी गई, जहाँ अनेक अभागे व्यक्तियों को फाँसी दी गई थी और जिनके शरीर अभी तक वहीं लटके हुए थे। भूख-प्यास, भय और शोक के कारण वह रात्रि को भयानक रूप से चीखने लगी। परन्तु किसी का इतना साहस न था कि आकर उसको बचाता। अन्त में उसको प्रसव हो गया। परन्तु उसका शब्द सुन कर वहाँ तब तक कुछ भेड़िए आ पहुँचे थे। उन्होंने पहले तो उसके बच्चे का भक्षण किया और फिर उसका।

ऐसे और इनसे भी अधिक भयानक अत्याचार उन दिनों चारों ओर किसानों पर होते थे। अतः वे किसी भी नये शासक के आने पर प्रसन्न न होते थे, क्योंकि उनके लिए सब एक समान थे। फिर भी जिस प्रकार जोन और चार्ल्स ने नगरों को जीतने के बाद उनके निवासियों के साथ व्यवहार किया था, उससे कृषकों को बहुत कुछ आश्वासन मिला और नगर-निवासियों की भाँति वे भी चार्ल्स के सामने सर झुकाने लगे। इस प्रकार चार्ल्स और जोन मार्ग में जिस नगर में भी गये, वही प्रसन्नता से, बिना युद्ध किये, उनके अधीन हो गया।





पैरिस की ओर



ना युद्ध किये नगरों पर विजय करते हुए चार्ल्स और जोन पैरिस की ओर बढ़े चले जा रहे थे। मार्ग में एक नगर पड़ता था, जिसका नाम था सोंली। यहाँ पर अङ्गरेजों की सेना सामना करने के लिए तैयार थी और फ्रान्सीसी सेना की प्रतीक्षा कर रही थी। यहाँ दोनों सेनाओं की मुठभेड़ हुई। इस युद्ध में जोन आगे लड़ने वालों में से एक थी। इस युद्ध में भी चार्ल्स की विजय हुई। अङ्गरेजों की सेना उस नगर को छोड़ कर भाग गई। नगर पर चार्ल्स का ही अधिकार हुआ। इसी प्रकार आगे के कई नगरों में भी चार्ल्स का स्वागत 'चार्ल्स ज़िन्दाबाद' के नारों से हुआ।

अब जोन को पैरिस पर आक्रमण करने की शीघ्रता पड़ी। उसने अपने देवताओं और देवियों द्वारा सुना था कि वह पैरिस पर विजय प्राप्त करेगी। पैरिस फ़ान्स की कुञ्जी थी, अतः उसको अधीन करना ही उस समय उसका मुख्य उद्देश्य था। पैरिस की ओर उसका इतना ध्यान था कि जब उसे काउण्ट आर्मागनाक का एक पत्र एक भविष्यद्वाणी के विषय में मिला, तो उसने लिख दिया कि पैरिस पहुँच कर ही वह उस पत्र पर विचार करेगी।

अन्त में वह कुछ सेना लेकर पैरिस की ओर चल ही दी। ता० २६ अगस्त को जोन अपनी सेना के साथ पैरिस के निकट पहुँची। परन्तु पैरिस के निकटवर्ती ग्रामों को उसने खाली पाया। उनके निवासी भाग कर पैरिस की चहारदीवारी के भीतर अपनी रक्षा करने के लिए चले गये थे। उधर के कृषक भय से अपने खेतों की फ़सल को काट कर पैरिस ले गये थे। जोन की सेना के सिपाही इधर-उधर घूम कर लड़ते-लड़ाते और कुछ खाद्य-पदार्थ छीन कर ले आते। जोन ने उनको चोरी न करने का आदेश दे रक्खा था और कह दिया था कि यदि कोई चीज़ चोरी करके लाई गई तो वह उसे ग्रहण न करेगी।

इधर जोन पैरिस पर आक्रमण करने की तैयारी कर रही थी, उधर चार्ल्स बर्गण्डी के दूतों से वार्तालाप कर रहा था। पन्द्रह दिन की सन्धि समाप्त हो चुकी थी, अब

दूसरी सन्धि की आवश्यकता थी, क्योंकि अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार बर्गण्डी के ड्यूक ने पैरिस अपने और अङ्गरेज़ों के अधिकार से निकाल कर अभी चार्ल्स के सिपुर्द नहीं कर दिया था। ख़ैर, दूसरी सन्धि हुई। अङ्गरेज़ अब तक पैरिस का आधिपत्य बर्गण्डी के ड्यूक को दे चुके थे। चार्ल्स ने भी कुछ समय के लिए बर्गण्डी के ड्यूक का अधिकार मान लिया था। सन्धि दिसम्बर तक के लिए हो गई थी। इस प्रकार चार्ल्स और उसके दरबारियों ने बड़ी शिथिलता और साहसहीनता का परिचय दिया। क्योंकि यदि वे सन्धि न करके पैरिस पर आक्रमण कर देते, तो विजय निस्सन्देह उन्हीं की होती। सन्धि ने उनका काफ़ी समय खोया। चार्ल्स सितम्बर में पैरिस के निकट पहुँचा।

पैरिस के निवासी अङ्गरेज़ों से घृणा करते थे। एक तो अङ्गरेज़ विदेशी थे, दूसरे वे अत्याचारी थे। अतः पैरिस वाले उनके अधिकार में रहना अच्छा नहीं समझते थे, विवश होकर उसे सहन कर रहे थे। परन्तु साथ ही वे चार्ल्स से भी डरते थे। उसका कारण यह था कि चार्ल्स के सैनिकों ने अनेक बार पैरिस के निकटवर्ती ग्रामों पर आक्रमण किया था और ग्रामीणों पर भाँति-भाँति के अत्याचार किये थे। फिर भी, पैरिस में चार्ल्स के अनुगामियों की कमी न थी। वे सदा यह अफ़वाह उड़ाते रहते थे कि—"आर्मागनाक आ पहुँचे, आर्मागनाक विजयी हो गये, आदि।"

अङ्गरेज़ और बर्गण्डी वाले बहुत दिनों से आक्रमण-कारियों का सामना करने का प्रबन्ध कर रहे थे, क्योंकि ऑर्लेन के बाद से ही उन्हें पैरिस पर आक्रमण की आशङ्का थी। नगर के चारों ओर पक्का परकोटा था, जिसको एक गहरी खाई घेरे हुए थी। इधर जोन ने भी अपनी तैयारी कर ली थी। जिस दिन पैरिस-निवासी एक त्यौहार होने के कारण युद्ध की ओर कम ध्यान दे रहे थे, उसी दिन जोन अपने सैनिकों को लेकर पैरिस की ओर चल दी। नगर की चहारदीवारी के निकट पहुँच कर उसने पहरेदार सैनिकों से चिल्ला कर कहा—"नगर का अधिकार फ्रान्स के बादशाह को दे दो।"

उधर से कोई उत्तर न आया

"ईसा के नाम पर शीघ्र ही आत्म-समर्पण कर दो। यदि तुम सन्ध्या के पहले पराजय स्वीकार न कर लोगे, तो हम बलपूर्वक नगर में प्रवेश करेंगे और तुम सबको बिना दया के मार डालेंगे।"

परन्तु फिर भी कोई उत्तर नहीं।

दोनों ओर से तीरों की वर्षा होने लगी। उधर नगर-निवासियों को भी आक्रमण की सूचना मिली और समूह के समूह लड़ाई में सहायता देने के लिए उधर चले आये। पैरिस वालों की तोप ऊपर से गोले बरसाने लगी। खाई में पानी होने के कारण जोन के सैनिक सरलता से दीवार

के पास नहीं पहुँच सकते थे। वह चिल्ला कर उन्हें तैर कर उस पार जाने का आदेश दे रही थी। इतने ही में दीवार के ऊपर से फेंका हुआ एक तीर उसकी जङ्घा में लगा। कुछ देर के बाद सेनानायकों ने सेना को पीछे हटा लिया। जोन को एक घोड़े पर बिठा कर वापस लाया गया।

इस घटना के बाद चार्ल्स की सेना के नायकों तथा दरबारियों में यह परामर्श होने लगा कि पैरिस पर फिर आक्रमण किया जाय या नहीं। पहले आक्रमण में उन्हें धन-जन की बड़ी क्षति उठानी पड़ी थी। क्या फिर असफल होकर उतनी ही क्षति वे उठा सकते थे? कुछ तो युद्ध के पक्ष में थे और कुछ वहाँ से हट कर अन्य प्रान्तों में जाकर युद्ध करने के पक्ष में थे। इधर एक घटना ऐसी हो गई, जिससे लोगों के हृदयों में जोन के प्रति विश्वास कुछ कम हो गया।

युद्ध के समय सैनिकों में से बहुतेरे अपने साथ कुछ चरित्र-भ्रष्ट स्त्रियों को ले आया करते थे और उन्हें कवच पहना कर रखते थे, ताकि कोई पहचान न ले। जोन को इन स्त्रियों से बहुत चिढ़ थी। उसने कई स्त्रियों को पकड़ कर वहाँ से निकलवा दिया। एक बार एक ऐसी ही स्त्री से क्रोधित होते-होते जोन ने अपनी देवी-प्रदत्त कृपाण उसको मारी। कृपाण टूट गई। लोगों का यह विश्वास था कि यदि इस प्रकार देवताओं की दी हुई कोई चीज़ टूट

जाय या नष्ट हो जाय, तो ऐसे व्यक्तियों की दैवी शक्ति भी नष्ट हो जाती है। यही धारणा उनकी जोन के विषय में हो गई।

कुछ दिनों बाद ही बादशाह और अनिच्छापूर्वक जोन भी उस स्थान से चल दिये। यह जोन की पहली पराजय थी, परन्तु उस पराजय का कारण वह न थी। चार्ल्स के सेनानायकों ने कई ऐसी भूलें की थीं, जो इस प्रकार के युद्ध के लिए अक्षम्य थीं। इतना सब कुछ होने पर भी जोन का साहस वैसा ही, आकाँक्षा वैसी ही और देशप्रेम वैसा ही था। वह अपनी पहली विजयों से सन्तुष्ट न थी। अभी तो अङ्गरेज़ों के अधिकार में नौर्मण्डी का पूरा प्रान्त था, जो उसे उनसे छीनना था। पैरिस पर उसका अधिकार न हुआ, तो न सही, पैरिस के पास ही अन्य नगर थे, जिन पर अधिकार प्राप्त करने का निश्चय उसने किया।

पैरिस के निकट ही एक ला-शारीते नामक नगर था। जोन ने दल-बल-सहित उस पर आक्रमण करना चाहा, परन्तु मार्ग में एक नगर था, जिसे जीतना आवश्यक था। तीन दिन घेरा डाले रहने के बाद जोन के सैनिकों ने उस नगर पर आक्रमण किया। यहाँ भी नगर की चहार-दीवारी के बाहर एक खाई थी, जिसमें पानी भरा था। पहले तो सैनिकों ने खूब वीरता से काम किया, परन्तु पीछे

से ऊपर की गोलाबारी के कारण उन्हें पीछे हटना पड़ा। जब सैनिक कुछ दूर चले आये, तो उन्हें मालूम पड़ा कि जोन वहाँ नहीं थी। एक सेनानायक उसी समय पीछे लौटा। उसने देखा कि जोन खाई के पास अकेली खड़ी थी।

"यहाँ तुम अकेली क्या कर रही हो?"—उसने पूछा।

जोन ने उसकी ओर देखा।

"सारे सैनिकों की भाँति तुम भी पीछे क्यों नहीं हटती हो?"—नायक ने फिर पूछा।

"मैं अकेली नहीं हूँ। मेरे साथ मेरे ५० हज़ार सैनिक हैं। जब तक मैं नगर पर अधिकार प्राप्त न कर लूँगी, तब तक मैं यहाँ से एक इञ्च भी नहीं हटूँगी।"—जोन ने उत्तेजित होकर उत्तर दिया।

"यहाँ से अभी चली चलो, यहाँ तुम सुरक्षित नहीं हो।"—नायक ने फिर कहा।

"तख्ते खाई में डाल कर पुल बना लो, देखते क्या हो?"—उसने चिल्ला कर उन सैनिकों से कहा, जो उसके पास आकर एकत्रित हो गये थे। सैनिकों ने उसी समय जोन की आज्ञा के अनुसार कार्य करना प्रारम्भ कर दिया और सन्ध्या तक वह नगर जोन के अधिकार में आ गया। परन्तु उसका ला-शारीते का घेरा सफल न हो सका।

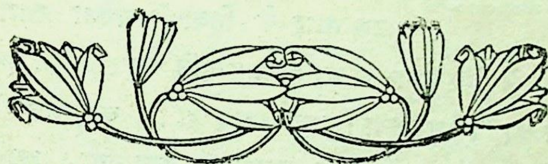
कुछ दिनों तक जोन आराम करती रही। उधर उसने सुना कि बर्गण्डो का ड्यूक चार्ल्स के जीते हुए प्रदेशों—

रेम, त्रौइये आदि—को लेने का प्रयत्न कर रहा है। सन्धियाँ तब तक समाप्त हो चुकी थीं। अङ्गरेज़ और बर्गण्डी वाले युद्ध के लिए तैयारियाँ कर रहे थे, परन्तु चार्ल्स अपना साहस खो चुका था। वह कुछ करना न चाहता था। उसी समय जोन को रेम-निवासियों का एक पत्र मिला, जिसमें उन्होंने लिखा था कि उन्हें शत्रुओं के आक्रमण का भय था और उसके लिए जोन की सहायता आवश्यक थी। इस पत्र ने जोन को बहुत दुखित किया। क्या उसका किया हुआ सारा कार्य नष्ट हो जायगा? क्या सब कुछ पाकर अब खोना पड़ेगा? वह इसे सहन नहीं कर सकती थी।

वह चार्ल्स से बिना कहे कुछ सैनिकों को एकत्रित करके युद्धक्षेत्र में उतर पड़ी। लाग्नी नगर के निकट उसने सुना कि बर्गण्डी की एक सेना कुछ नगरों को पराजित करके और बहुत-सा लूट का सामान अपने साथ लिए उधर आ रही थी। जोन ने उस सेना पर आक्रमण कर दिया। ख़ूब घमासान युद्ध हुआ और अन्त में बर्गण्डी के सारे सैनिक मार डाले गये और जोन के सैनिक लूट का सामान लेकर लाग्नी लौट गये।

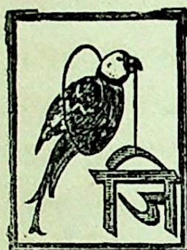
लाग्नी में जब जोन थी, तो एक अद्भुत घटना घटी। एक बच्चा बप्तिस्मा होने के पूर्व ही मर गया था और उन दिनों लोगों का ऐसा विश्वास था कि जो व्यक्ति बिना बप्तिस्मा कराये मर जाता था, वह अनन्त-काल तक नरक

में रहता था। उस बच्चे को गिर्जे में ले जाया गया। लोग जोन के पास इस समाचार को लेकर पहुँचे। वह गिर्जे में पहुँची और प्रार्थना की। थोड़ी देर ही में बच्चा जीवित हो गया। उसका बप्तिस्मा किया गया और तत्काल ही वह फिर मर गया।



तेरहवाँ परिच्छेद

जोन की गिरफ़्तारी



स समय बर्गण्डी के ड्यूक और बादशाह चार्ल्स के साथ दूसरी सन्धि हुई थी, तो बर्गण्डी के ड्यूक को चार्ल्स ने कोम्पिएग्ने नामक नगर पर अधिकार प्राप्त करने की आज्ञा दे दी थी। परन्तु उस नगर के निवासी अपना स्वामी बदलने के लिए तैयार न थे, अतः उन्होंने बादशाह की इस स्कीम का विरोध किया। फल यह हुआ कि बादशाह को एक दूसरा नगर बर्गण्डी के ड्यूक को देना पड़ा। ड्यूक बहुत ही चालाक व्यक्ति था। उसने दूसरा नगर तो स्वीकार कर लिया, परन्तु वह कोम्पिएग्ने को भी हथियाने के प्रयत्न करने लगा। जिस समय सन्धि की अवधि समाप्त हो गई, तो ड्यूक एक बड़ी सेना लेकर उस नगर पर आक्रमण करने के लिए चल दिया।

यह समाचार जोन ने सुन लिया। वह कब शान्त रहने वाली थी? अपनी सेना को लेकर वह वहीं पहुँच गई। ड्यूक ने भी नगर के चारों ओर घेरा डाल दिया। ड्यूक

की सेना में बर्गण्डी वाले ही नहीं, बल्कि अङ्गरेज़ भी थे और इस प्रकार उनकी शक्ति अधिक थी।

एक दिन सन्ध्या के समय जोन की सेना के नायकों ने बर्गण्डी की सेना पर अचानक आक्रमण करना चाहा। इस विषय में उन्होंने जोन से कोई सलाह नहीं ली थी। जोन को कुछ भी पता न था कि क्या होने जा रहा था। वह सेना के साथ इसलिए ली गई थी कि लोगों का विश्वास था, कि वह उनके लिए सौभाग्य की निशानी थी। वे जोन की उपस्थिति को ही विजय का कारण समझते थे, इसीलिए उन्होंने युद्ध के विषय की कोई बात न उससे पूछी, न उसे बताई।

वे चुपचाप नगर के एक ओर पहुँचे, जिधर भूमि कुछ ऊँची थी। बर्गण्डी वालों ने छोटी-छोटी टुकड़ियों में अपनी सेना को विभाजित करके चारों ओर लगा दिया था। उन्हें आक्रमण की आशङ्का नहीं थी। जोन के सैनिकों ने उस ऊँची भूमि पर स्थित बर्गण्डी वालों के ऊपर आक्रमण कर दिया। परन्तु उधर सारी बर्गण्डियन सेना में इस आक्रमण का समाचार पहुँच गया। शीघ्रता में सैनिक लोग अपने अस्त्र-शस्त्र सजाने लगे। स्वयं ड्यूक अपनी टुकड़ी को लेकर उधर जा पहुँचा। सेना की अन्य टुकड़ियाँ भी उधर पहुँच गईं। इस प्रकार जोन की सेना कई ओर से घिर गई। बर्गण्डी वाले पहले तो पीटे गये, परन्तु उन्हें सहायता

की आशा थी और वह सहायता उन्हें शीघ्र ही मिल भी गई। इसलिए उनका उत्साह द्विगुणित हो गया।

जब बर्गण्डी की सेना की संख्या काफ़ी हो गई, तो फ्रेञ्च सेना के पैर उखड़ गये। सैनिक वहाँ से नगर की ओर भागने लगे। जोन वहाँ से टस से मस न हुई। वह युद्धक्षेत्र से भाग जाने में कभी विश्वास न करती थी। या तो विजय या पराजय। इनके बिना वह अपने स्थान पर डटी रहती। उस दिन भी वह अपने स्थान से न हटी।

जोन के सैनिक नगर की ओर भाग रहे थे, परन्तु बहुत धीरे-धीरे। क्योंकि उन्होंने पहले आक्रमण में बर्गण्डी वालों से जो चीज़ें छीन रक्खी थीं, उन्हें वे अपने साथ ही ला रहे थे। वे नगर में आ जाते, परन्तु एक ओर से उन्होंने देखा कि अङ्गरेज़ों की सेना उनका पीछा किये हुए आ रही है। 'भागो, भागो' का शब्द करके वे बेतहाशा भागे। इस भगदड़ में सबको अपनी-अपनी पड़ी थी। दूसरों का क्या होगा, इसकी किसी को चिन्ता नहीं थी। परन्तु नदी के पास आकर इनकी बड़ी दुर्दशा हुई। भाग-दौड़ में नदी किससे पार की जाती है? कुछ उनमें से नावों पर कूदे। कुछ पानी में ही कूदे और तैरने लगे। कुछ नदी में गिर कर डूबने लगे। अभी उन्होंने नदी पार भी न की थी कि अङ्गरेज़ उनके सर पर आ धमके। उधर नगर में स्थित सेना दीवारों पर रक्खी हुई तोपों से गोले छोड़ कर अङ्गरेज़ों का

सामना नहीं कर सकती थी, क्योंकि उनकी सेना के मनुष्य भी सामने थे। वे बड़ी द्विविधा में पड़ गये। यदि गोले चलाते, तो अपनी सेना का भी नाश करते। गोले न चला कर वे अङ्गरेज़ों को मानों निश्चिन्त होकर नगर में घुस आने का निमन्त्रण दे रहे थे। जब उन्होंने देखा कि अङ्गरेज़ फाटक के बिलकुल ही पास आ पहुँचे थे, तो उन्होंने पुल को ऊपर उठा लिया और नगर का फाटक बन्द कर दिया।

उधर जोन कुछ साथियों के साथ बर्गण्डी वालों से लड़ रही थी। उसे इधर की घटना का कुछ पता न था। वह समझती थी कि उसकी सेना बराबर सामना कर रही थी और उसकी विजय होने में कोई शङ्का न थी।

उसके साथियों ने चिल्ला कर कहा—शीघ्र ही नगर की ओर लौट चलो, नहीं तो यहीं हमारा अन्त हो जायगा।

जोन बोली—शान्तिपूर्वक लड़ते रहो। इसके अतिरिक्त और किसी बात का विचार न करो। आगे चलो, हमारी विजय अवश्यम्भावी है।

परन्तु सब कुछ समाप्त हो चुका था। उसके साथियों ने उसका घोड़ा बलपूर्वक पकड़ लिया और वे नगर की ओर लौटे। परन्तु पुल उठ चुका था और उसके पास ही अङ्गरेज़ों की सेना डटी हुई थी। वे नगर में प्रवेश न कर सके। उनके पीछे ही बर्गण्डी की सेना के कुछ सैनिक दौड़े हुए आ रहे थे। वे जोन के पास आ ही पहुँचे!

"आत्म-समर्पण कर दो !"—वे सब चिल्लाये।

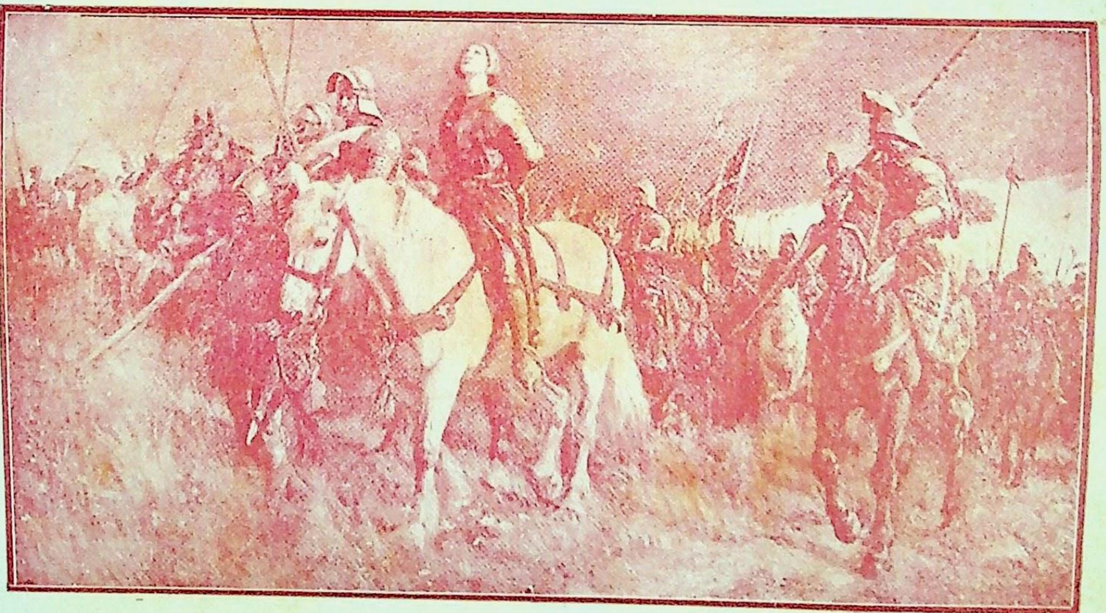
आत्म-समर्पण करने के अतिरिक्त और कोई उपाय न था। जोन ने आत्म-समर्पण कर दिया। उसके साथ ही उसका भाई पियर भी पकड़ा गया। इस युद्ध में जोन के ४०० के लगभग सैनिक नष्ट हुए।

जोन के अस्त्र-शस्त्र छीन लिये गये और वह मार्गनी को ले जाई गई। बर्गण्डी वालों की सेना में हर्ष-ध्वनि होने लगी। जिस बालिका ने बड़े-बड़े सेनानायकों के दाँत खट्टे कर दिये थे, उसको इस प्रकार पकड़ कर ड्यूक की सेना फूली न समाती थी। ड्यूक का अभी तक जोन से साक्षात्कार नहीं हुआ था। वह अब उससे मिलने के लिए आया और उससे कुछ देर तक वार्तालाप किया।

जिस सैनिक ने जोन को गिरफ़्तार किया था, वह पिकार्दी प्रान्त का रहने वाला था। उसने जोन को अपने नायक ज्रॉं द लुक्सेमबूर्ग के सिपुर्द कर दिया। ड्यूक ने चारों ओर अपने राज्य में तथा अन्य राज्यों में जोन की गिरफ़्तारी के समाचार भेजवा दिये। इन पत्रों में ड्यूक ने जोन के विषय में बड़ी अनर्गल बातें लिखी थीं।

जोन की गिरफ़्तारी के बाद उसकी सेना के बचे हुए सैनिकों ने घेरा उठा लिया और वहाँ से वापस चले गये।

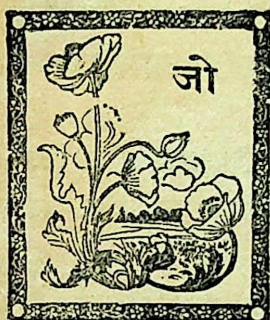
देवी जोन



लड़ाई में पकड़ी जाने पर जोन को अङ्गरेज़ लोग क़ैद करके लिये जा रहे हैं।

चौदहवाँ परिच्छेद

जोन बन्दीगृह में



न के बन्दी होते ही लोगों को यह जानने की उत्कण्ठा हुई कि वह किसकी बन्दिनी होकर रहेगी और कौन उसका मुक़दमा करके उसको दण्ड देगा। वास्तव में जोन युद्ध में लड़ते हुए गिरफ़्तार की गई थी, अतः उसके साथ युद्ध के क़ैदी का सा व्यवहार होना चाहिए था। परन्तु उसके प्राणों के ग्राहक तो कई थे। उधर स्वयं बर्गण्डी का ड्यूक उनमें एक था। अङ्गरेज़ भी उसके प्राणों के पीछे पड़े थे। इनके अतिरिक्त पैरिस का विश्वविद्यालय भी उसको मृत्यु-दण्ड देना चाहता था। उन दिनों विश्वविद्यालयों से वह अर्थ नहीं निकलता था, जो आज निकलता है। उन दिनों विश्वविद्यालय एक प्रकार से धार्मिक संस्थाएँ होते थे और धार्मिक विषयों में

उच्चाधिकार तथा अन्तिम निर्णय उन्हीं के हाथ में रहता था। पैरिस के विश्वविद्यालय में जो अधिकारी पादरी थे, वे थे तो फ़्रेञ्च, परन्तु चूँकि उस समय पैरिस पर बर्गण्डी के ड्यूक तथा अङ्गरेज़ों का आधिपत्य था, अतः वे उन्हीं के स्वर में स्वर मिला कर अपनी तूती बजा रहे थे। उन्होंने जोन को शैतान की सङ्गिनी तथा जादूगरनी कह कर उस पर दोषारोपण किया था और उसी दोष के लिए वे उसे दण्ड देना चाहते थे। कहना नहीं होगा कि इन देश-द्रोहियों की यह इच्छा भारत के जयचन्द की भाँति स्वार्थ से पूरित थी।

जोन की गिरफ़्तारी के एक दिन बाद पैरिस विश्वविद्यालय ने एक पत्र बर्गण्डी के ड्यूक के नाम भेजा, जिसमें लिखा था :—

"ओ ड्यूक, हम तुमसे प्रार्थना करते हैं कि तुम जोन को हमारे पास शीघ्र ही और अवश्य ही भेज दो। इस प्रकार तुम हमारे धर्म की और ईश्वर के नाम की प्रतिष्ठा की रक्षा करोगे।"

इन पादरियों की ईसाई-संसार में बड़ी धाक थी। ऐसे विषयों में विश्वविद्यालय को मुक़दमा करने और दण्ड देने का अधिकार था। उनकी इच्छा के आगे कोई चूँ तक नहीं कर सकता था। उनके निर्णय का विरोध कोई बादशाह तक नहीं कर सकता था। परन्तु ड्यूक ने उनकी आज्ञा का

पालन नहीं किया। बात यह थी कि वहाँ केवल धर्म का ही प्रश्न नहीं था, रुपये का प्रश्न भी था। उन दिनों युद्ध में जो सैनिक गिरफ़्तार किये जाते थे, उनको कुछ रुपया लेकर छोड़ दिया जाता था। ड्यूक को आशा थी कि चार्ल्स जोन को छुड़ाने के लिए एक बड़ी रक़म देगा। साथ ही वह यह भी जानता था कि अङ्गरेज़ भी जोन के लिए उससे सौदा करेंगे। वह इस प्रतीक्षा में था कि उनमें से कौन अधिक देता है। इसी कारण उसने जोन को पैरिस न भेज कर अपने एक क़िले में रक्खा।

उधर चार्ल्स के राज्य में जोन की गिरफ़्तारी पर शोक मनाया जाने लगा। उनका सहारा, उनकी आशा, उनका भविष्य, सब कुछ जोन पर निर्भर था। जोन ने अन्धकार हटा कर उन्हें प्रकाश दिखाया था, जोन ने उन्हें उत्साहित करके विजयी बनाया था। वह उनके लिए पथ-प्रदर्शक, स्वर्ग की देवी, सेनानेत्री आदि सभी कुछ थी। लोग चारों ओर उसके नाम पर कुछ न कुछ करने लगे। तूर के निवासियों ने उसकी मुक्ति के लिए सार्वजनिक प्रार्थना की और एक जुलूस निकाला। अन्य कई नगरों में भी इसी प्रकार प्रार्थनाएँ की गईं। गिर्जों में जोन की प्रस्तर-प्रतिमाएँ स्थापित की गईं। लोग उसकी मूर्ति को तावीज़ों में मढ़वा कर पहनने लगे।

एक प्रसिद्ध पादरी ने चार्ल्स को लिखा—"जोन की मुक्ति के लिए न तुम रुपये की परवाह करो, न किसी कष्ट

की। नहीं तो लोग तुम्हें कृतघ्न कह कर तुम्हारा अपमान करेंगे।" इसी प्रकार कई अन्य व्यक्तियों ने भी चार्ल्स को पत्र लिखे थे।

जोन बोवे नामक प्रदेश में पकड़ी गई थी। यहाँ का मुख्य पादरी था कोशों नाम का एक व्यक्ति। यह कोशों कितना कुटिल, कितना हृदयहीन और कितना दुष्ट था, इसका पता पाठकों को आगे के परिच्छेदों से लगेगा। पादरी होते हुए भी जोन के साथ इसने इतनी नीचता से व्यवहार किया था, जितनी नीचता से एक साधारण व्यक्ति भी न करता। जोन को बध कराने की इसकी महती आकांक्षा थी, इसलिए नहीं कि शुद्ध हृदय से यह जोन को धर्म के विरुद्ध समझता था, वल्कि इसलिए कि इसे जोन से व्यक्तिगत द्वेष था। उस द्वेष के दो कारण थे। एक तो यह कि इस पादरी के गिर्जे के अन्तर्गत जो प्रदेश था, उसके निवासियों ने इसको कर देना बन्द कर दिया, क्योंकि वे चार्ल्स की ओर झुके हुए थे, यद्यपि उन पर शासन बर्गण्डी वालों का और अङ्गरेज़ों का था। इस प्रकार उसे जिस ग़रीबी का सामना करना पड़ा था, उसका कारण वह जोन को समझता था। इसीलिए जब उसने सुना कि जोन उसी के प्रदेश में बन्दी बना कर रक्खी गई है, तो उसकी प्रतिहिंसा की भावना सजग हो गई। दूसरा कारण यह था कि उसको वेतन रीजेण्ट से मिलता था। रीजेण्ट तो

जोन की जान का ग्राहक था ही। उसे प्रसन्न करने के लिए भी कोशों के हाथ यह अच्छा अवसर लगा।

उसने पैरिस-विश्वविद्यालय से लिखा-पढ़ी करके बर्गण्डी के ड्यूक के नाम एक पत्र मँगवाया और उस पत्र के आधार पर वह उससे जोन को माँगने लगा। वह पत्र इस प्रकार था :—

"अत्यन्त शक्तिशाली तथा श्रेष्ठ ड्यूक, आप यह जानते हैं कि सभी राजाओं को अपनी शक्ति का उपयोग सबसे पहले ईश्वर की सेवा में करना चाहिए। इसका विचार आपने उस समय अवश्य किया होगा, जब आपने उस जादूगरनी को पकड़ा था, जिसने ईश्वर के नाम को कलङ्कित किया है, विश्वास का नाश किया है, और चर्च का अपमान किया है। उसी के कारण इस राज्य में मूर्ति-पूजा आदि के दोष प्रचलित हो गये हैं। उसकी गिरफ़ारी के लिए सभी ईसाइयों को तुम्हें धन्यवाद देना चाहिए। परन्तु केवल उसकी गिरफ़्तारी से ही काम न चलेगा, जब तक कि उसको उसके अपराधों के लिए दण्ड न मिलेगा।

"बिना दण्ड दिये उसे मुक्त कर देना बहुत ही घातक सिद्ध होगा। इस विषय में समय नष्ट करने से भी बड़ा अनर्थ होगा। अतः आपसे प्रार्थना है कि आप कृपया उस स्त्री को या तो पैरिस भेज दें या बोवे के बिशप कोशों के अर्पण कर दें, ताकि यहाँ उस पर अभियोग लगा कर उसके

अपराधों की जाँच की जाय और उसे उचित दण्ड दिया जाय।"

पैरिस से कोशों को यह पत्र ही नहीं मिला था, बल्कि यह आज्ञा भी मिली थी कि यदि जोन राज़ी से न जाय तो वह उसके बदले में बर्गण्डी के ड्यूक को दश सहस्र स्वर्ण-फ्राङ्क तक दे दे। यहाँ पर यह ध्यान देने योग्य बात है कि वह रुपया चर्च की गाँठ से आने को न था, अङ्गरेज़ उस रुपये को चर्च को दे रहे थे। दूसरे शब्दों में अङ्गरेज़ जोन को ख़रीद रहे थे, परन्तु पहले से ही ग़ुलाम बनाया हुआ पैरिस का विश्वविद्यालय स्वार्थवश दलाल का कार्य कर रहा था। यह चर्च से सम्बन्ध रखने वालों के लिए बड़ी लज्जा की बात थी, परन्तु धर्माधिकारी लोग अपनी सभी बुराइयों पर पर्दा डालने में चतुर होते हैं, यह सभी जानते हैं।

वास्तव में यह सारा चक्रव्यूह रचा हुआ था अङ्गरेज़ों का। चर्च से अधिक चिन्ता जोन को बध कराने की थी अङ्गरेज़ों को। क्योंकि उसने उनकी बाढ़ को रोक दिया था। जिस दिन जोन पकड़ी गई थी, इङ्गलैण्ड की काउन्सिल ने यह प्रस्ताव पास किया कि किसी भी मूल्य पर जोन को ख़रीद लेना चाहिए। ख़रीदने के बाद क्या करना चाहिए, इस विषय में अनेक प्रकार के मत थे। कुछ की सम्मति थी कि जोन को एक बोरे में बन्द करके नदी में फेंक देना

चाहिए। परन्तु लॉर्ड वारिक ने यह राय दी कि पहले उस पर अभियोग चला कर संसार की दृष्टि में उसे अपराधिनी बना दो, फिर उसे जीवित जला दो। इस प्रकार उसको अपराधिनी बनाने से संसार में चार्ल्स बदनाम हो जाता। यही तो वे चाहते थे। जोन की मृत्यु और चार्ल्स का अपयश, बस इसके बाद अङ्गरेज़ों के मार्ग में कोई बाधा न थी और वे समस्त फ़्रान्स के अधिपति सरलता से बन जाते। यह दूर की समझ सबको पसन्द आई। इसको कार्य-रूप में परिणत करने के लिए उन्हें कोशों मिल ही चुका था।

कुछ समय के बाद जोन बोरिव्वा नामक नगर में ले जाई गई। वहाँ उसने सुना कि जिस नगर की रक्षा में वह गिरफ़्तार हुई थी, उसके निवासियों का अङ्गरेज़ बध करना चाहते हैं। वह अधीर हो उठी। उसका हृदय उनकी रक्षा के लिए व्याकुल हो उठा। वह यह चाहने लगी कि किसी प्रकार वह वहाँ से निकल कर उनके पास सान्त्वना देने के लिए पहुँच जाय। अन्त में वह एक दिन २४ गज़ ऊँची दीवार से कूद पड़ी। परन्तु पहरेदारों ने उसे देख लिया और वे उसे जेल में वापस ले आये। सबको इस बात का आश्चर्य था कि वह बिलकुल ही आहत नहीं हुई थी।

एक स्त्री, जिसका नाम ला-पियरौने था और जो जोन की बड़ी भक्त थी, बर्गण्डी वालों ने गिरफ़्तार कर ली। उस

पर भी जादूगरनी होने का अभियोग पैरिस में चलाया गया। वह अन्त तक दृढ़तापूर्वक जोन पर विश्वास करती रही। अन्त में वह जल्लाद द्वारा जीवित जला दी गई। इसी से लोंगों को जोन के भाग्य का पता चल गया।

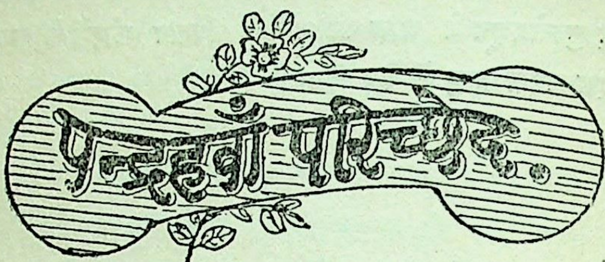
ज्रों द लुक्सेमबूर्ग को यह भय रहा करता था कि कहीं बोरिव्वा पर चार्ल्स की सेना अथवा कोई डाकू आक्रमण करके जोन को निकाल न ले जाय, क्योंकि वहाँ का क़िला सुरक्षित नहीं था। अतः उसने बर्गण्डी के ड्यूक से परामर्श करके जोन को आरा नगर में भेज दिया, क्योंकि वहाँ का गढ़ बहुत सुरक्षित था और उस पर आक्रमण करना सरल नहीं था। इधर कोम्पिएग्ने का घेरा भी समाप्त हो गया था, क्योंकि ड्यूक की सेना को पीछे से करारी हार खानी पड़ी थी।

उस समय के चित्र में एक घटना बहुत खटकती है। वह है जोन के प्रति चार्ल्स का व्यवहार। जिस जोन ने चार्ल्स के लिए इतना किया, उसके नगरों को अङ्गरेज़ों के पञ्जे से छुड़ाया, उसके नाम को विजयी की भाँति चारों ओर प्रसिद्ध कराया, उसका राज्याभिषेक कराके उसे फ़ान्स का वास्तविक बादशाह घोषित किया, उसी जोन के लिए चार्ल्स ने इतनी उदासीनता दिखाई। यदि चार्ल्स कुछ प्रयत्न करता, तो जोन अङ्गरेज़ों के हाथों में न पड़ती। या तो

वह हर्जाना चुकाता या युद्ध करता। परन्तु उसने कुछ भी न किया। फल यह हुआ कि कुछ दिनों के सौदे के बाद जाँ द लुक्सेमबूर्ग ने जोन को बोवे के बिशप कोशों के हाथ दस सहस्र फ़्राङ्क में बेच दिया।



९



अङ्गरेज़ों के हाथ में



अङ्गरेजों के अधिकार में आ जाने पर जोन उन्हीं के अधिकृत नगर रूओं ले जाई गई। वहाँ वह क़िले की एक मीनार में रक्खी गई। कई लेखकों ने लिखा है कि अङ्गरेज़ों ने उसके लिए एक लोहे का पिंजरा बनवाया था, जिसमें खड़ा होना असम्भव था। जोन के हाथ, पैर और गर्दन को जञ्जीर से बाँध कर हर समय उसी में रक्खा जाता था। कुछ लेखकों का यह कहना है कि उसके पैरों में तो बेड़ियाँ पड़ी रहती थीं और कमर में एक जञ्जीर बँधी रहती थी, जो रात को उसके कमरे की छत में लगे हुए लोहे के लट्ठे से बाँध दी जाती थी। वास्तव में जोन को एक गिर्जे की जेल में रखना चाहिए था, क्योंकि वह चर्च की अपरा-

धिनी थी। परन्तु अङ्गरेज़ किसी पर विश्वास न करते थे और फिर वे थे भी तो नृशंस।

उसके द्वार पर पाँच अङ्गरेज़ पहरेदार थे। वे तुच्छ घरानों के थे, अतः वे जोन के साथ बड़ी असभ्यता का व्यवहार करते थे। कभी वे उसे चिढ़ाते, कभी मुँह बनाते, कभी उसे गालियाँ देते। उनकी आज्ञा के बिना कोई उससे मिल भी नहीं सकता था। जेल में उससे मिलने के लिए अनेक व्यक्ति आते थे। एक दिन सरकारी वकील उससे मिलने आया।

"क्या तुम जानती थीं कि तुम पकड़ी जाओगी?"—उसने पूछा।

"हाँ!"—जोन ने उत्तर दिया।

"तो फिर उस दिन तुमने विशेष सावधानी से काम क्यों नहीं लिया?"

"क्योंकि मुझे दिन और समय का पता न था।"

सरकारी वकील के बाद एक दिन जों द लुक्सेमबूर्ग उसके कमरे में आया।

"यदि तुम हमारे विरुद्ध शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा करो, तो मैं तुम्हें मुक्त कराने का प्रयत्न करूँ।"—उसने जोन से कहा।

जोन इस बात पर हँसी और उसने उत्तर दिया—तुम मेरा मज़ाक़ बनाते हो। क्योंकि मैं भली-भाँति जानती हूँ

कि यह अब तुम्हारी शक्ति के बाहर है और न ऐसी तुम्हारी आन्तरिक इच्छा ही है।

जों ने अपनी बात फिर दुहराई।

"मैं जानती हूँ कि अङ्गरेज़ मुझे मार डालना चाहते हैं, ताकि मेरी मृत्यु के पीछे वे फ़्रान्स के सिंहासन पर अपना अधिकार जमा लें"—जोंन ने कहा और कुछ देर बाद क्रोध में भर कर फिर बोली—"परन्तु याद रक्खो कि यदि लाखों अङ्गरेज फ़्रान्स में और आ जायँ, फिर भी वे फ़्रान्स के राज्य पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते।"

जों के साथ एक व्यक्ति अर्ल ऑफ़ स्टैफ़ोर्ड नामक भी जोन को देखने गया था। वह इन शब्दों को सुन कर आपे से बाहर हो गया और जोन पर वार करने के लिए अपनी तलवार म्यान से निकालने लगा। परन्तु उसका हाथ दूसरों ने पकड़ लिया। लेकिन उसकी अरक्षित स्त्री पर हाथ चलाने की बात इतिहास के पृष्ठों से तो नहीं मिट सकती।

पाठक अभी कोशों का नाम भूले न होंगे। जब से जोन उसके प्रान्त से निकाल कर रूओं ले जाई गई थी, तब से भली-भाँति नींद भी नहीं आती थी। क्योंकि उससे जोन का मुक़दमा करने का अधिकार छिन गया था। उस अधिकार को किसी न किसी प्रकार फिर प्राप्त करने की उसे चिन्ता थी। और उसकी यह इच्छा तभी पूर्ण हो सकती थी, जब कि वह रूओं के गिर्जे का बिशप बना

दिया जाय। उसके सौभाग्य से रूओं के विशप का स्थान रिक्त भी हो गया और कोशों की प्रार्थना पर वह पद उसी को मिल गया। सन् १४३१ की ३ जनवरी को बादशाह हेनरी ने जोन को मुक़दमे के लिए कोशों के सुपुर्द कर दिया। परन्तु फिर भी वह चर्च के बन्दीगृह में न रक्खी गई।

कोशों ने पेरबल के साथ मुक़दमे की तैयारियाँ कीं। मैजिस्ट्रेट उसने एक व्यक्ति को चुना, जो फ्रान्स के एक गिर्जे से निकाल दिया गया था और जो जोन से शत्रुता मानता था। इसी प्रकार उसके सहकारी तथा असेसर भी थे। असेसरों ने यह इच्छा प्रगट की कि जोन के उन कार्यों तथा वाक्यों का अनुसन्धान किया जाय, जिन पर अङ्गरेज़ और बर्गण्डी वाले आपत्ति करते थे। परन्तु कोशों ने कहा कि मैंने बहुत कुछ बातें मालूम कर ली हैं। परन्तु इसमें सन्देह है कि उसने सारी बातों की छानबीन कर ली थी। जोन के विरुद्ध गवाही देने के लिए कोई व्यक्ति भी नहीं बुलाया गया था, क्योंकि कोशों ने यह कह दिया था कि उन गवाहों को वहाँ बुलाने से बादशाह चार्ल्स उनके विरुद्ध हो जायगा और इस प्रकार उसने जोन के विरुद्ध कही गई बातों को गुप्त कह कर बिना प्रमाणों के ही जजों के सामने पेश कर दिया। इसके अतिरिक्त कोशों ने अपने गुप्तचर जोन से उसके भेद पूछने के लिए नियुक्त कर दिये थे। एक उनमें से चित्रकार का रूप धारण करके गया और जोन से पूछने

लगा कि वह कौन से शस्त्र धारण करती थी, ताकि वह उसका चित्र उन्हीं शस्त्रों के साथ बना दे। जोन ने उसे अपने शस्त्रों को बता दिया। पीछे से मुक़दमे में जजों ने इसी घटना के आधार पर उस पर यह अभियोग लगाया कि वह बड़ी गर्विणी और शान-शौकत को पसन्द करने वाली थी, तभी तो अपना चित्र बनवाना चाहती थी।

कुछ पादरी क़ैदी का भेष बना कर जोन के पास उसका भेद लेने के लिए जाते। कुछ सिपाहियों का वेश धारण करते। एक असेसर ने तो धोखेबाज़ी की हद ही कर दी। वह क़ैदी का भेष बना कर जोन के कमरे में गया। उस समय पहरेदार वहाँ से हटा लिये गये थे। अकेले में पाकर उसने जोन से कहा—मैं जूते बनाने का काम करता था, मैं भी दोंरेमी के पास का ही रहने वाला हूँ और चार्ल्स का अनुगामी हूँ। इसी कारण अङ्गरेज़ों ने मुझे क़ैद करके यहाँ डाल रक्खा है। मैं तुम्हारे लिए बादशाह चार्ल्स के पास से सँदेशा लाया हूँ।

जोन के लिए चार्ल्स का नाम एक पवित्र तथा स्नेहमय नाम था। वह उस पादरी की बातों में आगई और धीरे-धीरे उसने अपने देवताओं, अपने इलहाम और अपने युद्धों की सारी बातें उसे बता दीं। पीछे से उस पादरी ने उन सारी बातों की रिपोर्ट जज को दी और उसी रिपोर्ट के आधार पर पीछे से उस पर अभियोग लगाये गये। यही

नहीं, कभी-कभी तो अदालत के क्लर्क दूसरे कमरे में बैठ कर छेदों में से सारी बातें सुनते जाते थे और लिखते जाते थे।

कोशों को अब यह जानने की चिन्ता हुई कि जोन ब्रह्मचारिणी थी या नहीं; क्योंकि इससे यह सिद्ध हो सकता था कि उस पर शैतान का शासन था अथवा देवताओं का। डचेज़ बैडफ़ोर्ड ने जोन की परीक्षा करने का कार्य अपने ऊपर लिया। इस सम्बन्ध में ड्यूक बैडफ़ोर्ड ने एक बड़ी नीचता की। वह पास के कमरे में छिप कर एक छेद से सारी कार्यवाही देखता रहा। ऐसा कार्य किसी दशा में भी क्षम्य नहीं हो सकता।

डचेज़ बैडफ़ोर्ड ने असेसरों को बता दिया कि जोन ब्रह्मचारिणी थी। परन्तु उसका कोई प्रभाव न पड़ा। हाँ, यदि जोन ब्रह्मचारिणी सिद्ध न होती, तो वह बात उसके विरुद्ध प्रयोग में लाई जाती। जब मुक़दमा होने के पूर्व ही फ़ैसला तैयार कर लिया जाय, तो इन परीक्षाओं आदि का क्या मूल्य?

जोन के विरुद्ध जितनी बातें मालूम हुई थीं, उन सब के आधार पर असेसरों ने जोन के अपराधों की सूची बनाई, जिसके अनुसार आगे चल कर जोन का मुक़दमा हुआ।



सोलहवाँ परिच्छेद

मुक़दमा



मुक़दमे की पहली पेशी ता० २१ फ़रवरी सन् १४३१ को हुई। बिशप कोशों ने प्रधान न्यायाधीश का आसन ग्रहण किया था। उसके अतिरिक्त ४१ असेसर भी उस समय वहाँ उपस्थित थे।

जोन मुक़दमे के लिए आई, परन्तु वह पुरुष के से वस्त्र धारण किये हुए थी। उसके बाल भी खुले हुए थे। उन दिनों ये दोनों बातें एक स्त्री के लिए पाप समझी जाती थीं। जो स्त्री ऐसा करती थी, वह समाज में—और विशेष कर तत्कालीन पादरियों के समाज में—असभ्य, निर्लज्ज तथा घृण्य समझी जाती थी। उसे देख कर लगभग सभी उपस्थित जन क्रोध में भर गये। उन्हें जोन के किये हुए सारे कार्य अपने सामने खड़े हुए दिखाई दे रहे थे। जो

पैरिस से आये थे, वे सोच रहे थे कि यदि जोन पैरिस पर विजय प्राप्त कर लेती, तो पैरिस नष्ट-भ्रष्ट हो जाता। जो अपने गिर्जों से चार्ल्स द्वारा निकाल दिए गये थे, उन्हें अपनी हानि इस समय स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी और जोन ही, उनकी समझ में, उसका कारण थी।

प्रारम्भ में जोन से कोशों ने यह प्रतिज्ञा करानी चाही कि जो कुछ पूछा जायगा, उसका उत्तर वह ठीक-ठीक देगी। परन्तु उसकी देवियों ने इलहाम के बारे में किसी को कुछ भी न बताने का आदेश किया था। चार्ल्स के अतिरिक्त उसने वे बातें किसी को भी नहीं बताई थीं। उसने उत्तर दिया—मैं नहीं जानती कि तुम्हारे प्रश्न क्या होंगे। शायद तुम मुझसे ऐसी बातें पूछो, जिन्हें मैं न बताना चाहूँ।

जब कोशों ने प्रतिज्ञा पर बहुत ज़ोर दिया, तो जोन ने कहा—अपने माता-पिता के विषय में तथा अपने युद्धों के विषय में मैं सब कुछ बताने की प्रतिज्ञा कर सकती हूँ, परन्तु इलहाम के विषय में न मैंने किसी को कुछ बताया है और न बताऊँगी। चाहे इसके लिए मुझे अपना जीवन देना पड़े।

इसके बाद उससे उसके ग्राम, उसकी शिक्षा आदि के विषय में कुछ प्रश्न किए गये। फिर कोशों बोला—यदि तुम जेल से भागने की चेष्टा करोगी तो एक और अभियोग तुम्हारे ऊपर लग जायगा।

जोन ने साहसपूर्वक उत्तर दिया—जिस प्रकार प्रत्येक क़ैदी भागने की चेष्टा करता है, उसी प्रकार मैं भी करूँगी। इसके लिए मैंने किसी से प्रतिज्ञा नहीं की है।

इस उत्तर से असेसरों को बड़ा आश्चर्य हुआ, कम से कम उन्हें जोन की वीरता और उसके साहस के सम्बन्ध में कोई सन्देह न रहा।

दूसरे दिन फिर पेशी हुई। उसमें बड़े मनोरञ्जक प्रश्नोत्तर किए गये।

प्रश्न—तुम्हारी आयु दोंरेमी छोड़ने के समय कितनी थी?

उत्तर—(कुछ नहीं बताया)

प्रश्न—बाल्यावस्था में तुम क्या काम किया करती थीं?

उत्तर—घर का काम। सूत कातने में और सीने-पिरोने में मैं किसी स्त्री से कम कुशल नहीं हूँ।

प्रश्न—तुम्हें बाल्यावस्था में कैसे शब्द सुनाई पड़ते थे?

उत्तर—तेरह वर्ष की अवस्था में मैंने सुना कि ईश्वर मुझसे पवित्र जीवन व्यतीत करने को कह रहा था। वह शब्द मुझे अपने पिता के बाग़ में गर्मी की ऋतु में मध्याह्न के समय सुनाई पड़े थे। पहले ही पहल उसे सुन कर मैं भयभीत हो गई थी। परन्तु तीन बार सुनने के बाद मुझे पता लगा कि वह शब्द किसी देवदूत का था। मुझे ऐसा विश्वास हुआ था कि वह देवदूत ईश्वर ने मेरे पास भेजा था।

प्रश्न—उस देवदूत ने तुम्हारी मुक्ति के क्या साधन बताये थे ?

उत्तर—उसने मुझे पवित्रता तथा सत्यता से रहने, गिर्जे को नियम से जाने तथा .फ्रान्स जाने के लिए तैयार रहने की शिक्षा दी थी।

प्रश्न—.फ्रान्स जाने का क्या तात्पर्य था ?

उत्तर—.फ्रान्स का वास्तविक राजा भगवान है। उसने मुझे आज्ञा दी थी कि मैं .फ्रान्स का राज्य शत्रुओं से छीन कर भगवान की ओर से चार्ल्स को दूँ।

प्रश्न—क्या तुम अब भी 'शब्दों' को सुनती हो ?

उत्तर—नित्य।

प्रश्न—जहाँ अङ्गरेजों का वध हुआ था, उन स्थानों पर तुम थीं ?

उत्तर—क्यों नहीं ? अङ्गरेजों से पूछो कि वे .फ्रान्स छोड़ कर क्यों नहीं चले गये ?

प्रश्न—जब तुम 'शब्द' सुनती हो, तब तुम्हें कुछ दिखाई भी पड़ता है ?

उत्तर—मैं तुम्हें सब कुछ नहीं बता सकती। मुझे ऐसा करने की आज्ञा नहीं है।

प्रश्न—क्या तुम्हें विश्वास है कि ईश्वर तुम पर दयालु है ?

उत्तर—यदि नहीं है, तो मैं प्रार्थना करूँगी कि वह

अब हो जाय। यदि है, तो मैं प्रार्थना करूँगी कि वह इसी प्रकार दयालु बना रहे।

प्रश्न—क्या तुम स्त्री के वस्त्र लेना पसन्द करोगी ?

उत्तर—मुझे दे दो, मैं स्वीकार कर लूँगी और चली जाऊँगी। नहीं तो मैं अपने इन्हीं वस्त्रों से सन्तुष्ट रहूँगी, क्योंकि ईश्वर की इच्छा है कि मैं इन्हीं को पहनूँ।

इसके बाद एक रविवार को कोशों ने जोन के खाने के लिए एक मछली भेजी। उस मछली के खाते ही जोन को क़ै-दस्त हो गये और ज्वर आने लगा। रूओं के क़िले के गवर्नर ने दो डॉक्टरों को बुला कर कहा—"जोन बीमार है। मैंने आपको इसलिए बुलाया है कि उसे आप शीघ्र ही स्वस्थ बना दें। उसे बादशाह हेनरी ने बहुत व्यय करके ख़रीदा है। उसकी इच्छा है कि जोन जीवित जला कर मारी जाय और स्वाभाविक मृत्यु से न मरे। इसलिए उसे बचाने में कोई कसर न रह जाय।" इस कथन में कितनी क्रूरता, कितनी प्रतिहिंसा और कितनी क्षुद्रता भरी है, इसका निर्णय हम पाठकों पर ही छोड़ते हैं। डॉक्टरों के उपकार से जोन कुछ दिनों में ही स्वस्थ हो गई। इसके बाद उसके मुक़द्मे की पेशी फिर हुई। फिर उससे पहले की भाँति ही प्रश्न किये गये।

प्रश्न—वह 'शब्द' जो तुम सुनती हो, क्या वह स्त्री का है या पुरुष का ? या स्वयं ईश्वर का ?

उत्तर—सन्त काथरीन तथा सन्त मारगरेट का। यदि तुम्हें सन्देह है तो पोइटीऐर के पादरियों से पूछो। उन्होंने तो मेरी परीक्षा की थी।

प्रश्न—यह तुम कैसे जानती हो? क्या तुम एक को दूसरे से पहचान सकती हो?

उत्तर—हाँ।

प्रश्न—किस प्रकार?

उत्तर—जिस प्रकार वे मेरे प्रणाम का उत्तर देती हैं, उससे।

प्रश्न—क्या तुमने इन देवदूतों को सदेह देखा था?

उत्तर—हाँ, उसी प्रकार, जिस प्रकार मैं तुम्हें देख रही हूँ। जब वे चले जाते थे, तो मैं रोती थी कि वे मुझे अपने साथ क्यों न ले गये।

प्रश्न—क्या ईश्वर ने तुम्हें पुरुषों के वेश में रहने की आज्ञा दी है?

उत्तर—हाँ। मैंने यह वेश किसी इहलौकिक व्यक्ति के कहने से नहीं बनाया।

प्रश्न—चार्ल्स तुममें किस प्रकार विश्वास करने लगा?

उत्तर—क्योंकि मेरी परीक्षा कर ली गई थी और मेरे चिन्ह सत्य सिद्ध हुए थे।

इसी प्रकार कई दिनों तक मुक़दमा होता रहा, जिसमें नित्य कई घण्टे तक जोन को प्रश्नों के उत्तर देने पड़ते थे।

प्रश्न करने का ढङ्ग ऐसा था, जिससे महान साहसी जीव भी घबरा जाता। प्रश्न करते समय घृणा और बदले का भाव सदा प्रदर्शित किया जाता था। और सदा इस बात का प्रयत्न किया जाता था कि जोन कोई ऐसी बात कह दे, जिसके आधार पर उन्हें अभियोग लगाने का अवसर मिल जाय।

इस ढङ्ग से कई असेसर नाराज़ हो गये। उनमें से अधिकांश का तो कुछ कहने का साहस ही नहीं होता था। कुछ ऐसे थे, जिन्होंने अपने विचार प्रकट कर दिए। एक ने कहा—यह मुक़दमा न्याययुक्त नहीं है। प्रथम तो मुक़दमा चलाने का आधार ही अधूरा है, दूसरे, असेसरों को क़िले में बन्द रक्खा जाता है, अतः वे अपनी स्वतन्त्र सम्मति प्रगट नहीं कर सकते। तीसरे, चार्ल्स का नाम भी इसके साथ आता है और उसे बुलाया नहीं गया। चौथे, प्रमाण के लिए न कुछ लिखा हुआ है, न कोई गवाह है।

दूसरे ने कहा—जोन की परीक्षा के लिए उन व्यक्तियों को नियुक्त करना, जो उससे शत्रुता मानते हैं, महान अन्याय है।

तीसरे ने कहा—जब मैं मुक़दमे में वर्तमान रहता हूँ, तो हर एक क्षण मेरा मन यहाँ से भाग जाना चाहता है।

इन बातों के आधार पर ही कुछ असेसरों को अलग कर दिया गया और कुछ को जेल में डाल दिया गया।

एक दिन जोन ने जजों से कहा—सात वर्ष बाद अङ्गरेज़ों को ऑर्लेन से भी अधिक करारी हार खानी पड़ेगी। वे फ़ान्स के अपने समस्त प्रान्त खो देंगे। जितनी हानि उन्हें तब उठानी पड़ेगी, उतनी उन्होंने कभी नहीं उठाई। इन सब बातों का कारण होगी चार्ल्स की शानदार विजय।

जजों ने पूछा—तुम यह कैसे जानती हो?

"अपने इलहाम से।"

"तुम्हें ठीक समय मालूम है?"

"नहीं।"

"परन्तु वर्ष तो मालूम होगा?"

"यह तुम्हें मालूम हो जायगा।"

"सन्त मारगरेट किस भाषा में तुमसे बोलती हैं?"—जज ने विषय बदल कर पूछा।

"फ़्रेञ्च में!"

"अङ्गरेज़ी में क्यों नहीं?"

"अङ्गरेज़ी में क्यों बोलें? वह अङ्गरेज़ों के पक्ष में तो हैं ही नहीं।"

जोन को गिर्जे में जाने की भी आज्ञा नहीं थी। वह प्रार्थना के लिए छटपटाती ही रह जाती थी। एक दिन वह एक पहरेदार के साथ अदालत के कमरे की ओर आ रही थी। पहरेदार दयालु था। जोन ने उससे पूछा—क्या इधर कोई गिर्जा नहीं है?

"हमारे मार्ग में ही है।"—पहरेदार ने उत्तर दिया।

"दूर ?"

"नहीं।"

"क्या मुझे उधर ले चलोगे ? मैं ईसा के सामने प्रार्थना करना चाहती हूँ।"

पहरेदार उसे ले गया। परन्तु जब कोशों को यह समाचार मिला तो वह पहरेदार पर बहुत बिगड़ा और उसे क़ैद करने की धमकी दी। भला उसकी शत्रु जोन पवित्र गिर्जे में जाकर प्रार्थना कर सके, यह उसे सहन हो सकता था ? उसके अपराधों में एक अपराध यह था कि वह अपने आपको ग्रामीणों में एक सन्त के नाम से विख्यात करती फिरती थी, जिससे ग्रामीण उसका बड़ा आदर करने लगे थे और उस पर भक्ति रखते थे। उसने उत्तर दिया—मैं उनकी सहायता के लिए, उनकी सेवा के लिए सदा तैयार रहती थी, इसलिए वे मेरे पास आते थे।

इसके अनन्तर कुछ प्रश्न उससे चार्ल्स के राजतिलक के सम्बन्ध में किए गये।

"क्या चार्ल्स को रेम में कोई मुकुट पहनाया गया था ?"

"हाँ।"

"उसे एक देवदूत लाया था ?"

"हाँ।"

"किस प्रकार ?"

"देवदूत ने मुकुट रेम के विशप को दिया और उसने उसे राजा को पहनाया ?"

"वह कहाँ दिया गया था ?"

"शीनों के क़िले में ?"

"कब ?"

"मुझे याद नहीं।"

"मुकुट किस चीज़ का बना था ?"

"स्वर्ण का।"

"क्या उसमें मणि थे ?"

"मैं नहीं जानती।"

"तुमने उसका स्पर्श या चुम्बन किया था ?"

"नहीं।"

देवदूत आकाश से आया था या पृथ्वी में से ?"

"आकाश से। परन्तु कमरे में वह द्वार से होकर आया था।"

"द्वार बादशाह से कितनी दूर था ?"

"लगभग तीन गज़। मैं उसके साथ द्वार से बादशाह के पास तक गई थी।"

इसके बाद उससे अन्य प्रश्न पूछे जाने लगे। अन्त में जज ने उससे पूछा—क्या तुम चर्च की अधीनता स्वीकार करती हो ?

"मेरे लिए चर्च और भगवान् दोनों एक हैं। क्या

तुम्हारी समझ में वे भिन्न-भिन्न हैं ? यदि नहीं, तो जब मैं ईश्वर की अधीनता स्वीकार कर चुकी हूँ, तो तुम ऐसा प्रश्न क्यों करते हो ?"

जज निरुत्तर हो गया। फिर उसने कुछ प्रश्न किये।

"क्या तुम जानती हो कि तुम्हारे देवदूत अङ्गरेज़ों से घृणा करते हैं ?"

"जिसे ईश्वर प्रेम करता है, उसे वे भी प्रेम करते हैं। जिसे ईश्वर घृणा की दृष्टि से देखता है, उससे वे भी घृणा करते हैं।"

"क्या ईश्वर अङ्गरेज़ों से घृणा करता है ?"

"इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सकती। मैं इतना जानती हूँ कि अङ्गरेज़ फ़ान्स से निकाल दिये जायँगे और ईश्वर चार्ल्स को विजयी बनायेगा।"

"जब अङ्गरेज़ों ने फ़ान्स पर विजय प्राप्त की थी, तब क्या ईश्वर उनके पक्ष में था ?"

"ईश्वर उस समय फ़ान्सीसियों को उनके पापों के लिए दण्ड दे रहा था।"

इसके बाद मुक़दमे की सुनवाई बन्द हो गई। जोन को क़ानूनी सहायता लेने की आज्ञा नहीं दी गई थी और न उसे कोई सहायता देने वाला ही था। वह अकेली २५ दिनों तक सारी सभा का सामना करती रही। यदि वह क़ानून को जानती, तो वह पोप के सामने मुक़दमे के फ़ैसले के विषय

में अपील कर सकती थी, परन्तु वह अज्ञान थी और जज आदि ने उसको इस विषय में कुछ बताया नहीं। पीछे से जब निर्णय होने को था, कोशों ने उसे एक वकील रखने की आज्ञा दी, परन्तु उसने उस समय वकील रखने की बात अस्वीकार कर दी।

मुक़दमे की सुनवाई के बाद उस पर ७० अपराधों का अभियोग लगाया गया। पीछे से इन सब अपराधों को बारह धाराओं में विभाजित किया गया। इनमें से मुख्य अपराध ये थे—जोन को ईश्वर का इलहाम नहीं होता था। इलहाम की बातें मनगढ़न्त थीं और वे शैतान की सहायता से गढ़ी गई थीं।

मुक़दमे के दिनों के परिश्रम के कारण तथा चारों ओर के भीषण प्रहारों के कारण वह बीमार पड़ गई। उसके कमरे में कई असेसर गये और उससे पूछा कि क्या वह कुछ और कहना चाहती है। उसने कहा—तुम चाहे जो करो, परन्तु मैं जो कुछ मुक़दमे के समय कह आई हूँ, उससे अधिक कुछ नहीं कहूँगी।

जब इस तरह काम न चला, तो कोशों ने बल-प्रयोग से काम लेना चाहा। वह जानता था कि पहले कितने ही अभागे क़ैदी अत्याचारों से घबरा कर मुक़दमे में लगाये गये अपराधों को स्वीकार कर चुके थे। वह जोन को उस कमरे में ले गया, जहाँ इस प्रकार के अत्याचार हुआ करते थे।

कभी उँगलियाँ मशीनों में दबाई जाती थीं, कभी गर्म लोहे से शरीर जलाया जाता था, आदि। वहाँ पहुँच कर कोशों जोन से उन बारह धाराओं को स्वीकार करने का आग्रह करने लगा। जोन सब समझ गई। वह वीरतापूर्वक बोली—तुम चाहे मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डालो, चाहे किसी अन्य उपाय से मेरी आत्मा को मेरे शरीर से अलग कर दो, परन्तु मैं कोई बात स्वीकार नहीं करूँगी। और यदि मैंने कोई बात स्वीकार भी कर ली, तो मैं पीछे से सबसे यही कहूँगी कि बलपूर्वक मुझसे ऐसा करा लिया गया था।

कोशों इस दृढ़ता के सामने पराजित हो गया और उसने अत्याचार करने का विचार छोड़ दिया। कुछ समय के बाद मुक़दमे की रिपोर्ट पैरिस विश्वविद्यालय के पास भेज दी गई। वहाँ उस पर विचार हुआ और यह निर्णय किया गया कि जोन को समझा-बुझा कर अपने अपराधों को स्वीकार करने और उनके लिए क्षमा माँगने के लिए तैयार किया जाय। यह समाचार बादशाह हेनरी के पास भेज दिया गया।

कोशों और ५० असेसर पैरिस-विश्वविद्यालय के विचार से सहमत हो गये। कोशों और कई असेसर, इसलिए, जोन के पास गये और उसके सामने बारहों धाराएँ स्पष्ट रूप से पढ़ कर सुना दीं। वे धाराएँ इस प्रकार थीं :—

पहली धारा

तुमने कहा है कि बाल्यावस्था में तुम्हें देवदूतों के दर्शन हुए और उनके शब्द सुनाई दिये। तुम अब भी उनसे वार्तालाप करती हो और उन्हें देखती हो। और उन्होंने तुमसे अनेक बातें कहीं, जिन्हें तुम स्वीकार कर चुकी हो।

जजों ने तुम्हारी उन सभी बातों पर विचार कर लिया है। उनकी सम्मति है कि या तो ये सब बातें मनगढ़न्त हैं या ये शैतान के द्वारा प्राप्त हुई हैं।

दूसरी धारा

तुमने कहा है कि तुमने बादशाह चार्ल्स को अपनी सत्यता का चिह्न दिखाया और देवदूतों ने एक मुकुट उसे दिया। फिर तुमने यह कहा कि मुकुट रेम के बिशप को दिया गया था।

जजों की राय में ये सब बातें असत्य हैं; धोखा देने के लिए गढ़ी गई हैं; और इनसे देवदूतों की प्रतिष्ठा भङ्ग होती है।

तीसरी धारा

तुमने कहा है कि तुम देवदूतों को इसलिए पहचान लेती थीं कि वे तुम्हें अपने नाम बता देते थे और उनके प्रणाम की रीति भिन्न-भिन्न थी।

जजों के विचार से देवदूतों की पहचान के लिए ये चिन्ह अपर्याप्त हैं और तुमने शीघ्रता में झूठा विश्वास बना लिया है।

चौथी धारा

तुम कहती हो कि तुम कुछ घटनाओं का हाल जानती हो; तुमने ऐसे व्यक्तियों को पहचान लिया है, जिन्हें तुमने पहले कभी नहीं देखा था ; तथा तुमने छिपी हुई चीज़ों का पता बता दिया है।

जज समझते हैं कि इन बातों में दम्भ, पाखण्ड आदि दोषों की बू आती है।

पाँचवीं धारा

तुमने कहा है कि तुम ईश्वर की आज्ञा से पुरुष के वेश में रहती हो। तुमने अपने बाल कटा लिये हैं और तुम स्त्रियों के कोई चिन्ह नहीं धारण करती हो, उनके अतिरिक्त जो प्रकृति ने तुम्हें दिये हैं। तुम अब भी उन वस्त्रों को बदलने के लिए तैयार नहीं हो।

जजों का मत है कि इस प्रकार तुम ईश्वर का नाम बदनाम कर रही हो और दैवी क़ानून का तिरस्कार करती हो। तुम मूर्तिपूजकों की भाँति अपनी और अपने वस्त्रों की पूजा करके जनता में मूर्तिपूजा के भावों का प्रचार कर रही हो।

छठी धारा

तुमने अपने पत्रों पर हस्ताक्षर इस प्रकार किये हैं— 'जीसस मारिया'। और कुछ पत्रों में तुमने लोगों को धमकी दी है कि जो कोई तुम्हारी आज्ञा को न मानेगा, उसका तुम बध करा दोगी।

जजों की सम्मति है कि इस प्रकार तुमने सिद्ध किया है कि तुम कृतघ्न, अत्याचारप्रिय, रक्तपात की इच्छुक, विद्रोही, क्रूर और पाखण्डिनी हो।

सातवीं धारा

तुम सत्रह वष की अवस्था में अपने घर से अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध निकल गई थीं, जिससे उन्हें बड़ा आघात पहुँचा था। फिर चार्ल्स के पास जाकर तुमने कहा कि तुम्हें ईश्वर ने चार्ल्स को विजयी बनाने, उसके शत्रुओं को मार कर भगाने आदि के लिए भेजा था।

इस प्रकार तुमने माता-पिता की आज्ञा न मान कर ईश्वर का पवित्र आदेश भङ्ग किया। और विजय की अभिमान-भरी प्रतिज्ञाएँ करने का पाप किया।

आठवीं धारा

तुमने कहा है कि सन्त काथरीन तथा सन्त मारगरेट ने तुमसे प्रतिज्ञा की थी कि यदि तुम ब्रह्मचारिणी रहोगी तो वे तुम्हें स्वर्ग को ले जायँगी। और इसीलिए तुमने ब्रह्मचारिणी रहने की प्रतिज्ञा की और कभी तुम अपवित्र नहीं हुई हो।

जज तुम्हारे इस कथन को असत्य समझते हैं।

नवीं धारा

तुमने कहा है कि तुमने एक बार जेल की दीवार से कूद कर भागने की चेष्टा की, क्योंकि तुम अङ्गरेजों के हाथ में पड़ने से मरना अच्छा समझती थीं।

जजों का यह मत है कि ऐसा तुमने कायरता से निराश होकर किया और शायद आत्महत्या करने के विचार से।

दसवीं धारा

तुमने कहा है कि तुम्हारे देवदूत फ्रेञ्च बोलते हैं, न कि अङ्गरेज़ी, क्योंकि वे अङ्गरेज़ों के विरुद्ध हैं। जब तुमने यह जाना कि तुम्हारे देवदूत चार्ल्स के पक्ष में थे, तो तुम बर्गण्डी वालों से शत्रुता मानने लगीं।

इस प्रकार, जजों की राय में, तुमने पाखण्ड का प्रचार किया है तथा सन्त काथरीन और सन्त मारगरेट के नामों की निन्दा की है, तथा ईश्वर की इस आज्ञा को भङ्ग किया है कि 'अपने पड़ोसियों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करो।'

ग्यारहवीं धारा

तुमने कहा है कि जैसे ही तुम्हें देवदूत दिखाई दिये, तुमने उनकी पूजा, उनका सत्कार आदि प्रारम्भ कर दिया। और उनकी बातों में विश्वास करने लगीं। और इस विषय में तुमने अपने यहाँ के पादरी से सलाह तक न ली। और तुम समझती थीं कि वे शब्द ईश्वर की आज्ञा से तुम्हें सुनाई पड़ते थे। तुम यह भी कहती हो कि तुम देवदूतों को आसानी से पहचान सकती हो। तुमने यह भी कहा है कि इन दूतों के दिये हुए चिन्ह तुम किसी पर प्रगट न करोगी, जब तक कि ईश्वर स्वयं तुम्हें ऐसा करने की आज्ञा न दे।

जजों का विचार है कि इस प्रकार तुमने मूर्तिपूजा का पाप किया है, और तुम्हारा सम्बन्ध दानवों से है।

बारहवीं धारा

तुमने कहा है कि यदि चर्च तुम्हें इन देवदूतों की बातों पर विश्वास न करने की आज्ञा दे, तो तुम न मानोगी। और जो अपराध तुम्हारे सिर मढ़े गये हैं, वे सब तुमने ईश्वर की आज्ञा से किये थे और उनके विषय में तुम ईश्वर के ही सामने उत्तर दोगी। इस उत्तर के लिए भी, तुमने कहा था, तुम्हें ईश्वर की आज्ञा मिल चुकी थी। इस विषय में तुमने चर्च के पादरियों की एक भी बात नहीं सुनी।

इस विषय में जजों का निर्णय है कि तुम चर्च के ऐक्य तथा अधिकार में विश्वास नहीं करती हो और हठधर्मी से विश्वासघात कर रही हो।

इन बारहों धाराओं को पढ़ कर सुना देने के बाद एक पादरी ने जोन को समझाना प्रारम्भ किया। वह कहने लगा—"यदि तुम्हारा बादशाह तुम्हें एक क़िले की रक्षा करने को कहे और यह आज्ञा दे कि तुम किसी को भीतर न आने दो तो क्या तुम किसी को बादशाह के पत्र या चिन्ह के बिना भीतर आने दोगी? इसी प्रकार जीसस क्राइस्ट ने धर्म का कार्य चर्च के सुपुर्द कर दिया है और उसने उन व्यक्तियों का विश्वास करने की आज्ञा नहीं दी, जो उसके

नाम पर कोई बात तो कहते हैं, परन्तु उसका कोई चिन्ह नहीं दिखा सकते। जिस समय तुम अपने बादशाह के लिए युद्ध कर रही थीं, उस समय यदि कोई सैनिक यह कहता कि वह बादशाह की आज्ञा नहीं मानेगा, तो क्या तुम उसकी भर्त्सना न करतीं? अब तुम, जो बप्तिस्मा होने के कारण चर्च की पुत्री हो गई हो, ईसा के प्रतिनिधि चर्च की आज्ञा क्यों नहीं मानती हो?"

उस पादरी के इस व्याख्यान का जोन पर कुछ भी प्रभाव न पड़ा। वह इसके उत्तर में बोली—मुझे जो कुछ कहना था, वह कह चुकी। अब यदि मेरे सामने चिता तैयार हो और जल्लाद उसमें अग्नि लगा कर मुझे उसमें डाल दे और मेरा सारा शरीर भस्म होने लगे, फिर भी जो कुछ मैं मुक़दमे के समय कह चुकी हूँ, उससे अधिक कुछ भी न कहूँगी।

इस उत्तर को सुन कर कोशों वहाँ से चल दिया और दूसरे दिन फ़ैसला सुनाने को कह गया। दूसरे दिन बाज़ार में, जहाँ मेला लगा करता था, दो प्लेटफ़ॉर्म बनाये गये। एक पर पादरी लोग तथा राज्य के कर्मचारी बैठे। दूसरे पर एक पादरी सरमन देने के लिए खड़ा हुआ। उसके पास एक ओर जोन को स्थान मिला। पादरी ने सरमन पढ़ना प्रारम्भ किया :—

"बाइबिल में लिखा है कि कटी हुई शाखा पर फल

नहीं लग सकते। इस जोन ने पाप पर पाप और भूल पर भूल करके चर्च का नाम बदनाम कर दिया है और अपने को चर्च से बिलकुल ही अलग कर लिया है।

"फ़्रान्स का शिर इतना नीचा कभी हुआ, जितना चार्ल्स ने इस बदनाम स्त्री की बातें मान कर कर दिया है। चार्ल्स ही नहीं, वे सब पादरी भी इसके लिए उत्तरदाता हैं, जिन्होंने जोन की परीक्षा करके उसे निर्दोष बताया था।"

कुछ देर तक जोन पर दोषारोपण करने के बाद पादरी जोन की ओर देख कर बोला—"मैं तुमसे कहता हूँ, जोन, कि तुम्हारा बादशाह काफ़िर है।"

इस वाक्य को सुन कर जोन के हृदय को बड़ा आघात पहुँचा और वह बोली—"पादरी महाशय, आप में श्रद्धा रखती हुई मैं यह कहूँगी कि चार्ल्स ईसाइयों में सबसे पवित्र और श्रेष्ठ ईसाई है। उससे अधिक धर्म को तथा चर्च को कोई नहीं मानता। अपनी बातों के विषय में मैं यही कहूँगी कि जो कुछ मैंने कहा है या किया है, सब ईश्वर की आज्ञा से। यदि तुम पोप के पास इस मुक़दमे की कार्यवाही भेजना चाहते हो, तो मैं इसका विरोध करती हूँ, क्योंकि न जाने तुम क्या लिख दो। यदि तुम वास्तव में न्याय चाहते हो, तो मुझे रोम ले चलो और स्वयं पोप को मेरी परीक्षा करने दो।"

परन्तु उन लोगों पर इसका कुछ भी प्रभाव न पड़ा। वे बोले—हम इतनी दूर पोप के पास इस कार्य के लिए नहीं जा सकते। तुम कह दो कि अब ऐसे कार्य न करोगी।

परन्तु जोन ने यह बात स्वीकार न की। उसे भरोसा था कि देवदूत उसकी रक्षा करेंगे और उसे उन लोगों के हाथ से बचा लेंगे। बिशप कोशों अपने साथ दो फ़ैसले लाया था। एक तो उस दशा में सुनाने को था, जब जोन चर्च की बात मान ले। दूसरा उस समय के लिए था, जब कि वह अपने वचन पर ही डटी रहे। कोशों ने दूसरा फ़ैसला निकाला और दण्डाज्ञा पढ़ने लगा :—

"हम जजों की दृष्टि में तुम जोन असत्य-भाषिणी, पाखण्डिनी, जादूगरनी, मूर्तिपूजक आदि हो.........।"

फ़ैसला अभी आधा ही पढ़ा गया था। जोन ने अपने चारों ओर देखा। सामने जल्लाद उसे अपनी गाड़ी में ले जाने के लिए तैयार खड़ा था। परन्तु अभी तक उसकी मुक्ति का कोई लक्षण दिखाई न दिया था। उसे जल कर मरने का दृश्य सामने नाचता हुआ दिखाई दिया। इतने अत्याचारों, इतने कष्टों और इतने प्रलोभनों से उसकी आत्मा कृश हो गई थी। वह क्षणिक आवेश में आकर चिल्ला पड़ी—"ठहरो, मैं चर्च की आज्ञा मानूँगी।"

कोशों ने अपना फ़ैसला पढ़ना बन्द कर दिया। उसके ऐसा करते ही चारों ओर शोर मचने लगा। मूर्ख अङ्गरेज़

सिपाही समझे कि फ़्रान्स वालों ने षड्यन्त्र रच कर जोन को बचा लिया है। अतः वे बहुत बिगड़े और सबको गालियाँ देने और धमकाने लगे। उधर एक पादरी ने जोन को दूसरा फ़ैसला सुनाया। उसके अनुसार उसने स्वीकार किया कि उसने भारी अपराध किया था और अस्त्र-शस्त्र धारण न करने तथा पुरुषों का वेश न रखने की प्रतिज्ञा की। परन्तु जिस ढङ्ग से उसने प्रतिज्ञा के शब्द कहे, उनसे बहुत सों को प्रतीत हुआ कि वह उस फ़ैसले का मज़ाक़ बना रही थी। अर्ल वारिक जज के पास जाकर बोला—"हेनरी का आपने कोई लाभ नहीं किया, क्योंकि यह स्त्री तो बच गई।"

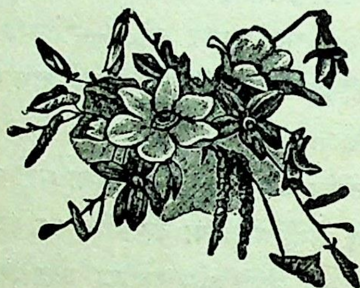
दूसरा फ़ैसला इस प्रकार था :—

"......चूँकि जो कुछ तुमने किया था, नासमझी से किया था, हम तुम्हें आजन्म कारावास का दण्ड देते हैं। तुम्हें वहाँ दुख की रोटी और दर्द का जल मिलेगा, ताकि तुम अपने पूर्वकृत अपराधों के लिए आँसू बहा कर खेद प्रकाशित करो और भविष्य में कोई वैसा कार्य न करो।"

इस फ़ैसले के अनुसार जोन को चर्च के बन्दीगृह में रखना चाहिए था। जोन ने कहा—"अब तुम पादरियो, मुझे अपने बन्दीगृह में ले चलो। अब मुझे अङ्गरेज़ों के हाथों में न छोड़ो।"

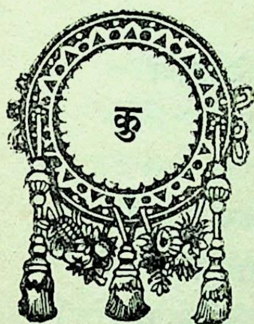
परन्तु उसकी प्रार्थना निष्फल गई। हेनरी यह कभी सहन नहीं कर सकता था कि जोन उसके अधिकार में से

हटा ली जाय, और उसका विरोध करने की शक्ति किसी में थी नहीं। अतः जोन फिर उसी बन्दीगृह में भेज दी गई। अन्त में उसने अपने बाल कटाने और स्त्री के वस्त्र पहनने की स्वीकृति दे दी, और कुछ दिनों के बाद उसने वे वस्त्र पहन भी लिये।



सत्रहवाँ परिच्छेद।

दूसरा मुक़दमा और अन्त



छ दिनों के बाद यह अफ़वाह फैल गई कि जोन ने फिर पुरुषों के वस्त्र पहन लिये। समाचार के मिलते ही कुछ पादरी जोन के बन्दीगृह में जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि सैकड़ों अङ्गरेज़ सैनिक क्रोध में भरे खड़े थे और इनके पहुँचते ही वे गालियाँ बकने लगे। वे यह नहीं समझे थे कि जोन की क्षमा-याचना से चार्ल्स की संसार भर में कितनी बदनामी हुई होगी और उससे अङ्गरेज़ों को कितना लाभ पहुँचने की सम्भावना थी। उन्हें इन सब बातों का विचार करने की चिन्ता नहीं थी। उन्हें तो उस बालिका को जीवित जलाये जाने का दृश्य देखना था।

इस समाचार को सुन कर एक बुद्धिमान पा कहा—"जोन ने पुरुष के वस्त्र पहन लिये हैं, यही सब कुछ नहीं है। हमें यह भी देखना चाहिए कि उसने ऐसा क्यों किया है।" यह पादरी जब क़िले में आया तो एक अङ्गरेज़ सैनिक ने अपना कुल्हाड़ा उसे दिखाते हुए कहा—"द्रोही, आर्मागनाक!" यह सुन कर वह पादरी मन में दुःखित होकर लौट गया।

दूसरे दिन कुछ अफ़सर जोन के पास पहुँचे। वह पुरुषों के वस्त्र पहने हुए थी और उसके मुख पर विषाद था तथा नेत्रों में आँसू।

"यह तुमने कब किया?"—उन्होंने पूछा।

"अभी।"—जोन ने उत्तर दिया।

"ऐसा तुमने क्यों किया?"

"मैंने अपनी इच्छा से ऐसा किया है। मैं स्त्रियों के वेश से पुरुषों का वेश अच्छा समझती हूँ।"

"परन्तु तुमने तो प्रतिज्ञा की थी कि ऐसा न करोगी।"

"मेरा विचार प्रतिज्ञा करने का न था।"

"परन्तु इसका कारण क्या है?"

"पुरुषों के बीच में रहने से यही अच्छा है कि मैं भी पुरुषों के ही वस्त्र पहनूँ। दूसरी बात यह है कि मेरे साथ जो प्रतिज्ञा की गई थी, उसको भी आप लोगों ने पालन नहीं किया। मैं न तो प्रार्थना के लिए गिर्जे में जा सकती

हूँ, न मेरे बन्धन ही तोड़े गये हैं।" उन्होंने उसकी बात पर ध्यान न दिया और कहा—"परन्तु तुमने फ़ैसले पर हस्ताक्षर किये थे।"

"मैं बन्धन से मृत्यु को अच्छा समझती हूँ। हाँ, यदि मैं प्रार्थना के लिए जाने की स्वतन्त्रता पा सकूँ, बन्धनमुक्त होकर एक जेल में रक्खी जाऊँ और मेरे साथ रहने के लिए एक स्त्री नियुक्त कर दी जाय, तो मैं प्रसन्नता से चर्च की आज्ञा मान लूँगी।"

"क्या तुमने देवदूतों के दर्शन किये हैं?"

"हाँ।"

"उन्होंने क्या कहा?"

"उन्होंने यह कहा कि जो कुछ मैंने किया, वह कायरता थी। मुझे इस प्रकार उन बातों को स्वीकार नहीं करना चाहिए था, जो मैंने कभी की नहीं। न मुझे यह अस्वीकार करना चाहिए था कि मैं ईश्वर की भेजी हूँ। उस दिन जो कुछ मैंने कहा और किया, उस सबका कारण अग्नि का भय था।"

यह तो ठीक है कि जोन को जो इलहाम हुआ, उसी के कारण उसने अपना वेश बदल लिया था। परन्तु फिर भी अङ्गरेजों ने, जो कुछ इस दिशा में किया था, वह भी याद रखने योग्य है। उन्होंने उसके उतारे हुए पुरुष के वस्त्र उसी के पास रख दिये थे, वहाँ से हटाये नहीं थे। यदि वे ऐसा

करते, तो उसे उन्हीं वस्त्रों को फिर पहनने का अवसर ही न मिलता। वे जानते थे कि वे वस्त्र उसकी मृत्यु थे, परन्तु वे तो यह चाहते ही थे। दूसरी बात यह थी कि उसके पास एक स्त्री रखनी चाहिए थी, न कि पुरुष-सैनिक। क्योंकि ये सैनिक बड़ी दुष्ट प्रकृति के थे और बात-बात में जोन को चिढ़ाया करते थे। शायद उनके चिढ़ाने के कारण ही जोन ने पुरुष के वस्त्र फिर धारण कर लिये हों।

"क्या तुम्हें विश्वास है कि इस बार भी तुम्हारे पास सन्त काथरीन और सन्त मारगरेट आई थीं?"—उससे पूछा गया।

"हाँ।"—उसने उत्तर दिया।

"परन्तु तुमने फ़ैसले के समय कहा था कि उनके आने की बात झूठी थी।"

"वैसा कहने का मेरा अर्थ नहीं था। जो कुछ मैंने कहा, वह अग्नि के डर से। मैं एक बार मरना पसन्द करूँगी, बजाय इसके कि जेल में गल-गल कर धीरे-धीरे मरूँ। मैं नहीं जानती कि फ़ैसले में क्या शर्तें थीं। अब भी अगर जज कहें, तो मैं स्त्रियों के वस्त्र पहन लूँगी। परन्तु इसके अतिरिक्त और कुछ न करूँगी।"

इतना सुन कर कोशों वहाँ से चल दिया। मार्ग में उसे अर्ल वारिक मिला। उससे वह बोला—"फँस गई चिड़िया, अब हाथ से नहीं निकल सकती।" दूसरे दिन उसने सब

असेसरों को एकत्रित करके यह समाचार सुनाया और उनकी सम्मति माँगी। सम्मति माँगने की वास्तव में कोई आवश्यकता नहीं थी। सब जानते थे कि क्या होगा। यह निश्चित हो गया कि दूसरा मुक़द्मा जोन पर चलाया जाय।

दूसरे दिन उस मुक़द्मे की पेशी रक्खी गई। वह दिन था ३० मई सन् १४३१। उस दिन जोन के पास दो पादरी पहुँचे और उससे नगर के बाज़ार में चलने को कहा, जहाँ कि जोन का मुक़द्मा होने वाला था। एक ने तो जोन से यह भी कह दिया कि उस दिन उसका अन्त हो जायगा। उसने जब यह समाचार सुना, तो निराशा से पीली पड़ गई। मृत्यु की छाया उसके सामने घूम रही थी। वह सोच रही थी कि अन्त में उसका यह पवित्र और सुन्दर शरीर जला कर राख कर दिया जायगा। वह इससे अधिक कई बार अपना शिर कटाना पसन्द करती। परन्तु वह सिवाय ईश्वर से प्रार्थना करने के और क्या कर सकती थी?

इतने ही में स्वयं कोशों वहाँ आ गया। उसे देख कर जोन बोली—मैं तुम्हारे कारण मर रही हूँ।

"मेरे कारण नहीं, जोन, बल्कि इसलिए कि तुमने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण नहीं की। फिर भी तुम देखती हो कि तुम्हारे देवी-देवताओं ने तुम्हारी कुछ भी सहायता नहीं की।"—कोशों बोला।

"हाँ, उन्होंने मुझे धोखा दिया।"—जोन ने निराश होकर कहा।

उसने ईसा की मूर्ति का दर्शन करने की प्रार्थना की। वह स्वीकृत हो गई। जिस समय वह मूर्ति के दर्शन कर रही थी, एक पादरी ने पूछा—

"यही ईसा की मूर्ति है?"

"हाँ।"

"तुम्हें विश्वास है?"

"हाँ। और यही मेरी रक्षा करेंगे।"

"क्या तुम अपने देवदूतों के शब्दों में विश्वास करती हो?"

"नहीं, मैं केवल ईश्वर में विश्वास करती हूँ, देवदूतों में नहीं, जिन्होंने मुझे इस प्रकार भुला दिया।"

उसने फिर प्रार्थना की और पादरी से पूछा—मैं आज सन्ध्या को कहाँ हूँगी?

"क्या तुम ईश्वर में विश्वास नहीं करती हो?"

"हाँ। मुझे आशा है कि मैं स्वर्ग में जाऊँगी।"

जिस जेल में वह १७८ दिन रही थी, उस दिन उसमें से वह निकाली गई और एक गाड़ी में बन्द करके पुराने मार्केट-स्क्वेयर में ले जाई गई। उसके साथ ८० सैनिक थे। स्क्वेयर में तीन मञ्च बनाये गए थे। एक तो जजों के लिए, जिस पर से वे अपना निर्णय सुनाने वाले थे। दूसरा जोन

के लिए था, जहाँ से वह अपने भाग्य का निर्णय सुनने वाली थी। तीसरे मञ्च पर जोन के जलाने के लिए लकड़ियों की चिता बनाई गई थी। स्क्वेयर में प्रबन्ध करने के लिए कई सौ सैनिक नियुक्त कर दिए गये थे। दर्शकों की भीड़ का वारापार न था। सवारों के पीछे उनकी लाइनें लगी थीं। कोई भी खिड़की या छत उनसे ख़ाली नहीं थी। कोशों ने दण्डाज्ञा सुनाई :—

"जोन, हम यह घोषित करते हैं कि चूँकि तुम चरित्र-हीन और दूषित हो और तुमसे दूसरों के दूषित होने की आशङ्का है, अतएव हमने यह निश्चय किया है कि तम्हें चर्च से अलग कर दें और तुम्हें चर्च के नियमानुसार दण्ड मिले, अर्थात् मृत्यु।"

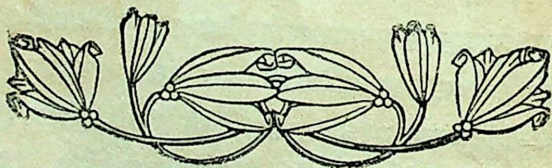
दण्डाज्ञा सुन कर जोन रोने लगी और रोते-रोते ही उसने प्रार्थना की। उसने सबसे क्षमा माँगी और यह विनय की कि सब उसकी आत्मा की मुक्ति के लिए प्रार्थना करें। फिर वह बोली—"मुझे तुम चाहे जो दण्ड दे लो, परन्तु याद रक्खो कि मैंने बुरा या भला जो कुछ भी किया है, उसमें मेरे दोफ़ाँ का कोई हाथ नहीं था।" जिस चार्ल्स ने उसको इस प्रकार भुला कर अकृतज्ञता तथा अमानुषिकता का परिचय दिया था, उसी के लिए जोन की इतनी भक्ति देख कर बहुतेरे दर्शक रोने लगे। परन्तु नीच अङ्गरेज़ सैनिक हँसते रहे और चिल्ला कर जोन को शीघ्र जला देने के लिए कहने लगे।

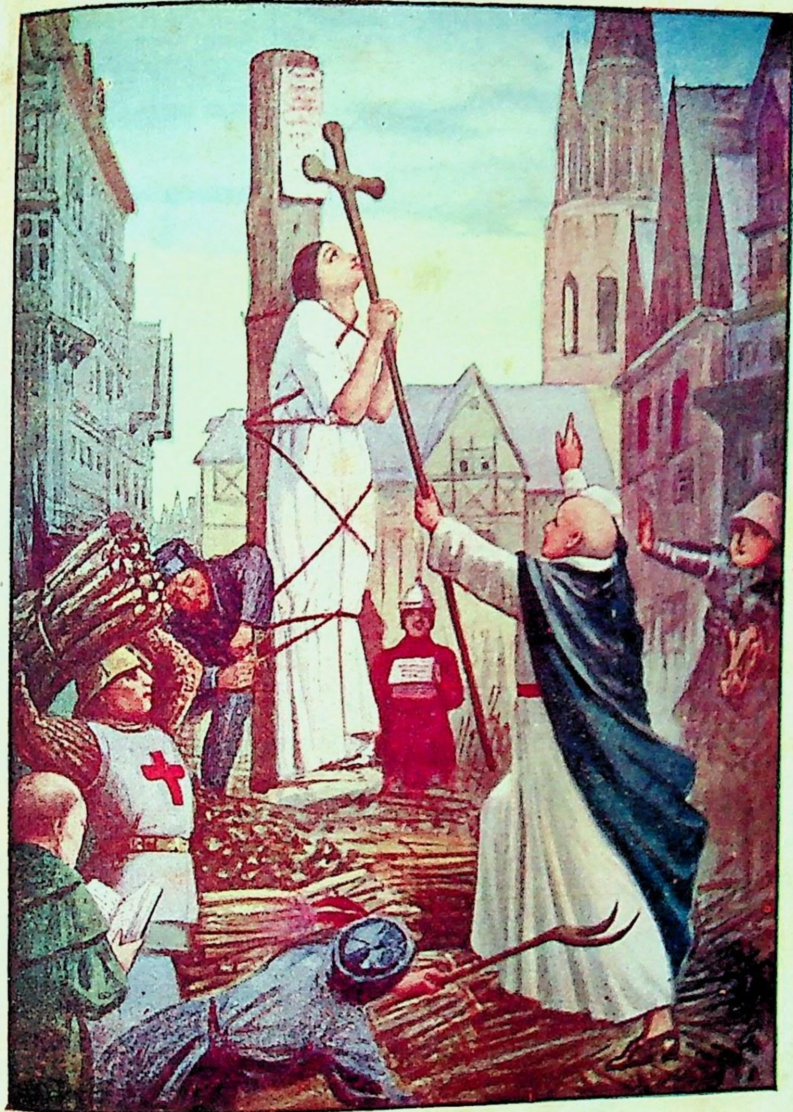
वह शीघ्र ही जल्लाद के सुपुर्द कर दी गई। किसी ने उसे कहते हुए सुना—"आह रूओं, मुझे भय है कि कहीं तुम्हें इस कृत्य का मूल्य न चुकाना पड़े।"

जल्लाद उसे वेदी पर ले गया। उस समय सभी पादरियों के नेत्रों से आँसू बह रहे थे। कुछ अङ्गरेज पादरी भी रो रहे थे, उन्होंने ऐसा शत्रु पहले नहीं देखा था।

जोन ने एक क्रौस माँगा और मिलने पर उसे अपने हृदय से लगा लिया। वह लट्ठे से बाँध दी गई। जिस समय चिता में अग्नि लगाई गई, वह चिल्ला पड़ी—'ईसा!' और इसी प्रकार छै बार उसने ईसा का नाम पुकारा। प्राण निकलते समय उसने अन्तिम बार ईसा का नाम लिया और अपना शिर झुकाया।

उसके शरीर के जल जाने के बाद उसकी भस्म को सीन नदी में फिंकवा दिया गया, इस भय से कि कहीं लोग उसकी स्मृति में उसे सँभाल कर न रख लें। इस प्रकार उस वीर बाला का, उस सिंहिनी का, उस ईश्वर-भक्तिनि का छल और शत्रुता ने क्रूरता से अन्त कर दिया।





जोन का अन्तिम दशन

उपसंहार

जोन की हत्या के कुछ दिनों बाद ही हेनरी का राज्याभिषेक पैरिस में हुआ। परन्तु अङ्गरेजों का अपना बल कुछ अधिक न था। वे पैरिस में मुट्ठी भर थे। यह तो बर्गण्डी का ड्यूक था, जिसके हाथ में वास्तविक शक्ति थी। उसी के कारण अङ्गरेजों ने पैरिस में पैर फैलाये थे। परन्तु कुछ दिनों बाद वायु का प्रवाह न टला। ड्यूक और बादशाह चार्ल्स में सन्धि हो गई। दुःख और शोक के कारण रीजेण्ट की मृत्यु हो गई। ता० १३ अप्रैल सन् १४३६ के दिन पैरिस पर चार्ल्स का अधिकार हो गया। जिस पैरिस-विश्वविद्यालय ने जोन की हत्या में सबसे प्रमुख भाग लिया था, जिसके कारण ही चार्ल्स मारा-मारा फिरा था, जिसके देशद्रोह और जी-हुजूरी के कारण फ्रेञ्च लोगों का प्यारा पैरिस विदेशियों द्वारा वर्षों तक पददलित होता रहा था, वही पैरिस-विश्वविद्यालय अब चार्ल्स के गुण गाने लगा। पैरिस पर चार्ल्स का अधिकार होते ही पार्लामेण्ट की बैठकें वहीं होने लगीं, जिसमें चार्ल्स के पुराने अनुयायी भी थे और वे बर्गण्डियन भी थे, जो अब चार्ल्स की अधीनता स्वीकार कर चुके थे।

पैरिस-विजय के एक मास बाद चारों ओर यह अफ़वाह हो गई कि लौरेन प्रान्त में एक पच्चीस वर्ष की युवती का प्रादुर्भाव हुआ है, जो अपने को जोन के नाम से प्रसिद्ध कर रही है। इस बात को सुन कर जोन के दो भाई उसे देखने के लिए गये और बातचीत, देख-भाल के बाद उन्हें इस बात में कोई सन्देह न रहा कि वह उनकी बहिन जोन थी। अन्य कई व्यक्तियों ने भी उसकी परीक्षा की और सबकी यही सम्मति हुई कि वह वास्तव में जोन थी। जनता को यह विश्वास हो गया कि अग्नि में से देवताओं ने जोन की रक्षा उसी प्रकार कर ली थी, जिस प्रकार हमारे यहाँ प्रह्लाद की। सन् १४३९ में यह स्त्री ऑर्लेन गई। वहाँ उसका बड़ा सत्कार हुआ। इसी प्रकार उसने उन नगरों की यात्रा भी की, जिन पर जोन ने विजय प्राप्त की थी।

कुछ दिनों के बाद उसने पैरिस जाने की घोषणा की। पैरिस में इससे बड़ी हलचल मच गई। परन्तु चार्ल्स के दरबारियों को उसके जोन होने में कुछ सन्देह था, अतः उन्होंने कुछ सैनिक भेज कर उसे पैरिस के बाहर ही गिरफ़्तार करा लिया। गिरफ़्तार हो जाने के बाद उस पर मुक़दमा चलाया गया और दण्ड के भय से उसने इस प्रकार अपना बयान देकर यह स्वीकार किया कि वह जोन नहीं थी—

"मैं जोन नहीं हूँ। मैं विवाहिता हूँ और मेरे दो बच्चे हैं। बाल्यकाल में मैंने एक घटना के समय अपनी माता

पर आक्रमण कर दिया था। दण्ड के भय से मैं पुरुष-वेश में रोम को भाग गई। वहाँ से मैं यहाँ आई और चूँकि मेरी आकृति तथा आयु जोन से मिलती थी, मैंने यह अफ़वाह उड़ा दी।"

चूँकि उस स्त्री ने अपना दोष स्वीकार कर लिया था, अतः उसको कोई दण्ड नहीं दिया गया। वह अपने पति के पास चली गई और कुछ दिनों में ही सब कोई उसका नाम भूल गये।

जोन का बलिदान तो हो ही चुका था, परन्तु जोन के शुभचिन्तकों को यह असह्य था कि सदा के लिए जोन का नाम इतिहास में जादूगरनी तथा अपवित्र स्त्री के रूप में रहे। वे उसके मुक़दमे को न्यायानुकूल नहीं समझते थे और यह चाहते थे कि दूसरा मुक़द्मा हो, जिसमें जोन पर लगाये गये अभियोगों की जाँच हो और इस बात का निर्णय हो कि वास्तव में वह अपराधिनी थी अथवा उसकी हत्या अन्याय तथा शत्रुता से की गई थी।

इस बीच में दिन पर दिन चार्ल्स की शक्ति बढ़ती गई और उसने धीरे-धीरे बिना रक्तपात के अङ्गरेज़ों से सारे प्रदेश छीन लिये। नौर्मण्डी, माइन आदि सारे प्रदेशों पर अब चार्ल्स का अधिकार हो गया। इस प्रकार विजय प्राप्त करने के बाद चार्ल्स को भी जोन की सुधि आई और उसने सन् १४३१ का धब्बा मिटाने का निश्चय किया। वास्तव में

जोन के बलिदान के साथ ही उस समय चार्ल्स की प्रतिष्ठा पर भी तो आँच आई थी। इस बात का भी उसे विचार था।

मुक़दमे की जाँच रोम के पोप द्वारा हो सकती थी। परन्तु पोप इसके लिए सहमत न हुआ, क्योंकि अङ्गरेज़ यह नहीं चाहते थे कि गड़े मुर्दे उखड़ें और उनकी पोल खुल जाय। यह देख कर चार्ल्स ने एक चाल चली। मुक़दमे की जाँच की प्रार्थना उसने जोन की माता द्वारा कराई और प्रार्थना-पत्र गया पैरिस-विश्वविद्यालय के सामने।

मुक़दमा फिर से हुआ। जाँच हुई, गवाह बुलाये गये और निर्णय यह हुआ :—

"पिछले मुक़दमे की बारह धाराएँ ग़लत थीं। जजों को धोखा दिया गया था और इन सब बातों का उत्तरदायित्व था कोशों पर (जो उस समय तक मर चुका था)। हमारा यह निर्णय है कि जोन वास्तव में ईश्वर की प्रतिनिधि थी।"

इस प्रकार १६ जून सन् १४५५ को सन् १४३१ का फ़ैसला अन्यायपूर्ण कह कर रद्द कर दिया गया। मुक़दमों का परिणाम कुछ भी रहा हो, परन्तु जोन का बलिदान संसार के पीड़ित राष्ट्रों के लिए सदा आशा और तपस्या का सन्देश देता रहेगा और उसका नाम तब तक अमर रहेगा, जब तक चन्द्र और सूर्य संसार को प्रकाशमान करते रहेंगे।

॥ समाप्त ॥

कुछ उत्तमोत्तम पुस्तकें

पाक-चन्द्रिका	...	...	४)
लतखोरीलाल	...	...	४)
निर्वासिता	...	...	३)
नवीन दाम्पत्य-जीवन में स्त्रियों के अधिकार	...	...	२॥)
मानिक-मन्दिर	...	...	२॥)
सङ्गीत-सौरभ	...	...	२॥)
लम्बी दाढ़ी	...	...	२॥)
वल्लरी	...	...	
अञ्जलि	...		
ईसाई-बाला	...		
प्राणेश्वरी	...		

चाँद प्रेस लिमिटे


चाँद